* राग सारंग

† ऐतौ कियौ कहा री[1] मैया।
कौन काज धन दूध दही यह, छोभ करायौ कन्हैया।
आईं सिखवन भवन पराऐं स्यानि ग्वालि बौरैया।
दिन-दिन देन उरहनौ आवतिं ढुकि-ढुकि करतिं लरैया।
|| सूधी प्रीति[2] न जसुदा जानै, स्याम सनेही[3] ग्वैयाँ।
सूर स्याम सुंदरहिं[4] लगानो, वह जानै बल भैया ॥३७१॥६८६॥

* राग केदारौ

‡ काहे कौं कलह नाध्यौ, दारुन दाँवरि बाँध्यौ,
कठिन लकुट लै तैं; त्रास्यौ मेरैं भैया।
नाहीं कसकत मन, निरखि कोमल तन,
तनिक से दधि-काज, भलो री तू मैया।
हौं तौ न भयौ री घर, देखत्यौ तेरी यौं अर,
फोरतौ बासन सब, जानति बलैया।
सूरदास हित हरि, लोचन आए हैं भरि,
बलहू कौं बल जाकौ सोई री कन्हैया ॥३७२॥६९०॥

राग बिलावल

§ काहे कौं जसोदा मैया, त्रास्यौ तैं बारौ कन्हैया,
मोहन हमारौ भैया, केतौ दधि पियतौ।

---

* (ना) रामकली।

† यह पद केवल (वे, ना, शा, का, गो, जै) में है।

(1) रिस—१।

|| यह चरण (वे) में नहीं है।

(2) प्रीति जसोदा—१, २, ६, ११, १५। (3) सनेही गैया—२। सनेह गवैया—११। (4) सुंदरिहिं लगाने—१, ६।

* (ना) ललित।

‡ यह पद (वे, ना, ल, शा, का, गो, जै) में है।

§ यह पद (वे, स, ल, शा, का, गो, जै) में है।

हौं तौ न भयौ री घर, साँटी दीनी सर सर,
बाँध्यौ कर जेंवरिनि, कैसैं देखि जियतौ।
गोपाल सबनि प्यारौ, ताकौं तैं कीन्हौ प्रहारौ,
जाकौ है मोहूँ कौ गारौ, अजगुत कियतौ।
और होतौ कोऊ, बिन जननी जानतौ सोऊ,
कैसैं जाइ पावतौ, जौ आँगुरिनि छियतौ।
ठाढ़ौ बाँध्यौ बलबीर, नैननि गिरत नीर,
हरि[1] जू तैं प्यारौ तोकौं, दूध दही घियतौ।
सूर[2] स्याम गिरिधर, धरा-धर हलधर,
यह छबि सदा थिर, रहौ मेरैं जियतौ ॥३७३॥९६१॥

* राग सोरठ

† जसुदा तोहिं बाँधि क्यौं आयौ।
कसक्यौ नाहिं नैं कु मन[3] तेरौ, यहै कोखि कौ जायौ।
सिव बिरंचि महिमा नहिं जानत, सो गाइनि सँग धायौ।
तातैं[4] तू पहचानति नाहीं, कौन पुन्य तैं पायौ!
कहा भयौ जो[5] घर कैं लरिका, चोरी माखन खायौ?
इतनी[6] कहि उकसारत बाहैं, रोष सहित बल धायौ।
अपनैं कर सब बंधन छोरे, प्रेम सहित उर लायौ।
सूर सुबचन मनोहर कहि-कहि अनुज सूल बिसरायौ ॥३७४॥९६२॥

---

(१) हरि क डाटो केतो दधि पियतौ—३। (२) सूरदास गिरिधरन धरनीधर हलधर—१, १५। सूर स्याम गिरिधरनि धरनीधर—३। सूर गिरिधरन धरनीधर हलधर—११।

* (ना) सारंग। (क) धनाश्री।

† यह पद (वे, ना, स, ल, शा, का, गो, क, जै) में है।

(३) तन तेरौ यह काहि कहि खिझायौ—१, ११। मन तेरौ यह है मेरौ जायौ—२। मन तेरौ इन्हे कोपि को जायो—३। मन तेरो याही को है जायो—१४। (४) तार्कों—२, ३। (५) मन मोहन भैया—२, ३। (६) इतनी कहत रसिक मनि तवहीं—१, ६, ११, १५।

* राग सोरठ

काहे कौं हरि इतनौ त्रास्यौ ।
सुनि री मैया, मेरैं भैया, कितनौ गोरस नास्यौ ।
जब रजु सौं कर गाढ़ै बाँधे, छर-छर मारी साँटी ।
सूनैं घर बाबा नँद नाहीं, ऐसैं करि हरि डाँटी ।
और नैंकु छुवै देखै स्यामहिं, ताकौ करौं निपात ।
तू जो करै बात, सोइ साँची, कहा कहौं[1] तोहिं मात ।
ठाढ़े बदत बात सब हलधर, माखन प्यारौ तोहि ।
ब्रज-प्यारौ, जाकौ मोहिं गारौ, छोरत काहे न ओहि[2] ।
काकौ ब्रज, माखन दधि काकौ, बाँधे जकरि कन्हाई[3] ।
सुनत सूर हलधर की बानी[4] जननी सैन बताई ॥३७५॥९९३॥

❀ राग सारंग

सुनहु बात मेरी बलराम ।
करन देहु इनकी मोहिं पूजा,[5] चोरी प्रगटत नाम ।
तुमहीं कहौ, कमी काहे की, नव-निधि मेरैं धाम ।
मैं बरजति, सुत जाहु कहूँ जनि, कहि हारी दिन[6] जाम ।
तुमहुँ मोहिं अपराध लगायौ माखन प्यारौ स्याम ।
सुनि मैया तोहिं छाँड़ि कहौं किहिं को राखै तेरैं[7] ताम ।
तेरी सौं उरहन लै आवतिं झूठहिं ब्रज की बाम ।
सूर स्याम अतिहीं अकुलाने कब के बाँधे दाम ॥३७६॥९९४॥

---

* (ना) नट। (क, पू) सारंग।
(१) करौ तोहि मात—१। कहौं तोहिं वात—२। (२) जोहि—२, ३, ६, १४, १७। (३) बनाई—२, ३, ६, १४, १७। (४) बातैं—१, ११, १२।
❀ (ना) नट। (गो) गौरी।
(५) सेवा—१, ११, १२। सोभा- ६। (६) निज—३। (७) मेरौ ताम—१, ११। तेरौ नाम—२, १४।

* राग सारंग

कहा करौं हरि बहुत खिझाई ।
सहि न सकी, रिसही रिस भरि गई, बहुतै ढीठ कन्हाई ।
मेरौ कह्यौ नैंकु नहिँ मानत, करत आपनी टेक ।
भोर होत उरहन लै आवतिँ, ब्रज की बधू अनेक ।
|| फिरत जहाँ तहँ दुंद[१] मचावत घर न रहत छन एक ।
सूर स्याम त्रिभुवन कौ कर्त्ता, जसुमति[२] गही निज टेक ॥३७७॥९९५॥

⊛ राग गूजरी

जसोदा कान्हहु तैँ दधि प्यारौ ?
डारि देहि कर मथत मथानी, तरसत नंद-दुलारौ ।
दूध-दही-माखन लै वारौँ, जाहि करति तू गारौ ।
कुम्हिलानौ मुख-चंद देखि छबि, कोह न नैंकु निवारौ !
ब्रह्म, सनक, सिव ध्यान न पावत, सो ब्रज गैयनि चारौ ।
सूर स्याम पर बलि-बलि जैऐ, जीवन-प्रान हमारौ ॥३७८॥९९६॥

× राग रामकली

जसोदा ऊखल बाँधे स्याम ।
मन मोहन बाहिर ही छाँड़े, आपु गई गृह-काम ।
दह्यौ मथति, मुख तैँ कछु बकरति[३] गारी दै[४] लै नाम ।
घर-घर डोलत माखन चोरत, षट-रस मेरैँ धाम ।

---

* (ना) सूहौ । (का) सोरठ ।

|| (ना, का, रा, स्या) में इस चरण के स्थान पर यह चरण है—काल डरत जाके डर भारी सुर नर असुर जितेक ।

(१) धूम—१४ । (२) जसुमति कहति जनेक—१, २, ६, ६, ११, १२, १७ । मातु कहति जिनि (जन) एक—१६, १६ ।

⊛ (ना) सूहौ । (गो) रामकली ।

× (ना) बिलावल ।

(३) हुँकरति—२, १६, १६ । बकती—६ १७ । (४) दैं-दै—१, ३, ६, ११, १४, १७ । लै-लै—२ ।

ब्रज के लरिकनि मारि भजत हैं, जाहु तुमहु बलराम ।
सूर स्याम ऊखल सौं बाँधे, निरखतिं ब्रज की बाम ॥३७९॥९९७॥

* राग गौरी

निरखि श्याम हलधर मुसुकाने ।
को बाँधै, को छोरै इनकौं, यह[1] महिमा येई पै जाने ।
उतपति-प्रलय करत हैं येई, सेष सहस-मुख सुजस बखाने ।
जमलार्जुन तरु तोरि उधारन, कारन करन[2] आपु मन माने ।
असुर सँहारन, भक्तनि तारन, पावन-पतित कहावत बाने ।
सूरदास प्रभु भाव-भक्ति के, अति हित जसुमति हाथ बिकाने ॥३८०॥९९८

❀ राग धनाश्री

† जसुमति, किहिं यह सीख दई ।
सुतहिं बाँधि तू मथति मथानी, ऐसी निठुर भई ।
हरैं बोलि जुवतिनि कौं लीन्हौ, तुम[3] सब तरुनि नई ।
लरिकहिं त्रास दिखावत रहिऐ, कत मुरझाइ गई ।
मेरे प्रान-जिवन-धन माधौ, बाँधे बेर[4] भई ।
सूर स्याम कौं त्रास दिखावति, तुम कहा कहति दई ॥३८१॥९९९॥

× राग गौरी

हरि चितए जमलार्जुन के तन ।
अबहीं आजु इन्हैं उद्धारौं, ये हैं मेरे[5] निज जन ।
इनहीं के हित भुजा बँधाई, अब बिलंब नहिं लाऊँ ।

---

* (ना, क) सारंग । (के, कां, पू) सोरठी ।
(१) अपनी महिमा आपै जानै—२ । (२) ये महिमा अपनी येइ जानै—१८ । करन करत—१, ६, ११, १५, १७ । करन सबै—१९ ।
❀ (रा) गौरी । (श्या०) गूजरी ।
† यह पद (के, पू) में नहीं है ।
(३) सुन—१, ११, १४ ।
(४) निठुर भई—२ ।
× (ना) देवसाप । (क) धनाश्री ।
(५) मेरेई जन—१, ११, १५

परस करौं तन, तरुहिं गिराऊँ, मुनिवर-साप मिटाऊँ।
ये सुकुमार, बहुत दुख पायौ, सुत[1] कुबेर के तारौं।
सूरदास प्रभु कहत मनहिं मन, यह[2] बंधन निरवारौं॥३८२॥१०००॥

* राग धनाश्री

तबहिं स्याम इक बुद्धि उपाई।
जुवती गईं घरनि सब अपनैं, गृह-कारज जननी अटकाई।
आपु गए जमलार्जुन-तरु-तर, परसत पात उठे झहराई।
दिए गिराइ धरनि दोऊ तरु सुत कुबेर के प्रगटे आई।
दोउ कर जोरि करत दोउ अस्तुति, चारि भुजा तिन्ह[3] प्रगट दिखाई।
सूर धन्य ब्रज जनम लियौ हरि, धरनी की आपदा नसाई॥३८३॥१००१॥

* राग बिलावल

धनि गोबिंद जो गोकुल आए।
धनि-धनि नंद, धन्य निसि-बासर, धनि जसुमति जिन[4] श्रीधर जाए।
धनि-धनि बाल-केलि जमुना-तट, धनि बन सुरभी-बृंद चराए।
धनि यह समौ, धन्य ब्रज-बासी, धनि-धनि बेनु मधुर धुनि गाए।
धनि-धनि अनख, उरहनौ धनि-धनि, धनि माखन, धनि मोहन खाए।
धन्य सूर ऊखल तरु, गोबिंद हमहिं हेतु धनि भुजा बँधाए॥३८४॥१००२॥

× राग सोरठ

धन्य-धन्य ऋषि-साप हमारे।
आदि अनादि निगम नहिं जानत, ते हरि प्रगट देह ब्रज धारे।

---

(1) सनकादिक सुत तारौ—३, ६, १४, १७। (2) कर—१, ३, ६, ११, १७, १६।
* (ना) देवगिरी।
(3) धर—२। धरि—१६।
* (ना) देवगिरी। (रा) ललित।
(4) जिन उर हरि जाए—२। जिन उर धरि जाए—३। धनि श्रीधर जाए—६, ११। जिन गोद खिलाए—१४, १६।
× (ना) संकराभरन। (का, के, क, कां, पू, रा, श्या) कान्हरा।

धन्य नंद, धनि मातु जसोदा, धनि आँगन खलत, भए बार।
धन्य स्याम, धनि दाम बँधाए, धनि ऊखल, धनि माखन-प्यारे।
दीन-बंधु करुना-निधि हौ, प्रभु, राखि लेहु हम सरन तिहारे।
सूर स्याम कैं चरन सीस धरि, अस्तुति करि निज धाम[1] सिधारे॥३८५॥१००३

* राग बिलावल

यहै जानि गोपाल बँधाए।
साप-दग्ध ह्वै सुत कुबेर के, आनि भए तरु जुगल सुहाए।
ब्याज[2] रुदन लोचन जल ढारत, ऊखल दाम सहित चलि आए।
बिटप[3] भंजि, जमलार्जुन तारे, करि अस्तुति गोबिंद रिझाए।
तुम बिनु कौन दीन खल तारै, निरगुन सगुन रूप धरि आए।
सूरदास प्रभु के गुन गावत, हरषवंत निज पुरी सिधाए॥३८६॥१००४॥

❀ राग रामकली

तरु दोउ धरनि गिरे[4] भहराइ।
जर सहित अरराइ कै, आघात सब्द सुनाइ।
भए चकित लोग ब्रज के, सकुचि रहे डराइ।
कोउ रहे आकास देखत, कोउ रहे सिर नाइ।
घरिक लौं जकि रहे जहँ-तहँ, देह-गति बिसराइ।
निरखि जसुमति अजिर देखै, बँधे[5] नाहिँ कन्हाइ।
बृच्छ दोउ धर परे देखे, महरि कीन्ह पुकार।
अबहिँ आँगन छाँड़ि आई, चप्यौ तरु की डार।

---

(१) वास—११।
* (ना) देसकाल। (कां, रा, स्या) धनाश्री।
(२) कमलनयन—२। व्याकुल रुदन—६, १७। (३) खैँचि ताहि—२, ३। तरुअरि भंजि—६, १७।
❀ (ना) सारंग।
(४) परे—१, ११, १२। (५) जहँ बँधे सु कन्हाइ—१४।

मैं अभागिनि, बाँधि राखे, नंद-प्रान-अधार।
सोर सुनि नँद-द्वार आए, बिकल गोपो ग्वार।
देखि तरु सब अति डराने, हैं बड़े बिस्तार।
|| गिरे कैसैं, बड़ौ अचरज, नैंकु नहीं बयार।
दुहूँ तरु बिच स्याम बैठे, रहे ऊखल लागि।
भुजा छोरि उठाइ लीन्हे, महर हैं बड़भागि।
¶ निरखि जुवती अंग हरि के, चोट जनि कहुँ लागि।
¶ कबहुँ बाँधति कबहुँ मारति, महरि बड़ी अभागि।
नैन जल भरि ढारि जसुमति, सुतहिं कंठ लगाइ।
जरै रिस जिहिं तुमहिं बाँध्यौ, लगै मोहिं बलाइ।
नंद सुनि मोहिं कहा कहैंगे, देखि तरु दोउ आइ।
मैं मरौं, तुम कुशल रहौ दोउ, स्याम-हलधर भाइ।
% आइ घर जो नंद देखे, तरु गिरे दोउ भारि।
% बाँधि राखति सुतहिं मेरे, देत महरिहिं गारि।
तात कहि[1] तब स्याम दौरे,[2] महर लियौ अँकवारि।
कैसैं[3] उबरे बृच्छ-तर[4] तैं सूर है बलिहारि ॥३८७॥१००५॥

* राग नट

† मोहन हौं तुम ऊपर वारी।
कंठ लगाइ लिए,[5] मुख चूमति, सुंदर स्याम विहारी।

|| यह चरण (ना, स, का, के, गो, जा, पू) में नहीं है।
¶ ये चरण (ना, रा, स्या) में नहीं हैं।
% ये चरण (ना, रा, स्या) में नहीं हैं।

(१) हित बस—१४। (२) धाए—२, ३, ६, १७। (३) चूम आनन सूर प्रभु को बाल सा अनुहारि—६, १७। (४) कृष्ण नहं त—१, १४।
* (का, रा) जैतश्री। (स्या) धनाश्री।
† यह पद (के, पू) में नहीं है।
(५) कियो मुख चुंबन सुंदर स्याम मुरारी—२, १६, १८, १६।

काहे कौं ऊखल सौं बाँध्यो, कैसी मैं महतारो।
अतिहिँ उतंग बयारि न लागत, क्यौं टूटे तरु भारी।
बारंबार बिचारति[1] जसुमति, यह लीला अवतारी।
सूरदास स्वामी को महिमा, कापै[2] जाति बिचारी ॥३८८॥१००६॥

* राग सारंग

अब घर काहू कैं जनि जाहु।
तुम्हरैं आजु कमी काहे की, कत तुम अनतहिँ खाहु।
बरै[3] जेँवरी जिहिँ तुम बाँधे, परैं हाथ भहराइ।
नंद मोहिँ अतिहीँ त्रासत हैं, बाँधे कुँवर कन्हाइ।
रोग[4] जाउ मेरे[5] हलधर के, छोरत हो तब स्याम।
सूरदास प्रभु खात फिरौ जनि, माखन-दधि तुव धाम ॥३८६॥१००७

❀ राग सारंग

ब्रज-जुवती स्यामहिँ उर लावतिँ।
बारंबार निरखि कोमल तनु, कर जोरतिँ, बिधि कौं जु मनावतिँ।
कैसैँ बचे अगम तरु कैँ तर, मुख चूमतिँ, यह कहि पछितावतिँ।
उरहन लै आवतिँ जिहिँ कारन, सो सुख फल पूरन करि पावतिँ।
सुनौ महरि, इनकौं तुम बाँधति, भुज गहि बंधन चिन्ह दिखावतिँ।
सूरदास[6] प्रभु अति रति नागर, गोपी हरषि हृदय लपटावतिँ ॥३६०॥१००८॥

यमलार्जुन उद्धार की दूसरी लीला

× राग बिलावल

ग्वालि उरहनौ भोरहिँ ल्याई। जसुमति कहँ तेरौ गयौ[7] कन्हाई।

---

(१) विचारि जसोदा—१,११, १५। निहारि जसोदा—३। (२) कैसे जाति विसारी—१६।

* (ना) रामकलो।

(३) वरै—१, २, ३, ६ १७, १६। (४) बेगि—१४। (५) अपने हलधर की—१, ३, ६, ११, १५।

❀ (ना) विभास।

(६) सूर स्याम को अति तन कोमल जसुमति दया न आवति—६, १७।

× (ना) विभास।

(७) कुँवर—२।

भलौ काम तैं सुतहिँ पढ़ायौ। बारे ही तैं मूँड़ चढ़ायौ।
माखन मथि भरि धरी कमोरी। अबहीँ सो[1] हरि लै गयौ चोरी।
यह सुनतहिँ जसुमति रिस मानी। कहाँ गयौ कहि सारँगपानी।
खेलत तैं औचक हरि आए। जननी बाहँ पकरि बैठाए।
मुख देखत जसुमति तब[2] जान्यौ। माखन बदन कहाँ लपटान्यौ।
फिरि देखैं तो ग्वारिनि पाछैं। माता मुख चितवत नहिँ आछैं।
चोरी के सब भाव बताए। माता सँटिया द्वैक लगाए।
माखन खान जात पर घर कौं। बाँधत तोहिँ नैंकु नहिँ धरकौं।
बाहँ गहे ढूँढ़ति फिरै डोरी। बाँधौं तोहिँ सकै को छोरी।
बाँधि पची डोरी नहिँ पूरै। बार-बार खीझै, रिस-झूरै।
घर-घर तैं जेँवरि लै आई। मिस ही मिस देखन कौं धाई।
चकित भई देखैं ढिग ठाढ़ो। मनौ चितेरैं लिखि-लिखि काढ़ो।
जसुमति जोरि-जोरि रजु बाँधै। अंगुर द्वै-द्वै जेँवरि साधै।
जब जानी जननी अकुलानी। आपु बँधायौ सारँगपानी।
भक्त-हेत दाँवरी बँधाई। तब[3] जमलार्जुन की सुधि आई।
माता हेत जनहिँ सुखकारी। जानि बँधाए श्री बनवारी।
मुख जम्हाइ त्रिभुवन दिखरायौ। चकित कियौ तुरतहिँ बिसरायौ।
बाँधि स्याम बाहिर लै आई। गोरस घर-घर खात चुराई।
ऊखल सौं गहि बाँधे कन्हाई। नितहिँ उरहनौ सह्यौ न जाई।
इक कहि जाति एक फिरि आवै। रैनि-दिवस तू मोहिँ खिझावै[4]।
माखन दधि तेरैं घर नाहीँ[5]। धाम भर्यौ, चोरी करि खाहीं।

---

(१) मोहन—१, ११, १५। (२) पहिचानौ—१, ११, १५। (३) सनकादिक सुत की सुधि आई—३, ६, १४, १७। (४) नचावै—२, ३, ६, १४, १७। (५) माहीँ—२।

नव लख धेनु दुहत घर मेरैं। केते ग्वाल रहत गउ[1] घेरे।
मथतिँ नंद-घर सहस मथानी। ताकैँ सुत चोरी की बानी।
मोसौँ कहति आनि जब नारी। बोलि जात नहिँ लाजनि मारी।
नंद महर की करत नन्हाई। बिरध बयस सुत भयौ कन्हाई।
तुम्हरे गुन सब नीके जाने। नित बरज्यौ, कबहूँ नहिँ माने।
कोउ छोरै जनि ढीठ कन्हाई। बाँधे दोउ भुज ऊखल लाई।
भवन-काज कौँ गई नँदरानी। आँगन छाँड़े स्याम[2] बिनानी।
उरहन देत ग्वालि जे आई। तिन्हैँ दियौ जसुदा बहुराई[4]।
चलीँ सबै मिलि सोचत मन मैँ। स्यामहिँ गहि बाँध्यौ इक छिन मैँ।
हँसत बात इक कही कि नाहीँ। ऊखल सौँ बाँध्यौ सुत बाहीँ।
कहा कहौँ वा छबि कौ माई। बाँबी पर अहि करत लराई।
कान्ह-बदन अतिहीँ कुम्हिलायौ। मानौ कमलहिँ हिम तरसायौ।
डर तैँ दीरघ नैन चपल अति। बदन-सुधा-रस मीन करत गति।
यह सुनि और जुवति सब आईँ। जसुमति बाँधे कतहिँ कन्हाई।
भलो बुद्धि तेरैँ जिय उपजी। ज्यौँ-ज्यौँ दिनी भई त्यौँ निपजी।
छोरहु स्याम करहु मन लाहौ। अति निरदई भईँ तुम का हौ!
देखौ स्याम-ओर नँदरानी। सकुचि रह्यौ मुख सारँगपानी।
बाहिर बाँधि सुतहिँ बैठारौ। मथति दही माखन तोहिँ प्यारौ।
छाँड़ि देहु बहि जाइ मथानी। सौँह दिवावति छोरहु आनी।
हाँसी करन सबै तुम आईँ। अब छोरौ नहिँ कुँवर कन्हाई।
तुमहौँ मिलि रसबाद बढ़ायौ। उरहन दै-दै मूँड़ पिरायौ।

---

(१) घर—१, ११, १५। (२) करि मानी—२। (३) सारँगपानी—६, १७। (४) वहराई—१, ११, १५। भुराई—२। बौराई—६, १७। तुराई—१४।

सबहिनि गोधन सौँह दिवाई। चितै रहे मुख कुँवर कन्हाई।
कब तुमकौँ मैँ बोलि बुलाई। केहि कारन तुम धाई आईँ।
|| यह सुनि बहुरि चलीँ बिरुझाई[1] । कहा करौँ बलि जाउँ कन्हाई।
मूरख[2] कौँ कोउ कहा सिखावै। याकी मति कछु कहत न आवै।
नारि गईँ फिरि भवन आतुरी। नंद-घरनि अब भई चातुरी।
ओछी बुद्धि जसोदा कीन्ही। याकी जाति अबै हम चीन्ही।
यहै कहति अपनैँ घर आईँ। मानै नहीँ कितौ समुझाईँ।
मथति जसोदा दही मथानो। तबहिँ कान्ह ऐसी मति ठानी।
भक्त-बछल हरि अंतरजामी। सुत[3] कुबेर के ये दोउ नामी[4] ।
इहिँ अवतार कह्यौ इन तारन। इनकौ दुख अब करौँ निवारन।
जो जिहिँ ढँग तिहिँ ढँग सब लाए। जमला-अर्जुन पै प्रभु आए।
बृच्छ जीव ऊखल लै अटक्यौ। आगैँ निकसि नैँकु गहि झटक्यौ।
अररात दोउ बृच्छ गिरे धर। अति आघात भयौ ब्रज-भीतर।
भए चकित सब ब्रज के बासी। इहिँ अंतर दोउ कुँवर प्रकासी।
संख चक्र कर सारँग धारी। भगत-हेत प्रगटे बनवारी।
देखि दरस मन हरष बढ़ायौ। तुमहिँ बिना प्रभु कौन सहायौ।
धनि ब्रज कृष्न जहाँ बपुधारी। धनि जसुमति ब्रह्महिँ अवतारी।
धन्य नंद, धनि-धनि गोपाला। धन्य-धन्य गोकुल की बाला।
धन्य गाइ, धनि द्रुम बन चारन। धनि[5] जमुना हरि करत बिहारन।

|| (क) मेँ इस युग्म के स्थान पर यह युग्म है—कहा करौँ बलि जाउँ कन्हाई। हमरे बस न तुम्हारी माई।

① मुरझाई—१, २, ११, १५। ② सीखे को—११। ③ सनकादिक सुत—३, ६, १४, १७। ④ कामी—१४। ⑤ धन्नि जन्म—२। धन्य जमुन—६, १७।

‖ धन्य उरहनौ प्रातहिँ ल्याई। धनि माखन चोरत जदुराई[1]।
‖ धनि सो जन ऊखल गढ़ि ल्यायौ। धन्य दाम भुज कृष्न बँधायौ।
गदगद कंठ बचन मुख भारी। सरन राखि लै गर्ब - प्रहारी।
बार-बार चरननि परे धाई। कृपा करी भक्तनि सुखदाई।
साधु-साधु कहि श्रीमुख बानी। बिदा भए इहिँ[2] भाँति बखानी।
जमलार्जुन कौँ तारि पठाए। नंद-द्वार दोउ बृच्छ गिराए।
निकसि जसोदा आँगन आई। दुहूँ बृच्छ-बिच बचे कन्हाई।
दौरि परे ब्रज के नर-नारी। नंद-द्वार कछु होत गुहारी।
देखे आनि बृच्छ दोउ डारे। ये गुन जसुमति आहिँ तुम्हारे।
तुरत छोरि ऊखल तैँ ल्याए। देखत जननि नैन भरि आए।
ब्रज[3] -देवता कोउ है री माई। जहाँ तहाँ सो होत सहाई।
प्रथम पूतना मारन आई। पय पीवत वह[4] तहाँ नसाई।
तृनावर्त्त लै गयौ उड़ाई। आपुहिँ गिरयौ सिला पर आई।
कागासुर आवत नहिँ जान्यौ। सुनी[5] कहत ज्यौ लेइ परान्यौ।
¶ सकटासुर पलना ढिग आयौ। को जानै किहिँ ताहि गिरायौ।
कौन-कौन करबर हैँ[6] टारे। जसुमति बाँधि अजिर लै डारे।
बहुतै उबरयौ आजु कन्हाई। ऊपर बृच्छ गिरे भहराई।
कहा कहौँ न कहत बनि आवै। तुरत आइ हरि कौन बचावै?

‖ इन दो युग्मों के स्थान पर (ना) में यह युग्म है—धनि उरहनौ प्रातहिँ आए। धनि दाम भुज कृस्न बँधाए।

(१) दिविराई—६, ६, १४, १७। (२) सनकादि—३, ६, १४ १७। (३) वज्र देह हरि की है माई—१, ३, ६, ६, ११, १४, १७। (४) हरि तुरत—२। (५) नैन गहत जिय लेइ परान्यौ—१६, १६।

¶ अन्य प्रतियों में इस युग्म के उपरांत ये दो युग्म और मिलते हैं—खेलत मैँ केसी कौं मारयौ। चीँचि तोरि तिहिँ धरनि पछारयौ। ग्वालन संग गए गोचारन। तहाँ बकासुर लाग्यौ मारन।

(६) हरि—१, ११, १२।

सबहिनि[1] पेलि[2] करत मन भाई। पुन्य नंद कैं बचे कन्हाई।
मुख चूमतिं लै-लै उर लाए। जुवतिनि किए आपु मन भाए।
लै जननी सुत कंठ लगावति। चोरी की बातैं समुझावति।
मैं रिस ही रिस करति लाल सौं। भुज बाँधे मन हँसत ख्याल सौं।
मैं[3] बरजे तुम करत अचगरी। उरहन कौं ठाढ़ी रहैं सिगरी।
बार-बार तन देखति माई। गिरत बृच्छ कहुँ चोट न आई।
कहत स्याम मैं अतिहिं डरान्यौ। ऊखल तर मैं रह्यौ छपान्यौ।
बात सुतहिं पूछति नँदरानी। कान्ह कहैं मुख डर की बानी।
हरि के चरित कहा[4] कोउ जानै। जसुमति अति बालक करि मानै।
अखिल ब्रह्मंड जीव के दाता। माखन कौं बाँधति है माता।
गुन अपार अबिगत अबिनासी। सो प्रभु घर-घर घोष-बिलासी।
ऊखल बँध्यौ जु हेत भगत के। येइ माता येइ पिता जगत के।
जमलार्जुन कौं मोच्छ कराए। पुत्र-हेत जसुदा-गृह आए।
ऐसे हरि जन के सुखकारी। परगट रूप चतुर्भुज-धारी।
जो जिहिं भाव भजै, प्रभु तैसे। प्रेम बस्य दुष्टनि कौं नैसे।
सूरदास यह लीला गावै। कहत सुनत सबकैं मन भावै।
जो हरि चरित ध्यान उर राखै। आनँद सदा दुखित-दुख नाखै॥३६१॥१००६॥

*राग मलार

निगम[5] सार देखौ गोकुल हरि।
जाकौ दूरि[6] दरस देवनि कौं, सो बाँध्यौ जसुमति ऊखल धरि।

---

(१) सब मिलि कहति बात मन भाई—२। (२) मिलि इक मत मन भाई—१४। (३) मेरे जो—१, ११, १५। मैं बांधे—१६। (४) कथा नहिं—१, ११, १५। *(ना) मालकौस। (के, पू) भैरव। (र्का, श्या) जैतश्री। (रा) धनाश्री। (५) स्वरूप देखि—१, ११। (६) दरस देवनि कौ दुर्लभ—१६।

चुटकी दै-दै ग्वालि नचावति, नाचत कान्ह बाल[1] -लीला करि ।
जिहिँ डर भ्रमत पवन, रवि-ससि, जल, सो[2] करै टहल लकुटिया सौँ डरि ।
छीरसमुद्र सयन संतत जिहिँ, माँगत दूध पतौषी दै भरि ।
सूरदास गुन के गाहक हरि, रसना गाइ अनेक गए तरि ॥३६२॥१०१०॥

* राग सोरठ

जाकौ ब्रह्मा अंत न पावै ।
तापै नंद की नारि जसोदा, घर की टहल करावै ।
सेष, सनक, नारद, गनेस, मुनि, जाके गुन नित गावैँ ।
निसि-बासर खोजत पचिहारैँ, मनसा ध्यान न आवै ।
धनि गोकुल, धनि-धनि ब्रज-बनिता, निरखत स्याम बधावै ।
सूरदास प्रभु प्रेमहिँ कैँ बस, संतनि दरस दिखावैँ ॥३६३॥१०११॥

✿ राग बिलावल

गोबिँद, तेरौ सरूप निगम नेति गावैँ ।
भक्ति के बस स्याम सुँदर, देह धरे आवैँ ।
जोगी जन ध्यान धरैँ, सपनेहुँ नहिँ पावैँ ।
नंद-घरनि बाँधि-बाँधि, कपी ज्यौँ नचावैँ ।
गोपी जन प्रेमातुर, तिनकौँ सुख दीन्हौ ।
अपनैँ-अपनैँ रस[3] बिलास, काहू नहिँ चीन्हौ ।
स्त्रुती, सुमृति, सब पुरान, कहत मुनि बिचारी ।
सूरदास प्रेम-कथा, सबही तैँ न्यारो ॥३६४॥१०१२॥

---

(१) आपु—१६। (२) सो क्यौं डरै लकुटिया के डर—१,११,१२।

* (ना) मालकौस ।
✿ (ना) संकराभरन ।

(३) सुख बिलास—१६, १८, १६ ।

राग सारंग

† भूखौ भयौ आजु मेरौ बारौ ।
भोरहिँ ग्वारि उरहनौ ल्याई, उहिँ यह कियौ पसारौ ।
पहिलेहिँ रोहिनि सौं कहि राख्यौ, तुरत करहु जेवनार ।
ग्वाल-बाल सब बोलि लिए मिलि, बैठे नंद-कुमार ।
भोजन बेगि ल्याउ कछु मैया, भूख लगी मोहिँ भारी ।
आजु सबारैँ कछु नहिँ खायौ, सुनत हँसी महतारी ।
रोहिनि चितै रही जसुमति-तन, सिर धुनि-धुनि पछितानी ।
परसहु बेगि, बेर कत लावति, भूखे सारँगपानी ।
बहु ब्यंजन बहु भाँति रसोई, षटरस के परकार ।
सूर स्याम हलधर दोउ भैया, और सखा सब ग्वार ॥३६५॥१०१३॥

राग सारंग

‡ नंद-भवन मैँ कान्ह अरोगैँ । जसुदा ल्यावैँ षटरस भोगैँ ।
आसन दै, चौकी आगैँ धरि । जमुना-जल राख्यौ[1] झारी भरि ।
कनक-थार मैँ हाथ धुवाए । सत्रह सौ भोजन तहँ आए ।
लै-लै धरति सबनि के आगैँ । मातु परोसै जो हरि माँगैँ ।
खीर, खाँड़, घृत, लावनि[2] लाड़ू । ऐसे होहिँ न अमृत खाँड़ू ।
और लेहु कछु सुत ब्रज-राजा । लुचुई, लपसी, घेवर, खाजा ।
पेठापाक, जलेबी, कौरी[3] । गोँदपाक, तिनगरी[4], गिँदौरी ।

† यह पद (ना) मेँ नहीँ है ।

‡ यह पद (ना, वृ, कां, रा, श्या) मेँ नहीँ है ।

① मेल्यौ—३, १४ । ② लावज—१,११, १२ । ③ पेड़ा—१, ११, १४ । केरा—३ । ④ तिनगनी—३, १४ । चिनगिनी—६, १७ ।

गुझा, इलाचीपाक, अमिरती। सीरा साजौ लेहु ब्रजपती।
छोलि धरे खरबूजा, केरा। सीतल बास[१] करत अति घेरा।
खरिक, दाख अरु गरी, चिरारी। पिंड बदाम लेहु बनवारी।
बेसन-पुरी, सुख-पुरी लीजे। आछौ दूध कमल-मुख पीजे।
मैया मोहिँ और क्यौँ प्यावै। धौरी कौ पय मोहिँ अति भावै।
बेला भरि हलधर कौँ दीन्हौ। पीवत पय अस्तुति बल कीन्हौ।
ग्वाल सखा सबहीँ पय अँचयौ। नीकैँ औटि जसोदा रचयौ।
दोना मेलि धरे हैँ खूआ[२]। हौँस होइ तौ ल्याऊँ पूआ।
मीठे अति कोमल हैँ नीके। ताते, तुरत चभोरे घी के।
फेनी, सेव, अँदरसे प्यारे। लै आवौँ जेँवौ मेरे बारे।
हलधर कहत ल्याउ री मैया। मोकौँ दै नहिँ लेत कन्हैया।
जसुमति हरष भरी लै परसति। जेँवत हैँ अपनी रुचि सौँ अति।
कान्ह माँगि सीतल जल लीयौ। भोजन बीच नीर लै पीयौ।
भात पसाइ रोहिनी ल्याई। घृत सुगंधि तुरतै दै ताई।
नीलावती चाँवर दिव-दुर्लभ। भात परोस्यौ माता सुरलभ।
मूँग मसूर उरद चनदारी। कनक-फटक[३] धरि फटकि पछारी।
रोटी, बाटी, पोरी, झोरी। इक कोरी इक घीव चभोरी।
गायै-घृत भरि धरी[४] कटोरी। कछु खायौ[५] कछु फेटैँ छोरी।
मीठैँ तेल चना की भाजी। एक मकूनी दै मोहिँ साजी।
मीठे चरपर उज्ज्वल कूरा[६]। हौँस होइ तौ ल्याऊँ[७] मूरा।

---

(१) वायु—१। (२) खजुआ—१, ११, १५। जुआ—३, ६, १४, १७। (३) वरन—१, ३, ११, १४। (४) धरी कचोरी—१, ११। दही कचोरी—३। धरयौ कचोरी—६, १७। धरेउ कचेरेउ—१४। (५) मांग्यै—३, ६, १४, १७। (६) कारा—१, ३, ६, १७। कौर—१४। (७) ल्याऊँ औरा—१। मांगो मौरा—६, १७। मागे और—१४।

मूँग-पकौरा पनो पतबरा। इक कोरे इक भिजे गुरबरा।
पापर बरी मिथैारि फुलौरी। कूर बरी काचरी पिठौरी।
बहुत मिरच दै किए निमोना। बेसन के दस बीसक दोना।
बन कौरा पिंडीक चिचिंडी। सीप पिँड़ारू कोमल भिंडी।
चौराई लाल्हा अरु पोई। मध्य मेलि निबुआनि निचोई।
रुचिर लजालु[1] लोनिका फाँगो। कढ़ी कृपालु दूसरैं माँगो।
सरसौं, मेथी, सोवा, पालक। बथुआ राँधि लियौ जु उतालक।
हीँग हरद म्रिच छौंके तेले। अदरख और आँवरे मेले।
सालन सकल कपूर सुबासत। स्वाद लेत सुंदर हरि ग्रासत।
आँब आदि दै सबै सँधाने। सब चाखे गोबर्धन-राने।
कान्ह कह्यौ हौं मातु अघानौ। अब मोकौं सीतल जल आनौ।
अँचवन लै तब धोए कर मुख। सेष न बरनै भोजन कौ सुख।
उज्ज्वल पान, कपूर, कस्तुरी। आरोगत मुख की छबि रूरी।
चंदन अंग सखनि कैं चरच्यौ। जसुमति के सुख कौं नहिं परच्यौ।
जूठनि माँगि सूर जन लीन्हौ। बाँटि प्रसाद सबनि कौं दीन्हौ।
जन्म-जन्म बाढ़्यौ[2] जूठनि कौ। चेरौ नंद महर के धन[3] कौ॥३९६॥१०१४

राग धनाश्री

† आरोगत हैं श्रीगोपाल।
षटरस सौंज बनाइ जसोदा, रचिकै कंचन-थाल।
करति बयारि निहारति हरि-मुख, चंचल नैन बिसाल।
जो भावै सो माँगि लेहु तुम, माधुरि मधुर रसाल।

---

(१) लजान—१, ३, ६, ११, १७। (२) चाह्यौ—६, १७। बांध्यौ—११। (३) घर कौ—१, ३, ६, ११, १४, १७।

† यह पद केवल (गो) में है।

जे दरसन सनकादिक दुर्लभ, ते देखति[1] ब्रज-बाल।
सूरदास प्रभु कहति जसोदा, चिरजीवौ नँद-[2] लाल ॥३६७॥१०१५

* राग कान्हरौ

मोहिँ कहति जुवती सब चोर।
खेलत कहूँ रहौं मैं बाहिर, चितै रहति सब मेरी ओर।
बोलि लेति भीतर घर अपनैं, मुख चूमति, भरि लेति अँकोर।
माखन हेरि देति अपनैं कर, कछु कहि बिधि सौं करति निहोर।
जहाँ मोहिँ देखति, तहँ टेरति, मैं नहिँ जात दुहाई तोर।
सूर स्याम हँसि कंठ लगायौ, वै तरुनी कहँ बालक मोर ॥३६८॥१०१६॥

⊛ राग केदारौ

जसुमति[3] कहति कान्ह मेरे प्यारे, अपनैं ही आँगन तुम खेलौ।
बोलि लेहु सब सखा संग के, मेरौ कह्यौ कबहुँ जिनि पेलौ[4]।
ब्रज-बनिता सब चोर कहति तोहिँ, लाजनि सकुचि जात मुख[5] मेरौ।
आजु मोहिँ बलराम कहत हे, झूठहिँ नाम धरति[6] हैं तेरौ।
जब मोहिँ रिस लागति तब त्रासति, बाँधति, मारति, जैसैं चेरौ।
सूर हँसति ग्वालिनि दै तारी, चोर नाम कैसैं हु[7] सुत फेरौ ॥३६९॥१०१७॥

गो-दोहन राग बिलावल

† धेनु दुहत हरि देखत ग्वालनि।
आपुन बैठि गए तिनकैं सँग, सिखवहु मोहिँ कहत गोपालनि।

---

(१) दुरि देखत हैं ब्रजबाल। (२) नद के लाल।

* (ना) देवसाख। (रा) धनाश्री।

⊛ (ना) देवसाख। (का, के, क, जै, कां, पू, रा) कान्हरा।

(३) जसुमति कहति कान्ह सौ मेरे—१। (४) ठेलौ—६, १४, १७। (५) मन मेरौ—१, २, ११। (६) लेत है—१। (७) कैसें हूँ फेरौ—२। कैसें हूँ हरि फेरौ—१४। कैसेउ तुम—१६।

† यह पद (ना, वृ, कां, रा, श्या) में नही है।

कान्हि तुम्हैं गो दुहन सिखावैं, दुहीं सबै अब गाइ ।
भोर दुहौ जनि नंद-दुहाई, उनसौं कहत सुनाइ ।
बड़ौ भयौ अब दुहत रहौंगौ, अपनी धेनु निबेरि ।
सूरदास प्रभु कहत सौंह[1] दै, मोहिं लीजौ तुम टेरि ॥४००॥१०१८॥

* राग कान्हरौ

† मैं दुहिहौं मोहिं दुहन सिखावहु ।
कैसैं गहत दोहनी घुटुवनि, कैसैं बछरा थन[2] लै लावहु ।
कैसैं लै नोई पग बाँधत, कैसैं लै[3] गैया अटकावहु ।
कैसैं धार दूध की बाजति, सोइ सोइ बिधि तुम मोहिं बतावहु ।
निपट भई अब साँझ कन्हैया, गैयनि पै कहुँ चोट लगावहु ।
सूर स्याम सौं कहत ग्वाल सब, धेनु दुहन प्रातहिं[4] उठि आवहु ॥४०१॥१०१९

बृंदाबन-प्रस्थान

❁ राग सारंग

‡ महर-महरि कैं मन यह आई ।
गोकुल होत[5] उपद्रव दिन प्रति, बसिऐ बृंदाबन मैं जाई ।
सब गोपनि मिलि सकटा साजे, सबहिनि के मन मैं यह भाई[6] ।
सूर जमुन-तट डेरा दीन्हे, पाँच बरष के कुँवर कन्हाई ॥४०२॥१०२०॥

× राग बिलावल

§ जागौ हो तुम नंद-कुमार ।
हौं बलि जाउँ मुखारबिंद की, गो सुत मेलौ खरिक सम्हार ।

---

(१) सीख दै—३, १७ ।
* (के, पू) बिलावल ।
† यह पद (ना, वृ, क, र्का, रा, श्या) में नहीं है ।
(२) थनहिं लगावहु—१, ११, १५ । (३) ले या पग—१, ११, १५ । लै या पग—३ । (४) तुम प्रातहिं आवहु—६, १७ ।
❁ (ना) रामकली ।
‡ यह पद (स, का, के, क, पू) में नहीं है ।
(५) बहुत—१, ११, १५ ।
(६) आई—२, १६ ।
× (ना) बिभास । (रा) भैरव ।
§ यह पद (का, के, पू) में नहीं है ।

अब[1] लौं कहा सोए मन मोहन, और बार तुम उठत सबार ।
बारहिँ बार जगावति माता, अंबुज-नैन भयौ भिनुसार ।
दधि मथि कै माखन बहु दैहौं[2] सकल[3] ग्वाल ठाढ़े दरबार ।
उठि कै मोहन बदन दिखावहु, सूरदास के प्रान-अधार ॥४०३॥१०२१॥

राग बिलावल

† जागहु हो ब्रजराज हरी ।
लै मुरली आँगन ह्वै देखौ, दिनमनि उदित भए द्विघरी ।
गो-सुत गोठ बँधन सब लागे, गो-दोहन की जून टरी ।
मधुर[4] बचन कहि सुतहिँ जगावति, जननि जसोदा पास खरी ।
भोर भयौ दधि-मथन होत, सब ग्वाल सखनि की हाँक परी ।
सूरदास प्रभु दरसन कारन, नीँद छुड़ाई चरन धरी ॥४०४॥१०२२॥

* राग बिलावल

जागहु लाल ग्वाल सब टेरत ।
कबहुँ पितंबर डारि बदन पर, कबहुँ उघारि जननि तन हेरत ।
सोवत मैँ जागत मनमोहन, बात सुनत सबकी, अवसेरत[5] ।
बारंबार जगावति माता, लोचन खोलि पलक पुनि गेरत[6] ।
पुनि कहि उठी जसोदा मैया, उठहु कान्ह रवि किरनि उजेरत ।
सूर स्याम,हँसि चितै मातु-मुख,पट कर लै,पुनि-पुनि मुख फेरत॥४०५॥१०२३॥

⊛ राग सूहा बिलावल

‡ जननि जगावति उठौ[7] कन्हाई । प्रगट्यौ तरनि, किरनि महि[8] छाई ।

---

(१) इतनौ—१, ११ । (२) दीन्है—१, ११, १५, १६ । (३) संग सखा ठाढे सिंह दुवार—१४ ।
† यह पद केवल (वे, गो, जै) में है ।
(४) निठुर—१, ११, १५ ।
* (ना) विभास ।
(५) अवटेरत—१, ६, ११ ।
(६) घेरत—१, २, ३, ११, १५ फेरत—१६ ।
⊛ (ना) विभास ।
‡ यह पद (का) में नहीं है ।
(७) कुँवर—६, १७ । (८) गन—१, २, ३, ११, १५ । मधि—६, १७ ।

आवहु चंद्र-बदन दिखराई। बार-बार जननी बलि जाई।
सखा द्वार सब तुमहिँ बुलावत। तुम कारन हम धाए आवत।
सूर स्याम उठि दरसन दीन्हौ। माता देखि मुदित मन कीन्हौ ॥४०६॥१०२४

* राग रामकली

† दाऊ जू, कहि स्याम पुकार्‍यौ।
नीलांबर कर[1] ऐँचि लियौ हरि, मनु बादर तैँ चंद उजार्‍यौ।
हँसत-हँसत दोउ बाहिर आए, माता लै जल बदन पखार्‍यौ।
दतवनि लै दुहुँ करी मुखारी, नैननि कौ आलस जु बिसार्‍यौ।
माखन[2] लै दोउनि कर दीन्हौ, तुरत मथ्यौ, मीठौ अति भार्‍यौ।
सूरदास प्रभु खात परस्पर, माता अंतर-हेत बिचार्‍यौ ॥४०७॥१०२५॥

✿ राग बिलावल

‡ जागहु-जागहु नंद-कुमार।
|| रवि बहु चढ़्यौ, रैनि सब निघटी, उचटे सकल किवार।
वारि वारि जल पियति जसोदा, उठि मेरे प्रान-अधार।
घर-घर गोपी दह्यौ बिलोवैँ, कर-कंकन झंकार।
¶ साँझ दुहन तुम कह्यौ गाइकौँ, तातैँ होति अबार।
सूरदास[3] प्रभु उठे तुरत हीँ, लीला अगम अपार ॥४०८॥१०२६॥

---

* (ना) धनाश्री।

† यह पद (का) में नहीं है।

(१) पट—१, २, ३, ११, १५, १७। (२) खाहु—१, ११, १५, १७। १६।

✿ (ना) गुनकली।

‡ यह पद (के, पू) में नहीं है।

|| (ना, स, कां, रा, श्या) में इसके पूर्व यह चरण मिलता है—

सोवत कहा सुदामा ठाढ़े सग सखा सब द्वार।

¶ यह चरण (ना, स, कां, रा, श्या) में नहीं है।

(३) सूरदास गिरिधर की लीला महिमा अगम अपार—२, ३।

राग बिलावल

† तनक कनक की दोहनी, दै-दै री मैया ।
तात[1] दुहन सीखन कह्यौ, मोहिँ धौरी गैया ।
अटपट आसन बैठि कै, गो-थन कर लीन्हौ ।
धार अनतहीँ देखि कै, ब्रजपति हँसि दीन्हौ ।
घर-घर तैँ आईँ[2] सबै, देखन ब्रज-नारी ।
चितै चतुर[3] चित हरि लियौ, हँसि गोप-बिहारी ।
बिप्र बोलि आसन दियौ, कह्यौ[4] बेद उचारी[5] ।
सूर स्याम सुरभी दुही, संतनि हितकारी ॥४०६॥१०२७॥

* राग देव गंधार

‡ बछरा चारन चले गोपाल ।
सुबल, सुदामा अरु श्रीदामा, संग लिए सब[6] ग्वाल ।
|| बछरनि कौँ बन माँझ छाँड़ि सब खेलत खेल अनूप ।
दनुज एक तहँ आइ पहूँच्यौ धरे बत्स कौ रूप ।
हरि हलधर दिसि चितै कह्यौ तुम जानत हौ इहिँ बीर ।
कह्यौ आहि दानव इहिँ मारौ धारे बत्स-सरीर ॥
तब हरि सीँग गह्यौ इक कर सौँ इक कर सौँ गह्यौ पाइ ।
थोरेक ही बल सौँ छिन भीतर दीनौ ताहि गिराइ ।

---

† यह पद (वे, ल, शा, का, के, गो, जै, पू) में है ।

(1) नद तात दूहन कह्यौ दुहि दौं री गैया—१,१७ । (2) निकसी—१, १७ । (3) चोरि—१, ११, १५ । (4) करि—१, ११, १५ । (5) विचारी—१, १७ ।

* (ना) धनाश्री ।

‡ यह पद (का, के, पू) में नहीं है ।

(6) ब्रजबाल—३ ।

|| यह चरण (वे, जै) में नहीं है । (गो) में इसके स्थान पर यह पंक्ति है :—

'खुर करि अवनि उडाइ
पक बहु देखत काल सरूप ।'

और (ना) में यह पाठ मिलता है :—

'तुरतहिँ जानि गए मन मोहन
प्रभु त्रिभुवन के भूप ।'

गिरत धरनि पर प्रान निकसि गए फिरि नहिँ आयौ स्वास।
सूरदास ग्वालनि सँग मिलि हरि लागे करन बिलास ॥४१०॥१०२८

गो-चारण

* राग रामकली

आजु मैं गाइ चरावन जैहौं।
बृंदाबन के भाँति-भाँति फल अपने कर मैं खैहौं।
ऐसी बात[1] कहौ जनि बारे, देखौ अपनी भाँति।
तनक-तनक पग चलिहौ कैसैं, आवत ह्वै है राति।
प्रात जात गैया लै चारन, घर आवत हैं साँझ।
तुम्हरौ कमल बदन कुम्हिलैहै[2], रैंगत घामहिँ माँझ।
तेरी सौं मोहिँ घाम न लागत, भूख नहीं कछु नेक।
सूरदास प्रभु कह्यौ न मानत, पर्‌यौ आपनी टेक ॥४११॥१०२९

* राग रामकली

† मैया हौं गाइ चरावन जैहौं।
तू कहि महर नंद बाबा सौं, बड़ौ भयौ न डरैहौं।
रैता, पैता, मना, मनसुखा, हलधर संगहिँ रैहौं।
बंसीबट तर ग्वालनि कैं सँग, खेलत अति सुख पैहौं।
ओदन भोजन दै दधि काँवरि,[3] भूख लगे तैं खैहौं।
सूरदास है साखि जमुन-जल सौंह देहु जु नहैहौं ॥४१२॥१०३०॥

---

* (रा) गौरी। (ना) ललित। (क, कां, रा, श्या) सारंग।

(1) अबहिँ—१,११। भाँति—१६। (2) मुरझैहै—६, १४, १७। (3) गाँठौ—२, ३। गाढौ—१६।

† यह पद (के, पू) में नहीँ है।

* राग रामकली

चले सब गाइ चरावन ग्वाल ।
हेरी टेर सुनत लरिकनि[1] के, दौरि गए नँदलाल ।
फिरि इत-उत जसुमति जो देखै, दृष्टि न परै कन्हाई ।
जान्यौ जात ग्वाल सँग दौर्‌यौ, टेरति जसुमति धाई ।
जात चल्यौ गैयनि के पाछैं, बलदाऊ कहि टेरत ।
पाछैं आवति जननी देखी, फिरि-फिरि इत कौं हेरत ।
बल देख्यौ मोहन कौं आवत, सखा किए सब ठाढ़े ।
पहुँची आइ जसोदा रिस भरि, दोउ भुज पकरे गाढ़े ।
हलधर कह्यौ, जान दै मो सँग, आवहिं आज सवारे ।
सूरदास बल सौं कहै जसुमति, देखे रहियौ प्यारे ॥४१३॥१०३१॥

⊛ राग बिलावल

खेलत कान्ह चले ग्वालनि सँग ।
जसुमति यहै कहत घर आई हरि कीन्हे कैसे रँग ।
प्रातहिं तैं लागे याही ढँग अपनी टेक कर्‌यौ[2] है ।
देखौ जाइ आजु बन कौ सुख, कहा परोसि धर्‌यौ है ।
माखन-रोटी अरु सीतल जल, जसुमति दियौ पठाइ ।
सूर नंद हँसि कहत महरि सौं, आवत कान्ह[3] चराइ ॥४१४॥१०३२॥

× राग सारंग

बृंदावन देख्यौ नँद-नंदन, अतिहिं परम सुख पायौ ।
जहँ-जहँ[4] गाइ चरतिं, ग्वालनि सँग, तहँ-तहँ[5] आपुन धायौ ।

---

* (ना) धनाश्री । (रा) भैरो ।
(१) ग्वालनि—२ ।
⊛ (ना) जैतश्री । (रा) देवगधार ।
(२) पर्‌यौ है—१, ११, १४ ।
(३) गाइ—२ । धेनु—३ ।
× (ना) देवगंधार । (के, क, ६) कान्हरा । (गो) बिलावल ।
(४) जहँ-जहँ बाल गाइ सँग डोलत—१ । जह-जहँ गाइ ग्वाल सँग डोलत—११ । (५) डोलत—१६ ।

बलदाऊ मोकौं जनि छाँड़ौ, संग तुम्हारैं ऐहौं।
कैसेहुँ आजु जसोदा छाँड़्यौ, काल्हि न आवन पैहौं।
सोवत मोकौं टेरि लेहुगे, बाबा नंद-दुहाई।
सूर स्याम बिनती करि बल सौं, सखनि समेत सुनाई॥४१५॥१०३३॥

राग सारंग

† हरि जू कौं ग्वालिनि भोजन ल्याई।
बृंदा बिपिन बिसद जमुना-तट, सुचि ज्यौनार बनाई।
सानि-सानि दधि भात लियौ कर, सुहृद सखनि कर देत।
मध्य-गोपाल-मंडली मोहन, छाक बाँटि कै लेत।
देवलोक देखत सब कौतुक, बाल-केलि अनुरागे।
गावत सुनत सुजस[1] सुख करि मन,[2] सूर दुरित दुख भागे॥४१६॥१०३४॥

राग गौरी

‡ बन तैं आवत धेनु चराए।
संध्या समय साँवरे मुख पर, गो-पद-रज लपटाए।
बरह-मुकुट कैं निकट लसति लट, मधुप मनौ रुचि पाए।
बिलसत सुधा जलज[3]-आनन पर, उड़त न जात उड़ाए।
बिधि-बाहन-भच्छन की माला, राजत उर पहिराए।
एक[4] बरन बपु नहिं बड़ छोटे, ग्वाल बने इक धाए।
सूरदास बलि लीला प्रभु की, जीवत जन जस गाए॥४१७॥१०३५॥

---

† यह पद (वे, ल, का, गो, जै) में है।

(१) सुनत—१, ११। (२) मनौ—१, ११।

‡ यह पद (वे, ल, शा, का, गो, जै, रा) में है। इसमें केवल सात ही चरण मिलते हैं। ज्ञात होता है कि छठा चरण लेखक के प्रमाद से छूट गया है।

(३) जलद—१, ११। (४) इक बपु रही नाहिं बड छोटे ग्वाल बने इक दाए—१। नाहिं बडे छोट छोटा सिसु मंडल ग्वाल बने इक धाएँ—१८।

* राग गौरी

जसुमति दौरि लिए हरि कनियाँ।
आजु गयौ मेरौ गाइ चरावन, हौं बलि जाउँ निछनियाँ[1]।
मो कारन कछु आन्यौ है[2] बलि, बन-फल तोरि नन्हैया।
तुमहिं मिलैं मैं अति सुख पायौ, मेरे कुँवर कन्हैया।
कछुक खाहु जो भावै मोहन, दै री माखन-रोटी।
सूरदास प्रभु जीवहु जुग-जुग हरि हलधर की जोटी ॥४१८॥१०३६॥

राग गौरी

† माखन[3]-रोटी ताती-ताती लेहु कन्हैया बारे।
मन[4] मैं रुचि उपजावै, भावै, त्रिभुवन के उजियारे।
और लेहु पकवान, मिठाई, बहु बिधि व्यंजन सारे।
औट्यौ दूध, सद्य दधि, घृत, मधु, रुचि सौं खाहु लला रे।
तब हरि उठिकै करी बियारी, भक्तनि-प्रान-पियारे।
सूर स्याम भोजन करि कै, सुचि जल सौं बदन पखारे ॥४१९॥१०३७

* राग सारंग

मैं अपनी सब गाइ चरैहौं।
प्रात होत बल कैं सँग जैहौं, तेरे कहैं न रैहौं[5]।
ग्वाल बाल गाइनि के भीतर, नैं कहुँ डर नहिं लागत।
आजु न सोवौं नंद-दुहाई, रैनि रहौंगौ जागत।

---

* (ग) कल्यान।
(१) बचनियाँ—२। (२) नाहीं—२, ३, १६।
† यह पद केवल (स. क) में है।
(३) माखन रोटी लेहु कान्ह बारे—१४। (४) ताती ताती रुचि उपजावै त्रिभुवन के उजियारे —१४।
* (ना) कल्यान। (ग) देवगंधार।
(५) भुरैहौं—१, ११

और ग्वाल सब गाइ चरैहैं मैं घर बैठो रैहौं ?
सूर स्याम तुम सोइ रहौ अब, प्रात जान मैं देहौं ॥४२०॥१०३८॥

* राग केदारौ

† बहुतै दुख हरि सोइ गयौ री ।
साँझहिं तैं लाग्यौ इहिं बातहिं, क्रम-[1] क्रम बोधि लयौ री ।
एक दिवस गयौ गाइ चरावन, ग्वालनि संग सबारे ।
अब तौ सोइ रह्यौ है कहि कै, प्रातहिं कहा बिचारे ।
यह तौ सब बलरामहिं लागे, सँग लै गयौ लिवाइ ।
सूर नंद यह कहत महरि सौं, आवन दै फिरि[2] धाइ ॥४२१॥१०३६॥

राग कान्हरौ

‡ पौढ़े स्याम जननि गुन गावत ।
आजु गयौ मेरौ गाइ चरावन कहि-कहि मन हुलसावत ।
कौन पुन्य तप तैं मैं पायौ ऐसौ सुंदर बाल ।
हरषि-हरषि कै देति-सुरनि कौं सूर सुमन की माल ॥४२२॥१०४०॥

❀ राग बिलावल

करहु कलेऊ कान्ह पियारे ।
माखन-रोटी दियौ हाथ पर, बलि-बलि जाउँ[3] जु खाहु लला रे ।
टेरत ग्वाल द्वार हैं ठाढ़े, आए तब के होत सबारे ।
खेलहु जाइ घोष के भीतर, दूरि कहूँ जनि जैयहु बारे[4] ।

---

* (ना) कल्यान ।
† यह पद (ल) में नहीं है ।
(१) क्रम-क्रम तैं (करि) मन—२, ३, ११, १५, १७, १६ ।
(२) बहराइ—२, १६ ।
‡ यह पद केवल (स, क) में है ।
❀ (ना) धनाश्री । (का, स्या) सोरठ ।
(३) जाउँ हो खाहु लला रे—१, ३, ११, १४ ।
(४) प्यारे—१, २, ६, १४ ।

टेरि उठे बलराम स्याम कौं, आवहु जाहिँ[1] धेनु बन चारे।
सूर स्याम कर जोरि मातु सौं, गाइ चरावन कहत हहा रे ॥४२३॥१०४१॥

* राग बिलावल

मैया री मोहिँ दाऊ टेरत।
मोकौं बन-फल तोरि देत हैँ, आपुन गैयनि घेरत।
और ग्वाल सँग कबहुँ न जैहौं, वै सब मोहिँ खिझावत।
मैं अपने दाऊ सँग जैहौं, बन देखैँ सुख पावत।
आगैँ दै पुनि ल्यावत घर कौं, तू मोहिँ जान न देति।
सूर[2] स्याम जसुमति मैया सौं हा-हा करि कहै केति ॥४२४॥१०४२

⊛ राग सारंग

बोलि लियौ बलरामहिँ जसुमति।
लाल सुनौ हरि के गुन, काल्हिहिँ तैँ लँगरई करत अति।
स्यामहिँ जान देहि मेरैँ सँग, तू काहैँ डर मानति।
मैं अपने ढिग तैँ नहिँ टारौं जियहिँ प्रतीति न आनति।
हँसी महरि बल की बतियाँ सुनि, बलिहारी या मुख की।
जाहु लिवाइ सूर के प्रभु कौं, कहति बीर के रुख की ॥४२५॥१०४३॥

× राग नट

अति आनंद भए हरि धाए।
टेरत ग्वाल-बाल सब आवहु, मैया मोहिँ पठाए।

---

(१) धाइ—१, ११।

* (ना) जैतश्री। (के, क, र्का, पू, रा स्या) सारग।

(२) सूर स्याम गैयनि सौं अति हित खेलन सौं अति हेत—२, १६, १८, १६। सूर स्याम कहि जसुमति सो मोहि गैयन सो अति हेत—३।

⊛ (ना) गूजरी।

× (ना) देवगिरी। (क,रा) सारग।

उत तैं सखा हँसत सब आवत,[1] चलहु कान्ह बन देखहिं[2]।
बनमाला तुमकौं पहिरावहिं, धातु-चित्र तनु रेखहिं[3]।
गाइ लईं सब घेरि घरनि तैं, महर गोप के बालक।
सूर स्याम चले गाइ चरावन, कंस उरहिं के सालक॥४२६॥१०४४॥

बकासुर-बध

* राग सारंग

बन-बन फिरत चारत धेनु।
स्याम हलधर संग सँग बहु गोप-बालक-सेनु।
तृषित भए सब जानि मोहन, सखनि टेरत बेनु।
बोलि ल्यावहु सुरभि-गन, सब चलौ जमुन-जल देनु।
सुनत हीं सब हाँकि ल्याए, गाइ करि इक ठैन।
हेरि दै-दै ग्वाल-बालक, कियौ जमुन-तट गैन।
बकासुर रचि रूप माया, रह्यौ छल करि आइ।
चोंच इक पुहुमी लगाई, इक अकास समाइ।
आगैं बालक जात हे ते पाछैं आए धाइ।
स्याम सौं वै कहन लागे, आगैं एक बलाइ।
नितहिं आवत सुरभि लीन्हे, ग्वाल गो-सुत संग।
कबहुँ नहिं इहिं भाँति देख्यौ आजु कैसौ रंग।
मनहिं मन तब कृष्न भाष्यौ, यह बकासुर अंग।
चोँच फारि[4] बिदारि डारौँ, पलक मैं करौँ भंग।

---

(१) धावत—१६। (२) देखहु—१, २, ३, ६, ११, १४। (३) रेखहु—१, २, ३, ११, १३। (४) चीरि—२, ६, १६, १८, १६।
* (ना) धनाश्री।

निदरि चले गोपाल आगैं, बकासुर कैं पास ।
सखा सब मिलि कहन लागे, तुम न जिय की आस ।
अजहुँ नाहिँ डरात मोहन, बचे कितनैं गाँस ।
तब कह्यौ हरि, चलहु सब मिलि, मारि करहिँ विनास ।
चले सब मिलि, जाइ देख्यौ, अगम तन बिकरार ।
इत धरनि उत ब्योम कैं बिच, गुहा कैं आकार ।
पैठि बदन बिदारि डार्‌यौ, अति भए बिस्तार ।
मरत असुर चिकार पार्‌यौ, मार्‌यौ[1] नंद-कुमार ।
सुनत धुनि सब ग्वाल डरपे अब न उबरैं स्याम ।
हमहिँ बरजत गयौ, देखौ, किए कैसे काम ।
देखि ग्वालनि बिकलता तब, कहि उठे बलराम ।
बका-बदन बिदारि डार्‌यौ, अबहिँ आवत स्याम ।
सखा हरि तब टेरि लीन्हे, सबै आवहु धाय ।
चोंच फारि बका सँहारौ, तुमहु करहु सहाय ।
निकट आए गोप-बालक, देखि हरि सुख पाए ।
सूर प्रभु के चरित अगनित, नेति निगमनि गाए ॥४२७॥१०४५॥

* राग सारंग

ब्रज मैं को उपज्यौ यह भैया ।
संग सखा सब कहत परस्पर, इनके गुन अगमैया ।
जब तैं ब्रज अवतार धर्‌यौ इन, कोउ[2] नहिँ घात करैया ।

---

(१) तारि—२ ।
* (ना) गौरी ।

(२) को नहिँ घात तकैया—
२, ३ ।

तृनावर्त पूतना पछारी, तब अति रहे नन्हैया।
कितिक बात यह बका बिदारचौ, धनि जसुमति जिनि जैया।
सूरदास प्रभु की यह लीला, हम कत जिय पछितैया ॥४२८॥१०४६॥

* राग धनाश्री

बका बिदारि चले ब्रज कौं हरि।
सखा संग आनंद करत सब, अंग-अंग बन-धातु चित्र करि।
बनमाला पहिरावत स्यामहिँ बार-बार अँकवार भरत धरि।
कंस निपात करौगे तुमहीँ, हम जानी यह बात सही परि।
पुनि-पुनि कहत धन्य नँद जसुमति, जिनि इनकौँ जनम्यौ सो धनि घरि।
कहत इहै सब जात सूर प्रभु, आनँद-आँसु ढरत लोचन भरि ॥४२९॥१०४७॥

⊛ राग कान्हरौ

ब्रज-बालक सब जाइ तुरतहीँ, महर-महरि कैँ पाइ परे।
ऐसौ पूत जन्यौ जग तुमहीँ धन्य कोखि जिहिँ स्याम धरे।
गाइ लिवाइ गए बृंदाबन, चरत चलीँ जमुना-तट हेरि।
असुर एक खग-रूप धरि रह्यौ, बैठ्यौ तीर, बाइ मुख, घेरि।
चोंच एक पुहुमी करि राखी एक रह्यौ सो गगन लगाइ।
हम बरजत पहिलेहिँ हरि धायौ, बदन चीरि पल माँहिँ गिराइ।
सुनत नंद जसुमति चक्रित[1] चित चक्रित गोकुल के नर-नारि।
सूरदास प्रभु मन हरि लीन्हौ, तब जननी भरि लए अँकवारि ॥४३०॥
॥१०४८॥

* (ना) गौरी। (ना) परज। (१) सोचति चित—१, १७।

अघासुर-वध

* राग धनाश्री

‡ नंदराइ-सुत लाड़िले, सब-ब्रज-जीवन-प्रान ।
‡ बार-बार माता कहै, जागहु स्याम सुजान ।
जसुमति लेति बलाइ, भोर भयौ उठौ कन्हाई ।
संग लिए सब सखा, द्वार ठाढ़े बल भाई ।
सुंदर बदन दिखाइ कै, हरौ नैन कौ तापु ।
नैन कमल मुख धोइ कछु करौ कलेऊ आपु ।
माखन-रोटी लेहु सद्य दधि रैनि जमायौ ।
षटरस के मिष्टान्न, सु जेँवहु जो रुचि आयौ ।
मो पै लीजै माँगि कै, जोइ-जोइ भावै तोहिँ ।
सँग जेँवहु बलराम कौँ, रुचि उपजावहु मोहिँ ।
तब हँसि चितए स्याम, सेज तैँ बदन उघारयौ ।
मानहुँ पय-निधि मथत, फेन फटि चंद उजारयौ ।
सखा सुनत देखन चले, मानहुँ चंद[1] चकोर ।
जुगल कमल मनु इंदु पर, बैठि रहे अति भोर ।
तब उठि आए कान्ह, मातु जल बदन पखारयौ ।
बोलि उठे बलराम, स्याम कत उठे सबारयौ ।
दाऊ जू कहि, हँसि मिले, बाहँ गही बैठाइ ।
माखन-रोटी सद दही, जेँवत रुचि उपजाइ ।
जल अँचयौ, मुख धोइ, उठे बल-मोहन भाई ।

---

* (ना) रामकली । (क) बिलावल ।

‡ ये दो चरण (ना, स, जै, कॉ, पू, रा, स्या) के आरंभ मेँ नहीँ हैँ । किसी मेँ तीसरे चौथे, किसी मेँ पाँचवेँ छठेँ चरणों की जगह रक्खे गए हैँ ।

(१) नैन—१, ३, ६, ११, १४, १७ ।

गाइ लईं सब घेरि, चले बन कुँवर कन्हाई।
टेर सुनत बलराम की, आए बालक धाइ।
लै आए सब जोरि[1] कै, घर तैं बछरा गाइ।
सखनि कान्ह सौं कह्यौ, आजु बृंदाबन जैऐ।
जमुना-तट तृन बहुत, सुरभि-गन तहाँ चरैऐ।
ग्वाल गाइ सब लै गए, बृंदाबन समुहाइ।
अतिहिं सघन बन देखिकै, हरषि उठे सब गाइ।
कोउ टेरत, कोउ हाँकि सुरभि-गन, जोरि चलावत।
कोऊ हेरी देत, परस्पर स्याम सिखावत।
अंतरजामी कहत जिय, हमहिं सिखावत टेरि।
कान्ह[2] कहत अब गाइ जे गईं सु लीजै फेरि।
कोउ मुरली कोउ बेनु-सब्द, स्रृंगी कोउ पूरैं।
कृष्न कियौ मन ध्यान असुर इक बसत अँधेरैं[3]।
बालक बछरनि राखिहौं, एक बार लै जाउँ।
कछुक जनाऊँ अपुनपौ, अब[4] लौं रह्यौ सुभाउ।
असुर-कुलहिं संहारि, धरनि कौ भार उतारौं।
कपट रूप रचि रह्यौ दनुज, इहिं तुरत पछारौं।
गिरि समान धरि अगम तन, बैठ्यौ बदन पसारि।
मुख भीतर बन घन नदी, छल[5] माया करि भारि।

---

(१) घेरि कै—१, ११, १५। (२) स्याम कहत अब के गई (गए) पुनि धौं लीजौ फेरि—२, ६, ११, १५, १६, १८। कान्ह कहत अब के गइया सब लीजै पुनि धौं फेरि—६, १७। (३) अधूरै—१, २, ३, ६, ११, १४। (४) अचल रहौ (रहै) तिहिं ठाउँ—१६, १८, १९। (५) छंद—२, ३, ६, ११, १७।

पैठि गए मुख ग्वाल धेनु बछरा सँग लीने।
देखि महाबन[1] भूमि, हरे तृन-द्रुम कृत कीने।
कहन लगे सब अपुन मैं सुरभी चरैं अघाइ।
मानहुँ पर्वत-कंदरा, मुख सब गए समाइ।
जब मुख गए समाइ, असुर तब चाब[2] सकोरयौ।
अंधकार इमि भयौ मनहुँ निसि बादर जोरयौ[3]।
अतिहिं उठे अकुलाइ कै, ग्वाल बच्छ सब गाइ।
त्राहि-त्राहि करि कहि उठे, परे कहाँ हम आइ।
धीर-धीर कहि कान्ह, असुर यह, कंदर नाहीं।
अनजानत सब परे अघा-मुख-भीतर माहीं।
जिय लाग्यौ यह सुनत हीं, अब को सकै उबारि।
बातैं दूनी देह धरी, असुर न सक्यौ सम्हारि।
सबद करयौ आघात, अघासुर टेरि पुकारयौ।
रह्यौ अधर दोउ चाँपि, बुद्धि बल सुरति बिसारयौ।
ब्रह्म द्वार सिर[4] फोरि कै, निकसे गोकुलराइ।
बाहिर आवहु निकसि कै, मैं करि लियौ सहाइ।
बालक बछरा धेनु सबै मन अतिहिं सकाने।
अंधकार मिटि गयौ देखि जहँ-तहँ अतुराने।
आए बाहिर निकसि कै, मन सब कियौ हुलास।
हम अजान कत डरत हैं, कान्ह हमारैं पास।

---

(१) मया (माया)—२, ३, ४, ११, १७। (२) चोंच—१, १४। जाव—२। तारु—६, १७। (३) घेरयौ—१, ११। (४) फिर फाटि कै—१। सों फोरि कै—२।

धन्य कान्ह, धनि नंद, धन्य जसुमति महतारी।
धन्य लियौ अवतार, कोखि धनि, जहँ दैतारी।
गिरि-समान तन अगम अति, पन्नग की अनुहारि।
हम देखत पल एक मैं मार्‌यौ दनुज प्रचारि।
हरि हँसि बोले बैन, संग जौ तुम नहिँ होते ?
तुम सब कियौ सहाइ, भयौ तब कारज मोते।
हमहुँ तुमहुँ मिलि बैठि बन, भोजन करैँ[1] अघाइ।
बंसीबट भोजन बहुत, जसुमति दियौ पठाइ।
ग्वाल परम सुख पाइ, कोटि मुख करत प्रसंसा।
कहा बहुत जो भए, सपूतौ एकै बंसा।
चढ़ि बिमान सुर देखहीँ, गगन रहे भरि छाइ।
जय-जय धुनि नभ करत हैँ, हरषि पुहुप बरषाइ।
ब्रह्मा सुनी यह बात, अमर-घर-घरनि कहानी।
गोकुल लीन्हौ जन्म, कौन मैँ यह नहिँ जानी।
देखौँ इनकी खोज लै, सोच पर्‌यौ मन माहिँ।
सूर स्याम ग्वालनि लए, चले बंसीबट-छाहिँ ॥४३१॥१०४९॥

* राग सोरठ

गोबिँद चलत देखियत नीके।
मध्य गोपाल मंडली राजत, काँधैँ धरि लिए सीके।
बछरा-बृंद घेरि आगैँ करि, जन-जन स्रृंग बजाए।
जनु बन कमल सरोवर तजि कै, मधुप उनीँदे आए।

---

(१) करिए जाइ—१, ११, १५। करैँ बनाइ—२, १६।

* (ना) कल्यान।

बृंदाबन प्रवेसि अघ मारयौ, बालक जसुमति, तेरै ।
सूरदास प्रभु सुनत जसोदा, चितै बदन प्रभु केरै ॥४३२॥१०५०॥

* राग बिलावल

आजु जसोदा जाइ[1] कन्हैया महा दुष्ट इक मारयौ ।
पन्नग-रूप गिले सिसु गो-सुत इहिँ सब साथ उबारयौ ।
गिरि-कंदरा समान भयानक[2] जब अघ बदन पसारयौ ।
निडर गोपाल पैठि मुख-भीतर, खंड[3]-खंड करि डारयौ ।
याकैँ बल हम बदत न काहुहिँ, सकल भूमि तृन चारयौ ।
जीते सबै असुर हम आगैँ, हरि[4] कबहूँ नहिँ हारयौ ।
हरषि[5] गए सब कहत महरि सौं, अबहिँ अघासुर मारयौ ।
सूरदास[6] प्रभु की यह लीला ब्रज[7] कौ काज सँवारयौ ॥४३३॥१०५१॥

❀ राग नट

जसुमति सुनि-सुनि[8] चकित भई ।
मैँ बरजति बन जात कन्हैया, का धौँ करै दई ।
कहाँ-कहाँ तैँ उबरयौ मोहन, नैँकु न तऊ डरात ।
आपुन[9] कहा तनक सौ, बन मैँ, सुनौँ बहुत मैँ घात ।

---

* (ना) ईमन । (र्का, स्या) रामकली ।

(१) तेरे बालक इक अरिष्ट अति टारयौ—२ । तेरे बालक महा दुष्ट इक मारयौ—६, १७ । (२) भयौ बड—१, ३, ११, १५ । भयौ तन—२ । (३) वपु प्रचंड करि फारयौ—१६, १६ । (४) यह—१, ११ । वह—६, १७ । (५) बरष बितीत भयौ ता दिन कौ जबै अघासुर मारयौ—२ । (६) सूरदास प्रभु तुम्हरी महिमा—२ । (७) को को भुलइ न पारयौ—१, ३, ११ । को भूलै नहिँ पारयौ—६, १९ । को कोऊ भुलै न पारयौ—१४ ।

(ना) कल्यान ।

(८) कै— । (९) आपु जे कही तनक सो बातैँ सुनहु बनहु मैँ घात—१ ११ । आपुन कहा तनक सौ बातैँ सुनौ बनहू मैँ घात—२, ३ । आपुन कहा तनक सौ बालक, बातैँ सुनहु बहुत मैँ घात—६ ।

मेरौ कह्यौ सुनौ[1] जो स्त्रवननि कहति जसोदा खीझत।
सूर स्याम कह्यौ बन नहिँ जैहौं, यह कहि मन-मन रीझत॥४३४॥१०५२॥

* राग गौरी

† अघा मारि आए नँदलाल।
ब्रज-जुवती सुनि कै उठि धाईँ, घर-घर कहत फिरत सब ग्वाल।
निरखत बदन चकित भईँ सुंदरि, मनहीँ मन यह करि अनुमान।
कहतिँ परस्पर, सत्य बात यह, कौन करै इनको सरि आन!
येई हैँ रति-पति के मोहन, येई हैँ हमरे पति-प्रान।
सूर स्याम जननी-मन मोहत, बार-बार माँगत कछु खान॥४३५॥१०५३॥

ब्रह्मा-बालक-वत्स-हरण

* राग नटनारायन

‡ बिधि मनहीँ मन सोच पर्‌यौ।
गोकुल की रचना सब देखत, अति जिय माहिँ डर्‌यौ।
मैँ बिरंचि बिरच्यौ जग मेरौ, यह कहि गर्ब बढ़ायौ।
ब्रज-नर-नारि, ग्वाल-बालक, कहि, कौनैँ ठाटि रचायौ?
बृंदाबन, बट सघन बृच्छ तर, मोहन सबै बुलाए।
सखा संग मिलि करि बन-भोजन, बिधि मन भ्रम उपजाए।
धेनु रहीँ बन[2] भूलि कहूँ ह्वै, बालक भ्रमत न पाए।
यातैँ स्याम अतिहिँ अतुराने, तुरत तहाँ उठि धाए।
बालक-बच्छ हरे चतुरानन, ब्रह्म-लोक पहुँचाए।
सूरदास प्रभु गर्ब बिनासन, नव कृत फेरि बनाए॥४३६॥१०५४॥

---

(१) सुनै—२, ६, १४।
* (ना) कान्हरौ। (ना, के, क, पू) नट।
† यह पद (शा) में नहीँ है।
‡ यह पद (ल) में नहीँ है।
(२) बन मैं भूली ह्वै—१, ११।

* राग धनाश्री

† हरष भए नँदलाल बैठि तरु छाहँ के। ध्रुव।
बंसीबट अति सुखद, और द्रुम पास चहूँ हैं।
सखा लिए तहँ गए, धेनु बन चरतिं कहूँ हैं।
बैठि गए सुख पाइ कै, ग्वाल-बाल लिए साथ।
अति[1] आनँद पुलकित हिऐं, गावत हरि-गुन-गाथ।
अहिर लिए मधु-छाक, तुरत बृंदाबन आए।
ब्यंजन सहस प्रकार, जसोदा बनै[2] पठाए।
स्याम कह्यौ बन चलत हीं, माता सौं समुझाइ।
उत तैं वे आए सबै, देखत हीं सुख पाइ।
कान्ह देखि मधु-छाक, पुलकि अँग-अंग बढ़ायौ।
हँसि-हँसि बोले तबै, प्रेम सौं जननि पठायौ।
नीकैं पहुँचे आइ तुम, भलौ बन्यौ संजोग।
बार-बार कह्यौ सखनि सौं, आजु करैं सुख-भोग।
बन-भोजन बिधि करत, कमल के पात मँगाए।
तोरे पात पलास, सरस दोना बहु लाए।
भाँति-भाँति भोजन धरे, दधि-लवनी-मिष्टान्न।

---

* (ना) सारंग। (क) बिलावल।

† यह पद (क) मे नहीं है। (ना, स, क, जौ, का, रा, स्या) में एक ही चरण ध्रुव रूप से लिखा है। पर (वे, का, के, गो, पू) में दो-दो चरण ध्रुव रूप में पाए जाते हैं। वे इस प्रकार हैं।

हरष भए नँदलाल बैठि तरु छाहँ की। ग्वाल बाल सँग करत कुलाहल छाहँ (छाक) की—(वे, गो)। हरषि भए नँदलाल बैठि तरु छाह है। बंसीवट अति सुखद ओर चहुँ पास है—(का)। हरष भए नँदलाल बैठि तरु छाहँ घना की। ग्वाल बाल सब संग चले जु बाट जमुना की—(के, पू)।

इस संस्करण में प्रथमोक्त प्रतियों का अनुसरण किया गया है।

(१) काँवरि झोरी लए सखा हो आनि नवायो माथ—१४।
(२) बनहिं—१, २, ३, ११ दिए—१६।

बन फल लए मँगाइ कै, रुचि करि लागे खान।
बन-भोजन हरि करत संग मिलि सुबल सुदामा।
स्याम कुँवर परसेन महर-सुत अरु श्रीदामा।
स्याम सबनि मिलि खात हैं लै-लै कौर छुड़ाइ।
औरनि लेत बुलाइ ढिग, डहकि[1] आपु मुख नाइ।
ब्रह्मा देखि बिचारि सृष्टि[2] कोउ नई चलाई।
मोहिं पठयौ जिहिं सौंपि, ताहि कहिहौं कहा जाई।
देखौं धौं यह कौन है, बाल-बच्छ हरि लेउँ।
ब्रह्मलोक लै जाउँ[3] हरि, इहिं बिधि[4] करि दुख देउँ।
अंतरजामी नाथ, तुरत बिधि मन की जानी।
बालक द्वै दए पठै, धेनु बन कहूँ हिरानी।
जहाँ-तहाँ बन ढूँढ़ि कै, फिरि आए हरि-पास।
सखा[5] सबनि बैठारि कै, आपुन गए उदास।
हरि लै बालक-बच्छ, ब्रह्मलोकहिं पहुँचाए।
फिरि आए जो कान्ह, कहूँ कोऊ नहिं[6] पाए।
प्रभु तबहीं जान्यौ यहै, बिधि लै गयौ चोराइ।
जो[7] जिहिं रँग जिहिं रूप कौ, बालक बच्छ बनाइ।
तातैं कीने और ब्रह्म हृद-नाल उपायौ।
अपनौ करि तिहिं जानि कियौ ताकौ मन भायौ।

---

(१) आपु लेत मुख नाइ—२, ११। (२) कही—२। (३) जाउँगो—१, २, ६, ११, १४। (४) बुधि—१, ६, ११, १४। (५) स्याम सखनि—१, ११, १५। स्याम सबनि—३। (६) नाहिं बतायो—६, १७। (७) प्रभु तबहीं तेहिं रंग रूप के बालक बच्छ बनाइ—१४।

उद्धारन मारन छमी, मन हरि कीन्हौ ज्ञान।
अनजानैँ बिधि यह करी, नए रचे भगवान।
वहै बुद्धि वहै प्रकृति, वहै पौरुष तन सब के।
वहै नाउ, वहै भाउ, धेनु बछरा मिलि रब के।
स्याम कह्यौ सब सखनि सौँ, ल्यावहु गोधन घेरि।
संध्या कौ आगम[1] भयौ, ब्रज-तन हाँकौ फेरि।
सुनत ग्वाल, लै चले, धेनु ब्रज बृंदाबन तैँ।
कान्हहिँ बालक जानि डरे, सब ग्वाले मन तैँ।
मध्य किए लै स्याम कौँ, सखा भए चहुँ पास।
बच्छ-धेनु आगैँ किए[2], आवत करत बिलास।
बाजत बेनु बिषान, सबै अपनैँ रँग[3] गावत।
मुरली-धुनि, गो-रंभ, चलत पग धूरि उड़ावत।
मोर-मुकुट सिर सोहई, बनमाला पट पीत।
गो-रज मुख पर सोहई, मनहुँ चंद कन-सीत।
देखि हरषि ब्रजनारि, स्याम पर तन-मन वारतिँ।
इकटक रूप निहारि, रहीँ मेटत चित-आरति।
कहा कहौँ छबि आजु की, मुख मंडित खुर-धूरि।
मानौ पूरन चंद्रमा, कुहर रह्यौ आपूरि।
गोकुल पहुँचे जाइ, गए बालक अपनैँ घर।
गो-सुत अरु नर-नारि मिले, अति हेत लाइ गर।
प्रेम सहित वै मिलत हैं, जे[4] उपजाए आजु।

---

① समयो— ६, १७। ② करे—१६, १८। ③ मन—१६, १८। ④ जेउ (जे) सुत जायौ आज—१,२,११। जेउ सब जाए आज—१,१७।

जसुमति मिलि सुत सौँ कहति, रैनि करत किहिँ काज।
मैँ घर आवन कह्यौ, सखा सँग कोउ नहिँ आवैँ ।
देखत बन अति अगम डरौँ वै मोहिँ डरपावैँ ।
बार-बार उर लाइकै, लै बलाइ, पछिताइ ।
काल्हिहिँ तैँ वेई सबै, ल्यावैँ गाइ चराइ ।
यह सुनि कै हरि हँसे, काल्हि मेरी जाइ बलैया ।
भूख लगी मोहिँ बहुत, तुरतहीँ दै कछु मैया ।
माखन दीन्हौ हाथ कै, तब लौँ तुम यह खाहु ।
तातौ जल है घाम कौ, तनक तेल सौँ न्हाहु ।
तब जसुमति गहि बाहँ, तुरत हरि लै अन्हवाए ।
रोहिनि करि जेवनार, स्याम-बलराम बुलाए ।
जेँवत अति रुचि पावहीँ, परुसति माता हेत ।
जेँइ उठे अँचवन लियौ, दुहुँ कर बीरा देत ।
स्याम उनीँदे जानि, मातु रचि सेज बिछाई ।
तापर पौढ़े लाल अतिहिँ मन हरष बढ़ाई ।
अघ-मर्दन, बिधि-गर्ब-हत, करत न लागी बार ।
सूरदास प्रभु के चरित, पावत कोउ न पार ॥४३७॥१०५५॥

राग सारंग

† कह्यौ गोपाल चरत हैँ गो-सुत हम सब बैठि कलेऊ कीजै ।
सीतल छाहँ बृच्छ की सुंदर, निर्मल जल जमुना कौ पीजै ।
भोजन करत सखा इक बोल्यौ, बछरू कतहूँ दूरि गए ।

---

† यह पद (वे, शा, का, गो, जै) में है ।

जदुपति कह्यौ घेरि हौं आनौं, तुम जेँवहु निहचिंत भए।
चतुरानन बछरा लै गोए फिरि माधव आए तिहि ठाउँ।
बालक-बच्छ हरे लोकेस्वर, बार-बार टेरत लै नाउँ।
जान्यौ ब्रह्मा-छल मन मोहन, गोपी गाइ, बहुत दुख पैहैँ।
तजिहैँ प्रान सबै मिलि निस्चय, सुत जौ गृह कौं आजु न जैहैँ।
वाही भाँति, बरन, बपु वैसेहिँ, सिसु सब रचे नंद-सुत आन।
आगैँ बछ, पाछैँ ब्रज-बालक, करत चले मधुरैँ सुर गान।
पूरब प्रीति अधिक ताहू तैँ, करतीँ ब्रज-बनिता अरु धेनु।
सूरज प्रभु अच्युत ब्रज-मंडल, घरहीँ घर लागे सुख देनु॥४३८॥१०५६॥

* राग बिलावल

नंद महर के भावते[1], जागौ मेरे बारे[2]।
प्रात भयौ उठि देखिऐ, रवि किरनि उज्यारे।
ग्वाल-बाल सब टेरहीँ, गैया बन चारन।
लाल उठौ मुख धोइऐ, लागी बदन उघारन।
मुख तैँ पट न्यारौ कियौ, माता कर अपनैँ।
देखि बदन चकित भई, सौंतुष की सपनैँ।
कहा कहौँ वा रूप की, को बरनि बतावै।
सूर स्याम के गुन अगम, नँद-सुवन कहावै॥४३९॥१०५७॥

राग रामकली

† लालहिँ जगाइ बलि गई माता।
निरखि मुख-चंद-छबि, मुदित भई मनहिँ मन, कहत आधैँ बचन भयौ प्राता।

---

* (ना) विभास। (के, क,) सूहो। (कॉ) कल्यान।

(१) लाडिले—२, ३। (२) प्यारे—२, १६, १८, १९।

† यह पद केवल (क तथा रागकल्पद्रुम) में है।

नैन अलसात अति, बार-बार जम्हात, कंठ लगि जात, हरषात गाता।
बदन पोंछियौ जल जमुन सौं धोइ कै, कह्यौ मुसुकाइ, कछु खाहु ताता।
दूध औट्यौ आनि, अधिक मिसिरी सानि, लेहु माखन पानि प्रान-दाता।
सूर प्रभु कियौ भोजन बिबिध भाँति सौं, पियौ पय मोद करि घूँट साता॥४४०॥१०५८

* राग ललित

उठे नंद-लाल सुनत जननी मुख बानी।
आलस भरे नैन, सकल सोभा की खानी।
गोपी जन बिथकित ह्वै चितवतिँ सब ठाढ़ी।
नैन करि चकोर, चंद-बदन प्रीति बाढ़ी।
माता जल झारी लै, कमल-मुख पखारयौ।
नैन[1] नीर परस करत आलसहिँ बिसारयौ।
सखा द्वार ठाढ़े सब, टेरत हैँ बन कौँ।
जमुना[2] -तट चलौ कान्ह, चारन गोधन कौँ।
सखा सहित जेँवहु, मैँ भोजन कछु कीन्हौ।
सूर स्याम हलधर सँग[3] सखा बोलि लीन्हौ॥४४१॥१०५९॥

ॐ राग बिलावल

† दोउ भैया जेँवत माँ आगैँ।
पुनि-पुनि लै दधि खात कन्हाई, और जननि पै माँगैँ।
अति मीठौ दधि आजु जमायौ, बलदाऊ तुम लेहु।
देखौ[4] धौँ दधि-स्वाद आपु लै, ता पाछैँ मोहिँ देहु।

---

* (ना) रामकली। (के, क, काँ, पू, रा, स्या) बिलावल।
(१) नीर सरस—२,३। (२) जननी आइ वचन कह्यौ राम स्याम घन को—१। (३) सब—१,११,१५।
ॐ (ना) जैतश्री।
† यह पद (का) में नहीं है।
(४) दधि कौ स्वाद—१६,१८,१९।

बल मोहन दोउ जेँवत रुचि सौँ, सुख लूटति नँदरानी ।
सूर स्याम अब कहत अघाने, अँचवन माँगत पानी ॥४४२॥१०६०॥

* राग रामकली

† (द्वारैँ) टेरत हैँ सब ग्वाल कन्हैया, आवहु बेर भई ।
आवहु बेगि, बिलम जनि लावहु, गैया दूरि गईँ ।
यह सुनतहिँ दोऊ उठि धाए, कछु अँचयौ कछु नाहिँ ।
कितिक दूर सुरभी तुम छाँड़ो, बन तौ पहुँची नाहिँ ?
ग्वाल कह्यौ कछु पहुँची ह्वैहैँ, कछु मिलिहैँ मग माहिँ ।
सूरदास[1] बल मोहन भैया, गैयनि पूछत जाहिँ ॥४४३॥१०६१॥

✿ राग बिलावल

‡ बन पहुँचत सुरभी लई जाइ ।
जैहौ कहा सखनि कौँ टेरत, हलधर संग कन्हाइ ।
जेँवत[2] परखि लियौ नहिँ हमकौँ, तुम अति करी चँड़ाइ ।
अब हम जैहैँ दूरि चरावन, तुम सँग रहै बलाइ ।
यह सुनि ग्वाल धाइ तहँ आए, स्यामहिँ अंकम लाइ ।
सखा कहत यह नंद-सुवन सौँ, तुम सब के सुखदाइ ।
आजु चलौ बृंदाबन जैऐ, गैयाँ चरैँ अघाइ ।
सूरदास प्रभु सुनि हरषित भए, घर तैँ छाँक मँगाइ ॥४४४॥१०६२

राग बिलावल

§ आजु चरावन गाइ चलौ जू, कान्ह, कुमुद बन जैऐ ।

---

* (ना) गुनकली ।
† यह पद (का) में नहीं है ।
(1) स्याम—१, २, ३, ६, ११, १४, १७ ।
✿ (ना) देवगंधार ।
‡ यह पद (का) में नहीं है ।
(2) जेवत बेर भई कछु हमकौ—२, ३ ।
§ यह पद केवल (ल, शा) में है ।

सीतल कुंज कदम की छहियाँ, छाक छहूँ रस खैऐ ।
अपनी-अपनी गाइ ग्वाल सब, आनि करी इक ठौरी ।
धौरी, धूमरि, राती, रौंछी, बोल[1] बुलाइ चिन्हौरी ।
पियरी, मौरी, गोरी, गैनी, खैरी,[2] कजरी जेती ।
दुलही, फुलही, भौंरी, भूरी, हाँकि[3] ठिकाई तेती ।
बाबा नंद बुरौ मानैंगे, और जसोदा मैया ।
सूरजदास जनाइ दियौ है, यह कहिकै बल भैया ॥४४५॥१०६३॥

* राग बिलावल

† चले सब बृंदाबन समुहाइ ।
नंद-सुवन सब ग्वालनि टेरत, ल्यावहु गाइ फिराइ ।
अति आतुर ह्वै फिरे सखा सब, जहँ-तहँ आए धाइ ।
पूछत ग्वाल, बात किहिं कारन, बोले कुँवर कन्हाइ ।
सुरभी[4] बृंदाबन कौं हाँकौ, औरनि लेहु बुलाइ ।
सूर स्याम यह कही सबनि सौं, आपु चले अतुराइ ॥४४६॥१०६४॥

❀ राग धनाश्री

‡ गैयनि घेरि सखा सब ल्याए ।
देख्यौ कान्ह जात बृंदाबन, यातैं मन अति हरष बढ़ाए ।
आपुस मैं सब करत कुलाहल, धौरी, धूमरि धेनु बुलाए ।
सुरभी हाँकि देत सब जहँ-तहँ, टेरि-टेरि हेरी सुर गाए ।

---

(१) बोली बुलाही चौरी ।—४ । (२) कबरी—४ । (३) हेठकी निकही तेती—४ ।

* (ना) देवगिरी ।

† यह पद (का) में नहीं है ।

(४) सुरभीबृंद तहीं कौं हांकौ—१, ११, १४ । सुरभी-बृंद इतहिं कौं हांकौ—३, ६, १४, १५ ।

❀ (ना) देवगिरी । (कां) सारंग ।

‡ यह पद (का) में नहीं है ।

पहुँचे आइ बिपिन घन बृंदा, देखत द्रुम दुख सबनि[1] गवाए।
सूर स्याम गए अघा मारि जब, ता दिन तैं इहिं बन अब आए॥४४७॥१०६५

* राग नटनारायन

† चरावत बृंदाबन हरि[2] धेनु।
ग्वाल सखा सब संग लगाए, खेलत हैं करि चैनु।
कोउ गावत, कोउ मुरलि बजावत, कोउ बिषान, कोउ बेनु।
कोउ निरतत कोउ उघटि तार दै, जुरी ब्रज-बालक-सेनु।
त्रिबिध पवन जहँ बहत निसादिन[3] सुभग कुंज घन ऐनु।
सूर स्याम निज धाम बिसारत, आवत यह सुख लैनु॥४४८॥१०६६

⊛ राग धनाश्री

‡ बृंदाबन मोकौं अति भावत।
सुनहु सखा तुम सुबल, श्रीदामा, ब्रज तैं बन गौ-चारन आवत।
कामधेनु सुरतरु सुख जितने, रमा[4] सहित बैकुंठ भुलावत[5]।
इहिं बृंदाबन, इहिं जमुना-तट, ये सुरभी अति सुखद चरावत।
पुनि-पुनि कहत स्याम श्रीमुख सौं, तुम मेरैं मन अतिहिं सुहावत।
सूरदास सुनि ग्वाल चकृत भए, यह लीला हरि प्रगट दिखावत॥४४९॥१०६७

× राग बिलावल

§ ग्वाल सखा कर जोरि कहत हैं, हमहिं स्याम तुम जनि बिसरावहु।
जहाँ-जहाँ तुम देह धरत हौ, तहाँ-तहाँ जनि चरन छुड़ावहु।

---

(१) सब बिसराए—६,१७। * (ना, के, क, र्का, पू) सारग। (स्या) धनाश्री। † यह पद (का) में नहीं है। (२) अघ—६। (३) निसानित—११। निरतर—१६। ⊛ (ना, र्का) सारंग। ‡ यह पद (का) में नहीं है। (४) सभा—१, ३, ११, १२। (५) बुलावत—१, ११, १२। लगावत—२। × (ना) श्री। § यह पद (का) में नहीं है।

ब्रज तैं तुमहिं कहूँ नहिं टारौं, यहै पाइ मैं हूँ ब्रज आवत।
यह सुख नहिं कहुँ भुवन चतुर्दस, इहिं ब्रज यह अवतार बतावत।
और गोप जे बहुरि चले घर, तिनसौं कहि ब्रज[1] छाक मँगावत।
सूरदास प्रभु गुप्त बात सब, ग्वालनि सौं कहि-कहि सुख पावत ॥४५०॥१०६८

* राग बिलावल

† कन्हैया हेरी दै। ||

सुभग साँवरे गात की मैं, सोभा कहत लजाउँ।
मोर-पंख सिर-मुकुट की, मुख[2]-मटकनि की बलि जाउँ।
कुंडल लोल कपोलनि झाईं[3] बिहँसनि चितहिं चुरावै।
दसन-दमक, मोतिनि लर ग्रीवा, सोभा कहत न आवै।
उर पर पदिक कुसुम बनमाला, अंगद[4] खरे बिराजैं।
चित्रित बाहँ पहुँचिया पहुँचे, हाथ मुरलिया छाजै।
कटि पट पीत, मेखला मुखरित, पाइनि नूपुर सोहै।
आस-पास बर ग्वाल-मंडली, देखत त्रिभुवन मोहै।
सब मिलि आनँद प्रेम बढ़ावत, गावत गुन गोपाल।
यह सुख देखत स्याम-संग कौ, सूरदास सब ग्वाल ॥४५१॥१०६९॥

⊛ राग बिलावल

‡ कान्ह[5] काँधे कामरिया कारी, लकुट लिए कर घेरै हो।

---

(१) मुख—१, ११।

* (ना) नट।

† यह पद (का) में नहीं है।

|| यह चरण (पू) में नहीं है।

(२) मृदु मुसुकनि की—२।

(३) की छबि—२।

(४) अँग धुकधुकी बिराजै—१, ११, १५। अग देखियै बिराजै—३। अग दिखाइ बिराजै—१७।

⊛ (ना) कल्यान। (के, गो, क, जौ, कां, पू, म्या) टोड़ी।

‡ यह पद (का) में नहीं है।

(५) कान्ह कांधे कामरि (कामरी) लकुट लिए (लए) कर घेरै हो—१,२,३,६,११,१४।

बृंदाबन मैं गाइ चरावै, धौरी धूमरि टेरै हो।
लै लिवाइ ग्वालनि[1] बुलाइ कै, जहँ-तहँ बन-बन हेरै हो।
सूरदास प्रभु सकल लोक-पति, पीतांबर कर फेरै हो ॥४५२॥१०७०

राग टोड़ी

† सोई हरि काँधे कामरि, काछ किए नाँगे पाइनि, गाइनि टहल करैं।
त्रिभुवनपति दिसिपति, नर-नारी-पति, पंछिनिप्रति, रबि-ससि जाहि डरैं।
सिव-बिरंचि ध्यान धरत, भक्त त्रिविध ताप हरत, तिनहिं हित बपु धरैं।
सूरदास जिनके गुन, निगम नेति गावत, तेइ बन-बन मैं बिहरैं ॥४५३॥१०७१॥

* राग नट

छाक लेन जे ग्वाल पठाए।
तिनसौं पूछति[2] महरि जसोदा, छाँड़ि कान्ह[3] कित आए।
हमहिं पठाइ दिए नँद-नंदन, भूखे अति अकुलाए।
धेनु चरावत हैं बृंदाबन, हम इहिं कारन आए।
यह कहि ग्वाल गए अपनैं गृह, बन की खबरि सुनाए।
सूर स्याम बलराम प्रातहीं अधजेंवत उठि धाए ॥४५४॥१०७२॥

राग सारंग

‡ और ग्वाल सबही गृह आए, गोपालहिं बेर भई।
अतिहिं अबेर भई लालन कौं, अजहूँ नहिं छाक गई।
तबहीं तैं भोजन करि राख्यौ, उत्तम दूध जमाइ।
ना जानौं धौं कान्ह कौन बन, चारत बेर लगाइ।

---

(१) गौवनि—३,६,१४,१७।

† यह पद (ल, का) में नहीं है। इसका पाठ भिन्न-भिन्न प्रतियों में छंद की दृष्टि से अस्तव्यस्त था। इस संस्करण में इसे सबकी सहायता से यथासंभव शुद्ध किया गया है।

* (ना) सारंग। (का) टोडी।

(२) बूझति—१,११, १५, १७। (३) कन्हैयहिं—१, ११, १५, १७।

‡ यह पद (का) में नहीं है।

राज करैं वै धेनु तुम्हारी, नंदहिं कहति सुनाइ ।
|| पंच[1] की भीख सूर बल-मोहन, कहति जसोमति माइ ॥४५५॥१०७३

राग सारंग

† जोरति छाक प्रेम सौं मैया ।
ग्वालनि बोलि लियौ अधजेंवत, उठि दौरे दोउ भैया ।
तबही तैं मैं[2] भोजन कीन्हौ, चाहति दियौ पठाइ ।
भूखे भए आजु दोउ भैया, आपुहिं बोलि मँगाइ ।
सद माखन साजौ दधि मीठौ, मधु मेवा पकवान ।
सूर स्याम कौं छाक पठावति, कहति ग्वारि सौं जान ॥४५६॥१०७४॥

* राग सारंग

‡ घरही की इक ग्वारि बुलाई ।
छाक समग्री सबै जोरि कै, वाकैं कर दै तुरत पठाई ।
कह्यौ ताहि बृंदाबन जैऐ, तू जानति सब प्रकृति कन्हाई ।
प्रेम सहित लै चली छाक वह, कहँ ह्वैहैं भूखे दोउ भाई ।
तुरत जाइ बृंदाबन पहुँची, ग्वाल-बाल कहुँ कोउ न बताई ।
सूर स्याम कौं टेरत डोलति, कित हौ लाल छाक मैं लाई॥४५७॥१०७५

❀ राग टोड़ी

§ आजु[3] कौन बन गाइ चरावत, कहँ धौं भई अबेर ।

|| (के, पू) में इस अंतिम चरण के पूर्व ये दो प्रक्षिप्त चरण हैं—

भूखे भए आजु दोउ भैया, आपुहिं बोलि मँगाई । सद माखन साजो दधि मीठो, मधु मेवा पकवान मिठाई ॥

(1) तब के भूखे—१६। तेज की भूख—१८।

† यह पद (का) में नहीं है।

(2) जेंवन कौ बन मैं—१६, १६। मैं जेंवन कीन्हौ—१८।

* (ना) नट।

‡ यह पद (का) में नहीं है।

❀ (ना, गो) सारंग।

§ यह पद (का) में नहीं है।

(3) आजु धौं कौने बन चरा-

2/3/08

बैठे कहँ, सुधि लेउँ कौन बिधि, ग्वारि करति अवसेर ।
बृंदा आदि सकल बन ढूँढ़्यौ, जहँ गाइनि की टेर ।
सूरदास[1] प्रभु दुरत दुराए, डुँगरनि ओट सुमेर ॥४५८॥१०७६॥

* राग सारंग

छाक लिए सिर, स्याम बुलावति ।
ढूँढ़त फिरति ग्वारिनी[2] हरि कौं, कितहूँ भेद न पावति ।
टेर सुनति काहू की स्रवननि, तहाँ तुरत उठि धावति ।
पावति नहीं स्याम बलरामहिं, ब्याकुल ह्वै पछतावति ।
बृंदाबन फिरि-फिरि देखति है, बोलि उठे तहँ ग्वाल ।
सूर स्याम बलराम इहाँ हैं[3], छाक लेहु किन लाल ॥४५९॥१०७७॥

राग कान्हरौ

† फिरत[1] बननि बृंदाबन, बंसीबट, सँकेत बट
नागर कटि काछे, खौरि केसरि की किए ।
पीत बसन चँदन तिलक, मोर-मुकुट कुँडल-झलक
स्याम-घन-सुरंग-छलक, यह छबि तन लिए ।
तनु त्रिभंग, सुभग अंग, निरखि लजत अति अनंग
ग्वाल-बाल लिए संग, प्रमुदित सब हिए ।
सूर स्याम अति सुजान, मुरली-धुनि करत गान
ब्रज-जन-मन कौं महान, संतत सुख दिए ॥४६०॥१०७८॥

वत गाय कहा धौं भइ है बड़ी बेर—३ । आजु कौने बन गाइ चरावत, गए भई बडी बेर—१६ ।

(१) सूरदास प्रभु रसिक-सिरोमनि कैसे दुरत डूँगर ओट सुमेर—२ । सूरदास प्रभु कैसे दुरिहै दिनकर ओट सुमेर—१६ ।

* (ना) गुनकली ।

(२) ग्वारि नीके करि—१, ११ । (३) हैं—६, १७ ।

† यह पद (ना, स, का, वृ, कां, रा, स्या) में नहीं है। इसका पाठ कुछ ऐसा अस्तव्यस्त था कि छंद भी ठीक नहीं रहा। अतः एक-आध शब्द अर्थानुसार घटा-बढ़ाकर उसे ठीक करने की चेष्टा की गई है ।

※ राग सारंग

† हरि कौं टेरत फिरति गुवारि ।
आइ लेहु तुम छाक आपनी, बालक बल बनवारि ।
आजु कलेऊ करत बन्यौ नहिं, गैयनि सँग उठि धाए ।
तुम[1] कारन बन छाक जसोदा, मेरैं हाथ पठाए ।
यह बानी जब सुनी कन्हैया, दौरि गए तिहिँ काजु ।
सूर स्याम कह्यौ नीकैं आई, भूख बहुत ही आजु ॥४६१॥१०७९

※ राग सारंग

‡ बहुत फिरी तुम काज कन्हाई ।
टेरि-टेरि मैं भई बावरी, दोउ भैया तुम रहे लुकाई ।
जे सब ग्वाल गए ब्रज घर कौं, तिनसौं कहि तुम छाक मँगाई ।
लवनी[2] दधि मिष्टान्न जोरि कै जसुमति मेरैं हाथ पठाई ।
ऐसी भूख माँझ तू ल्याई तेरी किहिँ बिधि करौं बड़ाई ।
सूर स्याम सब सखनि पुकारत, आवत क्यौं न, छाक है आई॥४६२॥१०८०

राग सारंग

§ गिरि पर चढ़ि गिरिवर-धर टेरे ।
अहो सुबल, श्रीदामा भैया, ल्यावहु गाइ खरिक कैं नेरे ।
आई छाक अबार भई है, नैंसुक धैया पिएउ सबेरे ।
सूरदास प्रभु बैठि सिला पर, भोजन करैं ग्वाल चहुँ फेरे॥४६३॥१०८१

※ (ना) विलावल ।
† यह पद (का) में नहीं है ।
(१) यह कहि ताहि जसोदा पठयौ, हरि बल ग्वाल पठाए—६ ।
※ (ना) ललित ।
‡ यह पद (का) में नहीं है ।
(२) माषन—२ । नैनू—१७ ।
§ यह पद केवल (वे, ल, श्या, गो, जौ) में है ।

※ राग नट

† बिहारी लाल, आवहु, आई छाक।
भई अबार, गाइ बहुरावहु, उलटावहु दै हाँक।
अर्जुन, भोजऽरु सुबल, सुदामा, मधुमंगल इक ताक।
मिलि बैठे सब जेँवन लागे, बहुत बने कहि पाक।
अपनो पत्रावलि सब देखत, जहँ-तहँ फेनि[1] पिराक।
सूरदास प्रभु खात ग्वाल सँग, ब्रह्मलोक यह[2] धाक॥४६४॥१०८२

⊛ राग सारंग

आई छाक, बुलाए स्याम।
यह सुनि सखा सबै जुरि आए, सुबल, सुदामा अरु श्रीदाम[3]।
कमल-पत्र दोना पलास के, सब आगैँ धरि परुसत जात।
ग्वाल-मंडली मध्य स्याम-घन, सब मिलि भोजन रुचि करि[4] खात।
ऐसी भूख माहिँ यह भोजन, पठै दियौ है जसुमति मात।
सूर स्याम अपनौ नहिँ जेँवत, ग्वालनि कर तैँ लै-लै खात॥४६५॥१०८३

× राग सारंग

‡ सखनि संग जेँवत हरि छाक।
प्रेम सहित मैया दै पठई, सबै बनाई है इक ताक।
सुबल, सुदामा, श्रीदामा मिलि, सब सँग भोजन रुचि करि[6] खात।

---

* (ना) ललित। (का) सारंग।

† यह पद (का) में नहीं है।

(१) भए फराक—२। पानि फिराक—६। (२) जिहिँ—२, १६, १८, १६।

⊛ (ना) नट।

(३) श्रीराम—६। (४) सौं—६, ११, १७। (५) करि—१, ११, १५, १७, १६।

× (ना) भैरवी।

‡ यह पद (का) में नहीं है।

(६) सौं—१, ११।

ग्वालनि कर तैं कौर[1] छुड़ावत, मुख लै मेलि सराहत जात।
जो सुख कान्ह करत बृंदाबन सो सुख नहीं लोकहूँ सात।
सूर स्याम भक्तनि बस ऐसे ब्रह्म[2] कहावत हैं नँद-तात ॥४६६॥१०८४

राग सारंग

† ग्वाल[3] मंडली मैं बैठे मोहन बट की छाँह, दुपहर बेरिया सखानि संग लीने।
एक[4] दूध, फल, एक झगरि चबेना लेत, निज-निज कामरी के आसननि कीने।
जेँवतऽरु[5] गावत हैं सारँग की तान कान्ह, सखनि के मध्य छाक लेत कर छीने।
सूरदास[6] प्रभु कौं निरखि, सुख रीझि-रीझि, सुर सुमननि बरषत रस भीने॥४६७॥
॥ १०८५ ॥

* राग सारंग

‡ ग्वालनि कर तैं कौर छुड़ावत।
जूठौ लेत सबनि के मुख कौ, अपनैं मुख लै नावत।
षटरस के पकवान धरे सब, तिनमैं रुचि नहिं लावत।
हा-हा करि-करि माँगि लेत हैं कहत मोहिं अति भावत।
यह महिमा येई पै जानत, जातैं आपु बँधावत।
सूर स्याम सपनैं नहिं दरसत, मुनि जन ध्यान लगावत॥४६८॥१०८६

---

(१) छाक—२, ६, १७। (२) ब्रजहिं—१, ११, १५।

† यह पद (का) में नहीं है। इसका पाठ और छंद सब प्रतियों में अस्तव्यस्त हैं। अर्थ पर ध्यान रखते हुए इसको प्रतियों की सहायता से सुछंद बनाने का प्रयत्न किया गया है। नमूने के लिये कुछ पाठांतर दे दिए जाते हैं—

(३) ग्वाल मंडली में बैठे हैं मोहन वड की छहियाँ दुपहरि की बिरियाँ सग लीने—१, २, ६, ११, १४, १५, १६ १७, १८। (४) एक मथत दोहनी दूध एक बँटावत फल चबैने। एकनि कर हरि झगरि लेत ये सबनि आपने कमर के आसन कीने—१। (५) जेंवत हैं अरु गावत कान्ह सारंगी की तान लेत सखनि के मध्य विराजत छाक लेत कर छीने—१, १५, १६, १७, १८। (६) सूरदास प्रभु कौं सुख देखत सुर रीझि रीझि सुमननि बरषत रस भीने—२, ३, १४।

* (ना) नट।

‡ यह पद (का) में नहीं है।

* राग सारंग

† ब्रज-बासी पटतर कोउ नाहिँ ।
ब्रह्म, सनक, सिव ध्यान न आवैँ[1], इनकी जूठनि लै-लै खाहिँ ।
धन्य नंद धनि जननि जसोदा, धन्य जहाँ अवतार कन्हाइ ।
धन्य-धन्य बृंदाबन के तरु, जहँ बिहरत त्रिभुवन के राइ ।
हलधर कहत छाक जेँवत सँग मीठौ लगत सराहत जाइ ।
सूरदास प्रभु बिस्वंभर हरि सो[2] ग्वालनि के कौर अघाइ॥४६६॥१०८७

✿ राग सारंग

‡ सीतल छहियाँ स्याम हैँ, बैठे, जानि भोजन की बिरियाँ ।
बाम भुजाहिँ सखा अँस दीन्हे, दच्छिन कर द्रुम-डरियाँ ।
गाइनि[3] घेरि, टेरि बलरामहिँ, ल्यावहु कहत अबिरियाँ ।
सूरदास प्रभु बैठि कदम तर, खात[4] दूध की खिरियाँ ॥४७०॥१०८८॥

× राग सारंग

§ जेँवत छाक गाइ बिसराई ।
सखा श्रीदामा कहत सबनि सौँ, छाकहि मैँ तुम रहे भुलाई ।
धेनु नहीँ देखियत कहुँ नियरैँ, भोजन ही मैँ साँझ कराई ।
सुरभी काज जहाँ-तहँ धाए, आपु तहाँ उठि चले कन्हाई ।

---

* (ना) नट ।

† यह पद (का) मेँ नहीँ है ।

① पावत—१, ३, ६, ११, १७ । ② ते—१, २, ३, ६, ११, १७ ।

✿ (के) नट नारायन ।

‡ इस पद का पाठ छंद की दृष्टि से कुछ बेठिकाने था । सब प्रतियों की सहायता से उसे ठीक कर देने की चेष्टा की गई है ।

③ चलियै जू नैक गाइनि घेरै टेरै जु बलराम सौं कहत बोलि लेहु आपनी अबरियाँ (बेरियाँ)—१, ११, १५, १७, १६ । ④ गइया को दूध निकरिया—१ । गैया कोऊ दूध की थरिया—१६ ।

× (ना) गौरी ।

§ यह पद (का) मेँ नहीँ है ।

ल्याए ग्वाल घेरि गो, गो-सुत, देखि स्याम मन हरष बढ़ाई ।
सूरदास प्रभु कहत चलौ घर, बन मैं आजु अबार लगाई[1] ॥४७१॥१०८९

राग गौरी

† ब्रजहिं चलौ आई अब साँझ ।
सुरभी सबै लेहु आगैं करि, रैनि होइ जनि[2] बनहीं माँझ ।
भली कही यह बात कन्हाई, अतिहीं सघन अरन्य उजारि ।
गैया हाँकि चलाईं ब्रज कौं और ग्वाल सब लए पुकारि ।
निकसि गए बन तैं जब[3] बाहिर, अति आनंद भए सब ग्वाल ।
सूरदास प्रभु मुरलि बजावत, ब्रज आवत नटवर गोपाल ॥४७२॥१०९०

* राग कल्यान

‡ सुंदर स्याम, सुँदर बर लीला, सुंदर बोलत बचन रसाल ।
सुंदर चारु कपोल बिराजत, सुंदर उर जु बनो बनमाल ।
सुंदर[4] चरन सुँदर हैं नख मनि, सुंदर[5] कुंडल हेम जराल ।
सुंदर मोहन नैन चपल किए, सुंदर ग्रीवा बाहु बिसाल ।
सुंदर मुरली मधुर बजावत, सुंदर[6] हैं मोहन गोपाल ।
सूरदास जोरी[7] अति राजति ब्रज कौं आवत सुंदर चाल[8] ॥४७३॥१०९१

राग कल्यान

§ सुंदर स्याम[9], सखा सब सुंदर, सुंदर बेष धरे गोपाल ।
सुंदर पथ, सुंदर-गति आवन, सुंदर मुरली-सब्द रसाल ।

---

(१) कराई—१, ११, १५ ।

† यह पद (का) में नहीं है ।

(२) पुनि—१, ३, ६, ११, १७, १९ । (३) सब—१, ११, १५, १७, १९ ।

* (क) बिलावल । (रा) बिहागरा ।

‡ यह पद (ना, स, बृ, के, कॉ, पू, स्या) में नहीं है ।

(४) सुंदर बदन नैन सुंदर मुख—१८ । (५) सुंदर है कुंडल मकराल—१, ११, १५ । (६) सुंदर राधे हैं गोपाल—१४ । (७) दपति—१४ । (८) बाल—१४ ।

§ यह पद (शा) में नहीं है ।

(९) गाइ—२, ३, १९ ।

सुंदर लोग, सकल ब्रज सुंदर, सुंदर[1] हलधर सुंदर चाल ।
सुंदर बचन[2], बिलोकनि सुंदर, सुंदर गुन सुंदर बनमाल ।
सुंदर गोप, गाइ अति सुंदर, सुंदरि[3]-गन सब करतिँ बिचार ।
सूर स्याम सँग सब सुख सुंदर, सुंदर भक्त-हेत अवतार ॥४७४॥१०९२॥

राग बिलावल

† सुंदर ढोटा कौन कौ, सुंदर मृदुबानी ।
कहि समुझायौ ग्वालिनी, जायौ नँदरानी ।
सुंदर मूरति देखि कै, घन घटा लजानी ।
सुंदर नैननि[4] हरि लियौ कमलनि कौ पानी ।
सुंदरता तिहुँ लोक की, जसुमति[5] ब्रज आनी ।
सूरदास पुर[6] मैं भई, सुंदर रजधानी ॥४७५॥१०९३॥

* राग गौरी

‡ देखि सखी बन तैं जु बने ब्रज आवत हैं नँद-नंदन ।
सिखी सिखंड सीस, मुख मुरली, बन्यौ तिलक, उर[7] चंदन ।
कुटिल अलक मुख, चंचल लोचन, निरखत अति आनंदन ।
कमल मध्य मनु द्वै खग खंजन बँधे आइ उड़ि फंदन ।
अरुन अधर-छबि दसन बिराजत, जब गावत कल[8] मंदन ।
मुक्ता मनौ नील-मनि-मय-पुट, धरे भुरकि बर[9] बंदन ।

---

(१) सुंदर नंद मनोहर बाल (लाल)—२, ३, ६, १८। सुंदर नंद महर के बाल—१६, १६। (२) बदन—१, ११, ०६। (३) सुंदर गुन—१, २, ३, ६, ११, १७।

† यह पद केवल (वे, गो) में है।

(४) नैन निहारि लियौ—१। (५) ब्रज पुर मैं—१, ११। (६) जसुमति—१, ११।

* (ना, गो, कां) कल्यान।

‡ यह पद (शा, रा) में नहीं है।

(७) अति—२। (८) सुर—१६। (९) कुछ—१६।

गोप बेष गोकुल गो चारत हैँ हरि असुर-निकंदन ।
सूरदास प्रभु सुजस बखानत नेति नेति श्रुति छंदन ॥४७६॥१०६४॥

† सुनि सखि वे बड़भागी मोर ।
जिनि पाँखनि कौ मुकुट बनायौ, सिर धरि नंदकिसोर ।
ब्रह्मादिक सनकादि महामुनि, कलपत दोउ कर जोर ।
बृंदाबन के तृन न भए हम, लगत चरन कैँ छोर ।
बड़ौ भाग नँद-जसुमति कौ है, कोऊ ठहर न और ।
सूरदास गोपिन हित-कारन, कहियत माखन-चोर ॥४७७॥१०६५॥

* राग केदारौ

‡ सोभा कहत कही नहिँ आवै ।
अँचवत अति आतुर[1] लोचन-पुट, मन[2] न तृप्ति कौँ पावै ।
सजल मेघ घनस्याम सुभग बपु, तड़ित बसन बनमाल[3] ।
सिखि-सिखंड, बन[4]-धातु बिराजत, सुमन सुगंध प्रवाल ।
कछुक कुटिल कमनीय सघन अति[5], गो-रज मंडित केस ।
सोभित मनु अंबुज पराग-रुचि-रंजित मधुप सुदेस ।
कुंडल[6]-किरनि कपोल लोल छबि, नैन कमल-दल-मीन ।
प्रति-प्रति अंग[7] अनंग-कोटि-छबि, सुनि सखि परम प्रबीन ।
अधर मधुर मुसुक्यानि मनोहर[8] करति मदन मन हीन ।
सूरदास जहँ दृष्टि परति है, होति तहीँ लवलीन ॥ ४७८॥१०६६ ॥

---

† यह पद केवल (ल) मेँ है ।

* (के, पू) कान्हरा ।

‡ यह पद (ल, शा, का) मेँ नहीँ है ।

(१) आदर—१, २, ११ । मनसिज—२ । (२) मन न रूप को पावै—१, ११ । त्रपित न कबहूँ पाव—३ । मन तिरपित नहिँ पावै—६, १७ । (३) उर माल—१, ३, ११ । (४) तन—१, ३, ११ । (५) सिर—१, ११, १४, १७ । (६) कुडल लोल कपोलनि की छबि नवल कमल दल मीन—६, १७ । (७) अग अंग कोटिक छबि—१, २, ३, ११ । (८) कोटि—१, ११ ।

राग गौरी

† मेरे नैन निरखि सुख पावत ।
संध्या समय गोप गोधन सँग बन तैं बनि ब्रज आवत ।
उर गुंजा बनमाल, मुकुट सिर, बेनु रसाल बजावत ।
कोटि किरनि-मनि मुख परकासित, उड़पति कोटि लजावत ।
नटवर रूप अनूप छबीलौ, सबहिनि कैं मन भावत ।
गोप-सखा सब बदन निहारत, उर आनँद न समावत ।
चंदन खौरि, काछनी काछे, देखत ही मन भावत ।
सूर स्याम नागर नारिनि कौं, बासर-बिरह नसावत ॥४७९॥१०९७॥

* राग कान्हरौ

‡ आजु बने बन तैं ब्रज आवत ।
नाना रंग सुमन की माला, नंद-नँदन-उर पर छबि पावत[1] ।
संग गोप गोधन-गन लीन्हे, नाना गति कौतुक उपजावत ।
कोउ गावत, कोउ नृत्य करत, कोउ उघटत कोउ[2] करताल बजावत ।
राँभति गाइ बच्छ हित सुधि करि, प्रेम उमँगि थन दूध चुवावत ।
जसुमति बोलि उठी हरषित ह्वै, कान्हा धेनु चराए आवत ।
इतनी कहत आइ गए मोहन, जननी दौरि हिए लै लावत ।
सूर स्याम के कृत्य, जसोमति, ग्वाल बाल कहि प्रगट सुनावत ॥४८०॥१०९८

❀ राग गौरी

§ मैया बहुत बुरौ बलदाऊ ।
कहन लग्यौ बन बड़ौ तमासौ, सब मौड़ा[3] मिलि आऊ ।

---

† यह पद (वे, ना, स, गो, क, जै, पू) में है ।

* (ना) परज । (रा) मलार ।

‡ यह पद (का) में नहीं है ।

(1) छावत—३ । (2) कोऊ ताल—१, २, ११ ।

❀ (ना) केदारौ ।

§ यह पद (का, के, पू) में नहीं है ।

(3) बालक—१६ ।

मोहूँ कौँ चुचकारि गयौ लै, जहाँ सघन बन झाऊ।
भागि चलौ, कहि, गयौ उहाँ तैँ, काटि खाइ[1] रे हाऊ।
हौँ[2] डरपौँ, काँपौँ अरु रोवौँ, कोउ नहिँ धीर धराऊ।
थरसि गयौँ नहिँ भागि सकौँ, वै भागे जात अगाऊ।
मोसौँ कहत मोल कौ लीनौ, आपु कहावत साऊ।
सूरदास बल बड़ौ चबाई, तैसेहिँ मिले सखाऊ॥४८१॥१०९९॥

* राग नट

हरि की लीला कहत न आवै।
कोटि ब्रह्मांड छनहिँ मैँ नासै, छनही मैँ उपजावै।
बालक-बच्छ ब्रह्म हरि लै गयौ, ताकौ गर्ब नवावै[3]।
ऐसौ पुरुषारथ सुनि जसुमति, खीझति फिरि समुझावै[4]।
सिव सनकादि अंत नहिँ पावैँ, भक्त-बछल कहवावै[5]।
सूरदास प्रभु गोकुल मैँ, सो, घर-घर गाइ चरावै॥४८२॥११००॥

❁ राग सारंग

† ब्रह्मा बालक-बच्छ हरे।
आदि अंत प्रभु अंतरजामी, मनसा तैँ जु करे।
सोइ रूप वै बालक गो-सुत, गोकुल जाइ भरे[6]।
एक बरष निसि-बासर रहि सँग, काहु न जानि परे।
त्रास भयौ अपराध आपु लखि, अस्तुति करत खरे।
सूरदास स्वामी मनमोहन, तामैँ[7] मन न धरे॥४८३॥११०१॥

---

(१) खाइहै—१,११। खाइगो—२। (२) हौं डरपौं कांपों रोऊँ अति—२।
* (ना) केदारो।

(३) नसावै—६, १४, १७। (४) पछितावै—१, ११, १५। (५) सु कहावै—२।
❁ (ना) भोपाली।

† यह पद (ल, का के, प) में नहीं है।
(६) परे—१, २, ११, १५। धरे—३। (७) तातें—२, ११।

राग कल्यान

† मैं तौ जे हरे हैं, ते तौ सोवत परे हैं, ये करे हैं कौनैं आन, अँगुरीनि दंत दै रह्यौ।
पुरुष[1] पुरान आनि कियौ चतुरानन, कै सोई प्रभु पूरन प्रगट इहाँ ह्वै रह्यौ ?
उतै देखि धावै, इत आवै, अचरज पावै, सूर सुरलोक ब्रजलोक एक ह्वै रह्यौ।
बिवस ह्वै हार मानी, आपु आयौ नकवानी[2], देखि गोप-मंडली कमंडली चितै रह्यौ।
॥४८४॥११०२॥

* राग नट

‡ तब हरि हरयौ बिधि कौ गर्ब।
बच्छ-बालक लै गयौ धरि, तुरत कीन्हे सर्ब।
ब्रह्म लोक दुराइ आयौ, चरित देखन आप।
बच्छ-बालक देखि कै, मन करत पश्चात्ताप[3]।
तब गयौ बिधि लोक अपनैं, दृष्टि कै फिरि आइ।
जानि जिय अवतार पूरन, परयौ पाइनि धाइ।
बहुत मैं अपराध कीन्हौ, छमा कीजै नाथ।
जानि मैं यह नहीं कीन्हौ, जोरि[4] कह्यौ दोउ हाथ।
बच्छ-बालक आनि सन्मुख, सरन-सरन पुकारि।
सूर प्रभु के चरन गहि-गहि[5], कहत राखि मुरारि ॥४८५॥११०३॥

⊛ राग धनाश्री

§ ब्रज-ब्यौहार निरखि कै ब्रह्मा कौ अभिमान गयौ।

---

† यह पद केवल (म, वृं, कां, श्या) में है।

(१) पूरन—। (२) मगवानी —७। भगवानी—१६। मनवानी—३, १६।

* (ना) सोरठि।

‡ यह पद (ल, पू) में नहीं है।

(३) बहु विधि ताप—२। विधि बहु ताप—१६। (४) जोरि कर कै रह्यौ माथ—१, ३, ६, ११, १४। जोरि कै रह्यौ हाथ—१६।

(५) कहि निकट राखि मुरारि—१, ३, ६, ११। कह्यौ निकट राखि मुरारि—१४।

⊛ (ना) नाइकी।

§ यह पद (ल, का, के, पू) में नहीं है।

गोपी ग्वाल फिरत सँग चारत, हौं हूँ क्यौं न भयौ।
व्यंजन बर कर[1] बर पर राखत, ओदन मधुर दह्यौ।
आपुन खात खवावत औरनि, कौन बिनोद ठयौ।
सखा संग पय-पान करावत अपनैं हाथ लयौ।
संकर ध्यान धरत जुग बीते, यह रस तौ न दयौ।
अहो भाग, अहो भाग नंद-सुत, तप कौ पुंज लियौ।
लीला[2] सुभग सूर के प्रभु की, ब्रज मैं गाइ जियौ ॥४८६॥११०४॥

* राग जैतश्री

बदत[3] बिरंचि, बिसेष सुकृत ब्रज-बासिन के।
श्री[4] हरि तिनकैं बेष, सुकृत ब्रज-बासिन के।
ज्योति रूप, जगनाथ[5], जगत-गुरु, जगत-पिता, जगदीस।
जोग-जग्य-जप-तप-ब्रत[6] -दुर्लभ, सो हरि गोकुल ईस।
इक-इक रोम बिराट किए[7] तन, कोटि-कोटि ब्रह्मंड।
सो लीन्हौ अवछंग जसोदा, अपनैं भरि भुज-दंड।
जाकैं उदर लोक-त्रय, जल-थल, पंच तत्व चौखानि।
सो बालक ह्वै झूलत पलना, जसुमति भवनहिँ आनि।
छिति मिति त्रिपद करी करुनामय, बलि छलि दियौ पतार।
देहरि उलँघि सकत नहिँ, सो अब खेलत नंद दुवार।
अनुदिन[8] सुर-तरु, पंच सुधा रस, चिंतामनि, सुर धेनु।

---

(१) अँगुरीनि—२, ३, १६। (२) लीला सुभग सूर की ब्रज मैं सब कोउ गाइ जियौ—१, ११। * (का) गौरी। (३) कौन सुकृत इन ब्रज-बासिन को बदत बिरंचि बिसेष—१४। (४) श्री हरि जिनके हेत प्रगटे मानुष वेष—१४। ध्रुव। (५) ब्रज धाम—३। जगधाम—६, १७। (६) मैं—१, २, ३, ११। मुनि—१४। (७) कोटि—१, २, ३, ६, १७। (८) अनदिन स्रवत सुधारस पचम चिंतामनि सी धैन—२।

सो तजि, जसुमति कौ पय पीवत, भक्तनि कौं सुख देनु ।
रबि-ससि-कोटि कला[1] , अवलोकत त्रिबिध ताप छय जाइ।
सो अंजन कर लै सुत-चच्छुहिं[2] आँजति जसुमति माइ ।
दाता भुक्ता, हरता-करता, बिस्वंभर जग जानि ।
ताहि लाइ माखन की चोरी, बाँध्यौ जसुमति रानि ।
बदत बेद-उपनिषद, छहौं रस अपैं भुक्ता नाहिं ।
गोपी ग्वालनि के मंडल मैं हँसि-हँसि जूठनि खाहिं ।
कमला-नायक, त्रिभुवन[3] -दायक, दुख-सुख जिनकैं हाथ ।
काँध कमरिया, हाथ[4] लकुटिया, बिहरत बछरनि साथ ।
बकी, बकासुर, सकट, तृनाब्रत, अघ, प्रलंब[5] , बृषभास ।
कंस-केसि कौं वह गति दीनी, राखे चरन निवास ।
भक्त-बछल प्रभु पतित-उधारन, रहे सकल भरि पूर ।
मारग रोकि रह्यौ द्वारैं परि, पतित-सिरोमनि सूर ॥४८७॥११०५

राग मलार

† बिनवै चतुरानन कर[6] जोरे ।
तुव प्रताप जान्यौ नहिं प्रभु जू, करैं[7] अस्तुति लट छोरे ।
अपराधी, मति-हीन, नाथ हौं, चूक परी निज भोरे[8] ।
हम कृत दोष छमौ करुनामय, ज्यौं भू परसत ओरे ।
जुग-जुग बिरद यहै चलि आयौ, सत्य कहत अब होरे ।
सूरदास प्रभु पछिले खेवा[9] , अब न बनै मुख मोरे ॥४८८॥११०६॥

---

(१) कला भव से लोचन त्रिविध तिमिर भजि जात—२ १६, १८, १९ । (२) के चछु—३ । (३) वैकुंठदायक—१६, १८, १९ । (४) काँख—१, ३, ११ । (५) धेनुक—१४ ।

† यह पद केवल (वे, ना, ल, शा, का, गो, जै) में है ।

(६) कहि भोरैं—१ । (७) करि अस्तुति कर जोरैं—१ । (८) धोरै—१ । (९) लेखे—१, ६, १५ ।

राग सारंग

† माधौ मोहिँ करौ बृंदाबन-रेनु ।
जिहिँ चरननि डोलत नँद-नंदन, दिन-प्रति बन-बन चारत धेनु ।
कहा भयौ यह देव-देह धरि, अरु ऊँचैँ पद पाऐँ ऐनु ।
सब जीवनि लै उदर माँझ प्रभु, महा प्रलय-जल करत हौ सैनु ।
हम तैँ धन्य सदा वै तृन-द्रुम, बालक-बच्छ-बिषानऽरु बेनु ।
सूर स्याम जिनकैँ सँग डोलत, हँसि बोलत, मथि पीवत फेनु॥४८९॥११०७

* राग सारंग

ऐसैँ बसिऐ ब्रज की बीथिनि ।
ग्वारनि के पनवारे चुनि-चुनि, उदर भरीजै सीथिनि ।
पैँड़े के सब बृच्छ बिराजत, छाया परम[1] पुनीतनि ।
कुंज-कुंज-प्रति लोटि-लोटि, ब्रज[2]-रज लागै रँग-रीतनि ।
निसि दिन निरखि जसोदा-नंदन, अरु जमुना-जल पीतनि ।
परसत सूर होत तन पावन, दरसन करत अतीतनि॥४९०॥११०८

* राग सारंग

धनि यह बृंदाबन की रेनु ।
नंद-किसोर चरावत गैयाँ, मुखहिँ बजावत बेनु ।
मन-मोहन कौ ध्यान धरैँ जिय, अति सुख पावत चैनु ।
चलत कहाँ मन और[3] पुरो तन, जहाँ कछु लैन न दैनु ।

---

† यह पद (ना, शा, ब्र, कां, पू, रा, श्या) में नहीं है ।
* (ना) विहागरौ ।

(१) पत्र—३ । (२) रति—१, ६, ११ । रज—३ ।
(ना) काफी ।

(३) बसत पुरातन (पुरीतन)-१, ६, ११, १६, १७, १८ ।

इहाँ रहहु जहँ जूठनि[1] पावहु, ब्रजबासिनि कैं ऐनु।
सूरदास ह्याँ की सरवरि नहिँ, कल्पबृच्छ सुर-धेनु ॥४६१॥११०६॥

बाल-वत्स-हरन की दूसरी लीला * राग धनाश्री

ब्रज की लीला देखि, ज्ञान बिधि कौ गयौ[2]।
यह[3] अति अचरज मोहिँ, कहा कारन ठयौ ॥टेक॥
त्रिभुवन नायक भयौ, आनि गोकुल अवतारी।
खेलत ग्वालनि संग, रंग आनंद मुरारी।
घर-घर तैँ छाकैँ चलीँ मानसरोवर-तीर।
नारायन[4] भोजन करैँ, बालक संग अहीर।
ब्यंजन सकल मँगाइ, सखनि के आगैँ राखे।
खाटे मीठे स्वाद, सबै रस लै-लै चाखे।
रुचि[5] सौँ जेँवत ग्वाल सब, लै-लै आपुन खात।
भोजन कौ सब स्वाद लै, कहत परस्पर बात।
देखत गन-गंधर्व, सकल सुरपुर के बासी।
आपुस मैँ सब कहत हँसत, येई अबिनासी।
देखि सबै अचरज भए कह्यौ ब्रह्मा सौँ जाइ।
जाकौँ अबिनासी कहत, सो ग्वारनि सँग खाइ।
यह सुनि ब्रह्मा चले, तुरत बृंदाबन आए।
देखि सरोवर सजल, कमल तिहिँ मध्य सुहाए।

---

(१) पावहु निसि दिन ब्रज-बासिनि की रेनु—१६।

* (ना) परज। (क) बिलावल।

(२) भयौ भारी—१, २, ११, १५, १६। गयौ भारी—३।

(३) इस चरण के स्थान पर १, २, ११, १५, १६ में यह चतुर्थ चरण है। "सोभित सग ब्रज बाल लाल गोवर्द्धनधारी।"

(४) नँदनंदन के सँग चले बालक सखा अहीर—३, ४, १४, १७।

(५) पहलैँ सबनि खवाइ कै पाछैँ आपुन खात—२, १८, १६।

परम सुभग जमुना बहै, तहँ बहै त्रिबिध समीर।
पुहुप लता-द्रुम देखि कै, थकित भए मति-धीर।
अति रमनीक कदंब-छाहँ-रुचि परम सुहाई।
राजत मोहन मध्य अवलि बालक छबि पाई।
प्रेम-मगन ह्वै परस्पर, भोजन करत गोपाल।
ल्यावहु गो-सुत घेरि कै प्रभु पठए द्वै ग्वाल।
बन उपबन सब ढूँढ़ि सखा हरि पै फिरि आए।
बछरा भए अदृष्ट, कहूँ खोजत नहिँ पाए।
सबै सखा बैठे रहौ, मैं देखौं धौं जाइ।
बच्छ-हरन जिय[1] जानि प्रभु, आपु गए बहराइ।
जब गोबिँद गए दूरि, बालकनि हर्‍यौ बिधाता।
लै हैं तुरत मँगाइ आपु, जो हैं जग-त्राता।
ब्रह्म-लोक ब्रह्मा गए, लै बालक बछ संग।
प्रभु की लीला गम नहीँ, कियौ गर्ब अति अंग।
तब चिंतामनि चितै चित्त इक बुद्धि बिचारी।
बालक बच्छ बनाइ रचे वेही उनिहारी।
करत कुलाहल सब[2] गए, ब्रज घर अपनैं धाइ।
अति[3] आदर करि-करि लए अपनी-अपनी माइ।
ब्रह्मा कियौ बिचार, जाइ ब्रज गोकुल देखौं।
करिहैं सोक सँताप, धाइ पितु-मातहिँ पेखौं।

---

(१) प्रभु जानि कै उठे धाइ अकुलाइ —१, १८, १९। (२) ब्रज गए आप अपने घर माहिँ—१९। (३) सबहुनि अति आदर किए काहू के भ्रम नाहिँ—१९।

अति[1] आतुर ह्वै बिधि चले, घर-घर देख्यौ आइ।
साँझ कुतूहल होत है, जहँ-तहँ दुहियत गाइ।
यह गोकुल किधौं और किधौं मैं ही चित[2] भूल्यौ।
ये अबिनासी होइँ, ज्ञान मेरौ भ्रम झूल्यौ।
अंतरजामी जानि धौं गो[3]-सुत ल्याए जाइ।
जगत पितामह[4] संभ्रम्यौ, गयौ लोक फिरि धाइ।
देख्यौ जाइ जगाइ बाल गो-सुत जहँ राख्यौ।
बिधि[5] मन चक्रित भयौ बहुरि ब्रज कौं अभिलाख्यौ।
छिन भूतल छिन लोक निज[6], छिन आवै छिन जाइ।
ऐसे बीते बरष दिन, थकित भए बिधि[7]-पाइ।
तब[8] जान्यौ हरि प्रगट ज्ञान मन मैं जब आयौ।
धिग-धिग मेरी[9] बुद्धि, कृष्न सौं बैर बढ़ायौ।
लै गो-सुत गोपाल-सिसु सरन गयौ ह्वै साधु।
चारौं मुख अस्तुति करत, छमौ मोहिं अपराधु।
अनजाने मैं[10] करी बहुत तुमसौं बरियाई।
ये मेरे अपराध छमहु, त्रिभुवन के राई।
ज्यौं बालक अपराध सत[11], जननी लेति सम्हारि।
सरन गएँ राखति सदा, औगुन सकल बिसारि।
जोरे[12] उदित खद्योत ताहि क्यौं तिमिर नसावै ?

---

(१) आए तहँ विधता चले--१, ३, ११, १५। (२) मति--१, ६, ११, १५ भ्रम--२, ३, ४, १४, १७। (३) हरे वच्छ ल आए--१, ३, ४, १४। (४) पिता के भ्रम भयौ--१६। (५) फरि मन में संताप--१६। (६) में--१, ३, ११, १४। कैं--२, १६। (७) द्विज राइ--२, १६। (८) तब हरि प्रगट्यौ जानि ज्ञान चित में तब आयौ--१, ११। तब चितयौ हरि चरन ज्ञान जब मन में आयौ--२, १६। (९) मेरो जनम--६, १७। (१०) यह करी मैं जु--१, ६। (११) सब--१६। (१२) ज्यौं खद्योत उदोत होइ कहा तिमिर नसावै--२, १६।

दीपक[1] बहुत प्रकास, तरनि सम क्यौं कहि आवै ?
मैं ब्रह्मा इक लोक कौ, ज्यौं गूलर-फल[2] -जीव।
प्रभु[3] तुम्हरे इक रोम-प्रति, कोटिक ब्रह्मा सीव।
मिथ्या यह संसार और मिथ्या यह माया।
मिथ्या है यह देह कहौ[4] क्यौं हरि बिसराया।
तुम जाने बिन जीव सब, उतपति प्रलय समाहिँ।
सरन[5] मोहिँ प्रभु राखिए चरन-कमल की छाहिँ।
करहु[6] मोहिँ ब्रज रेनु देहु बृंदाबन बासा।
माँगौं यहै प्रसाद और[7] मेरैं नहिँ आसा।
जोइ भावै सोइ करहु तुम, लता सिला[8] द्रुम, गेहु।
ग्वाल[9] गाइ कौ भृत करौ, मानि सत्य ब्रत एहु।
जो दरसन नर नाग अमर सुरपतिहुँ न पायौ।
खोजत जुग गए बीति अंत मोहूँ न लखायौ।
इहिँ[10] ब्रज यह रस नित्य है, मैं अब समुझ्यौ आइ।
बृंदाबन रज ह्वै रहौं, ब्रह्म लोक न सुहाइ।
|| माँगत बारंबार सेष ग्वालनि कौ पाऊँ।
|| आपु लियौ कछु जानि, भच्छ करि उदर पुराऊँ।
अब मेरैं निज ध्यान यह रहौं[11] जूठ नित खाइ।

---

(१) दीपक भयो प्रकास कहा सूरज सुचि पावै—१६। (२) विच—१, ११। सम—३। (३) तुम्हरे इक इक रोम मैं—२, १६। (४) जाहि तैं—२, १६। (५) तात कृपा करि राखिए—१६। (६) कीज ब्रज की रेनु रहौं पद अबुज पासा—२, १६। (७) देहु बृंदावन बासा—२, १६। (८) सलिल—१, ३, ६, ११ १६। (९) इन ग्वारनि के सँग रहौं—१६। (१०) माया रस ब्रज भूमि मैं मैं देख्यौ है आई—१६।

|| इन दो चरणों के स्थान पर (ना), (रा), (श्या) में ये दो चारण हैः—
माँगौं यहै प्रसाद संग ग्वालनि कौ पाऊँ। छाड़ौं लोक-प्रभुत्व चतु मुख तव गुन गाऊँ।

(११) सेऊँ तुम्हरे पाइ—१६।

और बिधाता कीजियै, मैं नहिं[1] छाँड़ौं पाइ।
तब बोले प्रभु आपु, बचन मेरौ अब मानौ।
और[2] काहि बिधि करौं, तुमहिं तैं कौन सयानौ।
तुम[3] ज्ञाता सब धर्म के, तुमतैं सब संसार।
मेरी माया अति अगम, कोउ न पावै पार।
श्री[4] मुख बानी कहो बिलँब अब नैंकु न लावहु।
ब्रज परिकर्मा करहु देह कौ पाप[5] नसावहु।
बिदा करे निज लोक कौं इहि बिधि करि मनुहार।
करि अस्तुति ब्रह्मा चले हरि[6] दीन्हौ उर हार।
|| धनि बछरा धनि बाल जिनहिं तैं दरसन पायौ।
|| उर मेरौ भयौ धन्य कृष्न माला पहिरायौ।
|| धनि जसुमति जिन बस किए, अबिनासी अवतारि।
|| धनि गोपी जिनकैं सदन, माखन खात मुरारि।
¶ धनि गोपी धनि ग्वाल, धन्य ये ब्रज के बासी।
¶ धन्य जसोदा नंद भक्ति-बस किए अबिनासी।
¶ धनि गो-सुत धनि गाइ ये, कृष्न चरायौ आपु।
¶ धनि कालिंदी मधुपुरी, दरसन नासै पापु।
मथुरा आदि अनादि देह[7] धरि आपुन आए।
धनि[8] देवै बसुदेव पुत्र तुम माँगे पाए।

---

(१) रचै जु सृष्टि बनाई—१८, १६। (२) जो जाकौ अधिकार तासु कौ सोइ प्रमानौ—२, १८, १६। (३) तुम कर्ता कर्म धर्म के तुमहीं करौ संसार—२, १६। (४) बेगि जलज सुत जाहु फेरि जिनि गोकुल आवहु १८, १६। (५) ताप—३। कलह—१६। (६) दै कृष्णहिं उपहार—१६।

|| ये चार पाठ (ना), (रा), (श्या) में नहीं हैं।

¶ ये चार चरण (स), (का) में नहीं हैं।

(७) भक्ति जातें चलि आई—२, १८, १६। (८) ब्रजवासी हैं धन्य गीत (कीर्ति) जिनकी विधि गाई—२, १६।

|| चारि बदन मैं कह कहौं, सहसानन[1] नहिं जान ।
|| गाइ[2] चरावत ग्वाल सँग करत नंद की आन ।
|| जोगी जन अवराधि फिरत जिहिं ध्यान लगाए ।
|| ते ब्रजबासिनि संग फिरत अति प्रेम बढ़ाए ।
बृंदाबन ब्रज[3] कौ महत कापै बरन्यौ जाइ ।
चतुरानन[4] पग परसि कै लोक गयौ सुख पाइ ।
हरि लीला[5] अवतार पार सारद नहिं पावै ।
सतगुरु-कृपा-प्रसाद[6] कछुक तातैं कहि आवै ।
सूरदास कैसे कहै हरि-गुन कौ बिस्तार ।
सेष सहस मुख रटत[7] है तऊ न पावै पार ॥४६२॥१११०॥

राग गौरी

आजु हरि धेनु चराए आवत ।
मोर-मुकुट बनमाल बिराजत, पीतांबर फहरावत ।
जिहिं-जिहिं भाँति ग्वाल सब बोलत, सुनि स्रवननि मन राखत ।
आपुन टेर लेत ताही[8] सुर, हरषत पुनि[9] पुनि भाषत ।
देखत नंद-जसोदा-रोहिनि, अरु देखत ब्रज-लोग ।
सूर स्याम गाइनि सँग आए मैया लीन्हे रोग ॥४६३॥११११॥

* राग गौरी

माँगि लेहु जो भावै प्यारे ।
बहुत भाँति मेवा सब मेरैं षटरस[10] ब्यंजन न्यारे ।

|| ये पाद (ना), (रा), (श्या) में नहीं हैं ।

(१) तुम्हरी महिमा गाइ--१४ । (२) सहसानन निसि दिन रट तऊ न गाई जाई—१४ । (३) कौ महातम--२, १६ । (४) वच्छ हरन लीला भई कछु जस कहियत गाइ---२, १८, १६ । (५) लीन्हो-१, ३, ६, ११, १४ । जनम करम बिस्तार---२, १६ । (६) प्रताप--६, ११, १४, १७ । (७) जपत—१, ३, ६, ११, ,१५ । (८) नान्हे--१, ३, ६, ११, १४, १६ । (९) मुख--१, ६, ११, १५, १६ ।

* (ना) देवगिरी ।

(१०) षट रस के प्रकार है न्यारे--१, २, ३, ६, ११, १४ ।

सबै जोरि राखति हित तुम्हरैं मैं जानति तुम बानि।
तुरत मथ्यौ दधि माखन आछौ, खाहु देउँ सो आनि।
माखन दधि लागत अति प्यारौ, और न भावै मोहि।
सूर जननि माखन-दधि दीन्हौ, खात हँसत[1] मुख जोहि ॥४६४॥१११२॥

राग आसावरी

† सुनि मैया, मैं तौ पय पीवौं मोहिं अधिक रुचि आवै री।
आजु सबारैं धेनु दुही मैं, वहै दूध मोहिं प्यावै री।
और धेनु कौ दूध न पीवौं, जो करि कोटि बनावै री।
जननी कहति दूध धौरी कौ, पुनि पुनि सौंह करावै री।
तुम तैं मोहिं और को प्यारौ, बारंबार मनावै री।
सूर स्याम कौं पय धौरी कौ माता हित सौं ल्यावै री ॥४६५॥१११३॥

* राग गौरी

‡ आछौ दूध पियौ मेरे तात।
तातौ लगत बदन नहिं परसत, फूँक देति है मात।
औटि[2] धर्‌यौ है अबहीं मोहन, तुम्हरैं हेत बनाइ।
तुम पीवौ, मैं नैननि देखौं, मेरे कुँवर कन्हाइ।
दूध अकेली धौरी कौ यह,[3] तन कौं अति हितकारि।
सूर स्याम पय पीवन लागे, अति तातौ दियौ डारि ॥४६६॥१११४॥

---

(1) हेत—२। सतत—३।
† यह पद (का) में नहीं है।
* (ना) जैतश्री। (के) आसावरी।
‡ यह पद (का) में नहीं है।
(2) (श्या) में इस चरण के स्थान पर यह चरण है—बहुत जतन करि कै राख्यौ यह तुम कारन बल भाई। (3) है—१, ६, ११, १७।

* राग बिहागरौ

† देखत[1] पय पीवत बलराम।

तातौ लगत डारि तुम दीन्हौ, दावानल अँचवत[2] नहिँ ताम।
कबहूँ रहत मौन धरि जल मैँ, कबहूँ फिरत बँधावत दाम।
कबहुँ अघासुर बदन समाने, कबहुँ अँध्यारैँ जात न धाम।
कबहुँ करत बसुधा सब त्रैपद, कबहुँ देहरी उलँघि न जाइ।
षट-दस-सहस गोपिका बिलसत, बृंदाबन रस[3]-रास रमाइ।
यहै जानि अवतार धरत ब्रज, सुर-नर-मुनि यह भेद न पाइ।
राजा छोरि बंदि तैँ ल्याए, तिहूँ लोक मैँ बिदित बड़ाइ।
जुग-जुग ब्रज अवतार लेत प्रभु[4], अखिल लोक ब्रह्मांड के नाथ।
येई गोपी येई ग्वाल यहै सुख यह लीला कहुँ तजत न साथ।
येई कान्ह यहै बृंदाबन यहै जमुना येई कुंज-बिहार।
यहै बिहार करत निसि[5]-बासर, येई हैँ जन[6] के प्रतिपार।
येई हैँ श्रीपति भुव नायक, येई हैँ करता संसार।
रोम-रोम-प्रति अंड कोटि रचे, मुख चूमति जसुमति कहि बार।
इन कंसहिँ कै बार सँहार्यौ, धार्यौ ब्रह्म कृष्न अवतार।
माखन खात चुराइ घरनि तैँ, बहुत बार भए नंद-कुमार।

---

* (ना) देवगिरी। (क) बिलावल।

† यह पद (का) मे नही है। इस पद तथा 'बलि बलि चरित गोकुल राइ' इत्यादि पद को श्रीसूरदासजी ने श्रीबलरामजी की उक्ति मे रक्खा है। इन दोनों में कुछ ऐसी घटनाओं का समावेश है जो भगवान् के कृष्णावतार की उन लीलाओं से भी सबधित है जो प्रस्तुत अवतार में अब तक घटित नही हुई। कुछ समीक्षक इन्हें काल-विरुद्ध मान सकते हैं। परतु सूरदासजी की भावना के अनुसार, जिसे उन्होंने 'बहुत बार भए नदकुमार' पक्ति मे पूरा प्रगट भी किया है—इसमे कोई असंगति नही आती।

(१) पय पीवत देखत बलराम—२, ३, ११, १४। (२) पीवत—१, ११। (३) निसि—३, ६, १४, १७। (४) हरि—३, ६, १४,। (५) नित ही नित—२, ३, ६, १(?), १७। (६) ब्रज—३।

आदि अंत कोऊ नहिँ जानत, हरता-करता सब संसार।
सूरदास प्रभु बाल-अवस्था तरुन वृद्ध कौ करै निवार ॥४६७॥१११५॥

* राग केदारौ

† बलि[1] बलि चरित गोकुलराइ।
दवानल कौ पान कीन्हौ, पियत दूध सिराइ।
पूतना के प्रान सोखे,[2] आपु उर लपटाइ।
कहत जननी दूध डारत, खिझत कछु अनखाइ।
धर्‍यौ गिरिवर, दोहनी कर धरत बाहँ पिराइ।
सकट भंजन, परसि तिय-कुच कठिन लागत पाइ।
तृनाब्रत आकास तैं पटक्यौ सिला पर[3] जाइ।
डरत लाल हिँडोल झूलत, हरैँ[4] देत झुलाइ।
बकासुर की चोँच फारी, सखनि[5] प्रगट दिखाइ।
कीर पिँजरैँ गहत अँगुरी, ललन लेत भजाइ।
बिना दीपक, सदन[6] सूनैँ कबहुँ धरत न पाइ।
अघासुर-मुख पैठि निकसे, बाल बच्छ छुड़ाइ[7]।
लिख्यौ काजर नाग द्वारैँ[8], स्याम देखि डराइ।
नचत[9] काली-नाग फन पर सस ताल बजाइ।
जमल अर्जुन तोरि तारे, हृदय प्रेम बढ़ाइ।
हठत[10] तोरि पलास पल्लव देहु, देत दिखाइ।

---

* (ना) विभास। (क, कां, स्या) रामकली। (रा) नट।
† यह पद कुछ प्रतियों में दशम स्कंध के आरभ मेँ मिलता है।
(१) अदभुत—२, १६। (२) लीन्हे—१, ११। (३) पर्‍यौ आइ—२, ३, १६। (४) खरे—२, ३, ६, १४, १६। (५) सवै दिष्टि—१, ११। (६) सदन महियाँ तहाँ—१, ११। घर अँधेरेँ स्याम—२। (७) जिवाइ—२, ३, १४, १६। (८) कौरैँ—१, ११, १६। (९) सहस फन पर निरत कीनौ—२, १८। (१०) झटकि पात—१, ११। कहति मात—२।

हरे बालक बच्छ नव कृत, हेत दौरी माइ ।
चरत[1] धेनु न मिलीँ तिनकौं द्रुमनि ढूँढ़त जाइ ।
बृषभ[2] -गंजन, मथन-केसी, हने पूँछ फिराइ ।
भजत सखनि समेत मोहन, देखि ब्याई गाइ ।
गोप-नारी-संग मोहन, कियौ रास बनाइ ।
कहति जननी ब्याह कौं तब रहत[3] बदन दुराइ ।
कहा बरनौं कोटि रसना हिऐँ बुधि उपजाइ ।
सूर[4] प्रभु की अगम महिमा देखि अगनित भाइ ॥४६८॥१११६॥

धेनुक-वध

* राग भैरव

† सखा कहन लागे हरि सौं तब । चलौ ताल-बन कौं जैऐ अब ।
ता बन मैं फल बहुत सुहाए । वैसे हम कबहूँ नहिँ खाए ।
धेनुक असुर तहाँ रखवारी । चलौ कह्यौ हँसि बल बनवारी ।
बिहँसत हरि सँग चले गुवाला । नाचत गावत गुन-गोपाला ।
सोयौ हुतौ असुर तरु-छाया । सुनत सब्द[5] तुरतहिँ[6] उठि धाया ।
हलधर कौं देख्यौ तिन आए । हाथ दोऊ बल करि जु चलाए ।
पकरि पाइँ बलभद्र फिरायौ । मारि ताहि[7] तरु माहिँ गिरायौ ।
और बहुत ताकौ परिवारा । हरि-हलधर मिलि सबकौं मारा ।
ग्वालनि बन-फल रुचि सौं खाए । बहुरौ बृंदाबनहिँ सिधाए ।
हरि-हलधर-छबि बरनि न जाई । सूरदास यह लीला गाई ॥४६९॥१११७॥

---

(१) फूटि पसु जब रहत बन मैं—२, १६ । (२) बृषभ केसी हतन कीन्यौ हनै बच्छ पराइ—२ । (३) लजत—२, १६ । हँसत—६, १७ । (४) सूर के प्रभु रसिक हरि पर अंग अंग बिहाइ (बिभाइ)—१, ११ । सूर बाल विनोद बलकृत अग अग सुभाइ—३, ६, १७ ।

* (ना) सूहौ । (कां) बिलावल ।

† यह पद (का, के, पू) में नहीं है ।

(५) सोर—१, ३, ११, १५ । (६) तरु तैं—१, ११ । तरु लै—२ । (७) तार पर ताहि गिरायौ—२, ३ ।

कालीदह-जल-पान

* राग सारंग

चरावत बृंदाबन हरि गाइ ।
सखा लिए सँग सुबल, सुदामा, डोलत हैं सुख पाइ ।
क्रीड़ा करत जहाँ-तहँ सब मिलि, अति आनंद बढ़ाइ ।
बगरि गईं गैयाँ बन-बीथिनि, देखौं अति बहुताइ ।
कोउ गए ग्वाल गाइ बन घेरन[1] कोउ गए बछरु लिवाइ ।
आपुहिं रहे अकेले बन मैं, कहुँ हलधर रहे जाइ ।
बंसीबट सीतल जमुना-तट[2], अतिहिं परम सुखदाइ ।
सूर स्याम तहँ बैठि बिचारत, सखा कहाँ बिरमाइ ॥५००॥१११८॥

⊛-राग सारंग

बार-बार हरि कहत मनहिं मन, अबहिं रहे सँग चारत धेनु ।
ग्वाल-बाल कोउ कहूँ न देखौं, टेरत नाउँ लेत दै सैनु ।
आलस-गात जात[3] मन मोहन, सोच[4] करत, तनु नाहिंन चैनु ।
अकनि रहत कहुँ, सुनत नहीं कछु, नहिं गो-रंभन बालक-बैनु ।
तृषावंत सुरभी बालक-गन, काली दह अँचयौ जल जाइ ।
निकसि आइ सब तट ठाढ़े भए, बैठि गए जहँ-तहँ अकुलाइ ।
बन-घन ढूँढ़ि स्याम तहँ आए, गो-सुत ग्वाल रहे मुरझाइ ।
मन मैं ध्यान करत ही जान्यौ, काली उरग रह्यौ ह्याँ आइ ।
गरुड़ त्रास करि आइ रह्यौ दुरि, अंतरजामी सब के नाथ ।
अमृत दृष्टि भरि चितए सूर प्रभु, बोलि उठे गावत हरि गाथ॥५०१॥१११९

---

* (ना) देवगधार। (रा) टोड़ी।

① हेरन—३, १६। ② जल—३।

⊛ (रा) गौरी।

③ जानि—१, ११, १५, १६। ④ बैठे छाहँ करत सुख चैनु—१, २, ११। बैठे छाहँ देत तन चैन—३।

* राग सारंग

† आवहु[1] आवहु इतै, कान्ह जू पाई हैं सब धेनु।
कुंज-कुंज मैं देखि हरे तृन, चरति परम सुख चैनु।
द्रुमनि चढ़े सब सखा पुकारत, मधुर सुनावत बैंनु।
जनि धावहु बलि चरन मनोहर, कठिन कंट मग ऐनु।
तुम[2] हमकौं कहँ कहँ न उबारचौ, पियौ काली[3]-मुँह-फैनु।
सूर स्याम संतनि-हित-कारन, प्रगट भए सुख दैनु ॥५०२॥११२०॥

राग सारंग

† पाई पाई हैं रे भैया, कुंज-पुंज मैं टाली।
अबकैं अपनी हटकि चरावहु, जैहैं भटकी[4] घाली।
आवहु बेगि सकल दहुँ दिसि तैं कत डोलत अकुलाने ?
सुनि मृदु-बचन देखि उन्नत कर, हरषि सबै समुहाने।
तुम तौ फिरत अनत हीं ढूँढ़त, ये बन फिरतिं अकेली।
बाँकी[5] गई कौन पैंड़ैं है, सघन बहुत द्रुम बेली।
सूरदास प्रभु मधुर बचन कहि, हरषित[6] सबहिं बुलाए।
नृत्य करत आनँद गो चारत सबैं[7] कृष्न पै आए ॥५०३॥११२१॥

❀ राग नट नारायनी

मोहिं बन छाँड़ि आए ग्वाल।
कहाँ तैं कहँ[8] आइ निकसे, करे कैसे ख्याल।

---

* (ना) टोड़ी।

† यह पद (स, ल, वृ, क, कां, रा, श्या) में नहीं है।

(१) आवौ आवौ कन्हैया पाई हैं सब धेनु—६, १७। (२) बार-बार ब्रज कौन उबारै—१, ११, १२। (३) कालीदह—१। काली मथि—६, ६, ११, १७।

† यह पद (वे, ल, शा, का, के, गो, जै, पू) में है।

(४) हटकी—१, ६, १७। (५) ह्वां की गाइ कौन पर लै हो—१, ६, ११। (६) राखत—१, ११। (७) राम कृष्न संग आए—६।

❀ (ना) सारंग। (कां, श्या) गौरी। (रा) कल्यान।

(८) चलि कहां आए निकसि—१७।

मुरछि काहैं गिरे धरनी, कहा यह जंजाल ।
मैं इहाँ जो आइ देखौं, परे सब बेहाल ।
आनि अँचयौ जल जमुन कौ, तबहिँ गए अकुलाइ ।
निकसि कै जब कूल आए, गिरि परे मुरझाइ[1] ।
प्रान बिनु हम सब भए ते, तुमहिँ दियौ जिवाइ ।
सूर के प्रभु तुम जहाँ तहँ हमहिँ लेत बचाइ ॥५०४॥११२२॥

राग गौरी

† बलदाऊ कहि स्याम पुकारयौ ।
आवहु बेगि चलौ घर जैऐ, बनहीं होत अँध्यारौ ।
ल्याए बोलि सखा हलधर कौं, हँसे स्याम मुख चाहि ।
बड़ी बेर भई बन[2] भीतर तुम, गाइनि लेहु निबाहि ।
हेरी देत चले सब बन तैं गोधन दियौ चलाइ ।
सूरदास प्रभु राम स्याम दोउ ब्रज-जन के सुखदाइ ॥५०५॥११२३॥

ब्रज-प्रवेश-शोभा

राग गौरी

वै मुरली की टेर सुनावत ।
बृंदाबन सब बासर बसि निसि-आगम जानि चले ब्रज आवत ।
सुबल, सुदामा, श्रीदामा सँग, सखा मध्य मोहन छबि पावत ।
सुरभी-गन सब लै आगैं करि कोउ टेरत[3] कोउ बेनु बजावत ।
केकी-पच्छ-मुकुट सिर भ्राजत, गौरी राग मिलै सुर[4] गावत ।
सूर स्याम के ललित बदन पर, गोरज-छबि कछु[5] चंद छपावत ॥५०६॥११२४॥

---

① सब आइ—१ ६, ११, १४, १७, १९ । सब धाइ—२ ।
† यह पद (ना) में नहीं है ।

② तुमहिँ कन्हैया—१, ३, ६, ११, १७ ।
③ निर्तत—१६, १९ । ④ रस—१, ६, ११, १४, १७ । संग—३ ।

⑤ कहुँ—१, ११, १५ । मनौ—२, १६, १८, १९ ।

राग गौरी

† हरि आवत गाइनि के पाछे।
मोर-मुकुट मकराकृति कुंडल, नैन बिसाल कमल तैं आछे।
मुरली अधर धरन[1] सीखत हैं, बनमाला पीतांबर काछे।
ग्वाल-बाल सब बरन-बरन के, कोटि मदन[2] की छबि किए पाछे।
पहुँचे आइ स्याम ब्रज पुर मैं, घरहिं चले मोहन-बल आछे।
सूरदास प्रभु दोउ जननी मिलि, लेतिं बलाइ बोलि मुख बाछे ॥५०७॥११२५

राग कल्यान

‡ आनँद सहित सबै ब्रज आए।
धन्य जसोदा तेरौ बारौ, हम सब मरत जिवाए।
नर-बपु[3] धरे देव यह कोऊ, आइ लियौ अवतार।
गोकुल-ग्वाल-गाइ-गोसुत के येई राखनहार।
पय पीवत पूतना निपाती, तृनावर्त इहिं भाँत।
वृषभासुर-बत्सासुर मार्‍यौ, बल-मोहन दोउ भ्रात[4]।
जब तैं जनम लियौ ब्रज-भीतर, तब तैं यहै उपाइ।
सूर स्याम के बल-प्रताप तैं, बन-बन चारत गाइ ॥५०८॥११२६॥

* राग गौरी

तुम कत गाइ चरावन जात।
पिता तुम्हारौ नंद महर सौ अरु[5] जसुमति सी जाकी मात।

---

† यह पद (शा) में नहीं है।

(१) धरैं—१६। (२) मदन की छबि कौ पाछै—२। मदन के छबि के बाछे—३। मदन छबि बाछे—६, १७। मदन की छबि कौ बाछे—१४, १६।

‡ यह पद (ल) में नहीं है।

(३) तन—२, १६। (४) न्याति—३, ६।

* (ना) कान्हरौ।

(५) जाकै जसुमति सी है मात—१, ३, ११, १५, १७

खेलत रहौ आपने घर मैं, माखन दधि भावै सो[1] खात।
अंमृत बचन कहौ मुख अपने, रोम-रोम पुलकित सब गात।
अब[2] काहू के जाहु कहूँ जनि, आवति हैं जुवती इतरात।
सूर स्याम मेरे नैननि आगे तैं, कत कहूँ जात हौ तात ॥५०९॥११२७॥

* राग गौरी

† मैया हौं न चरैहौं गाइ।
सिगरे[3] ग्वाल घिरावत मोसौं, मेरे पाइ पिराइँ।
जौ न पत्याहि पूछि बलदाउहिं, अपनी सौंह दिवाइ।
यह सुनि माइ जसोदा ग्वालनि, गारी देति रिसाइ।
मैं पठवति अपने लरिका कौं, आवै मन बहराइ।
सूर स्याम मेरौ अति बालक, मारत ताहि रिँगाइ ॥५१०॥११२८॥

राग गौरी

‡ बल मोहन बन तैं दोउ आए।
जननि जसोदा मातु रोहिनी, हरषित कंठ लगाए।
काहैं आजु अबार लगाई, कमल बदन कुम्हिलाए।
भूखे भए आजु दोउ भैया, करन कलेउ न पाए।
देखहु जाइ कहा जेवन कियौ, रोहिनि तुरत पठाई।
मैं अन्हवाए देति दुहुँनि कौं, तुम अति करौ चँड़ाई।
लकुट लियौ, मुरली कर लीन्हीं हलधर दियौ बिषान।

---

(१) तब—१, २, ११, १९। जो—३। (२) अब काहू के कहै जाहु जिनि—१६, १८, १९।
* (ना) केदारा। (का, के, क, जै, कां, पू, श्या) सारंग।
† यह पद (ल) में नहीं है।
(३) सिगरे (सिगरी) गाइ—२, १९।
☼ (ना) बिहागरौ।
‡ यह पद (का) में नहीं है।

नीलांबर पीतांबर लीन्हे, सैंति धरति करि प्रान।
मुकुट उतारि धर्यौ लै मंदिर, पोंछति है अँग-धातु।
अरु[1] बनमाल उतारति गर तैं, सूर स्याम की मातु ॥५११॥११२९

राग कल्यान

अंग-अभूषन जननि उतारति।
दुलरी ग्रीव माल मोतिनि की, लै केयूर[2] भुज स्याम निहारति।
छुद्रावली उतारति कटि तैं सैंति धरति मनहीं मन वारति।
रोहिनि भोजन करौ चँड़ाई बार-बार कहि-कहि करि[3] आरति।
भूखे भए स्याम हलधर दोउ,[4] यह कहि अंतर प्रेम बिचारति।
सूरदास प्रभु मातु जसोदा, पट लै, दुहुनि अंग-रज झारति॥५१२॥११३०॥

राग कल्यान

ये दोऊ मेरे गाइ चरैया।
मोल बिसाहि लियौ मैं तुमकौं जब दोउ रहे नन्हैया।
तुमसौं टहल करावति निसि-दिन और न टहल करैया।
यह सुनि स्याम हँसे कहि दाऊ, झूठ कहति है मैया।
जानि परत नहिं साँच झुठाई, चारत[5] धेनु झुरैया।
सूरदास[6] जसुदा मैं चेरी कहि-कहि लेति बलैया ॥५१३॥११३१॥

* राग कल्यान

† यह कहि जननि दुहुँनि उर लावति।
सुमना-सत अँग परसि, तरनि-जल, बलि-बलि गई कहि-कहि अन्हवावति।

---

(१) उर—१९। (२) ल भुज तैं उर स्याम निहारति—२। के उर—१, ६, ११, १५, १७, १९। (३) गहिड़ारति—२। (४) ए—१, ११। री—९। (५) धेनु चरावत रहत झुरैया (छुरैया)—१, २, ३, ६, ९, ११, १५, १६, १७, १८। (६) सूरदास प्रभु हँसति जसोदा मैं कहि लेति बलैया—१, २, ३, ६, ९, ११, १५, १६, १७, १८।

* (ना) केदारो।

† यह पद (का) में नहीं है।

सरस बसन तन पोंछि गई लै, षट रस की ज्यौनार जिँवावति ।
सीतल जल कपूर-रस रचयौ, झारी कनक लिए अँचवावति ।
भरयौ चुरू मुख धोइ तुरतहीँ, पीरे-पान-बिरो मुख नावति ।
सूर स्याम सुख जननि मुदित मन, सेज्जा पर सँग लै पौढ़ावति ॥५१४॥११३२॥

* राग बिहागरौ

† सोवत नीँद आइ गई स्यामहिँ ।
महरि उठी पौढ़ाइ दुहुँनि कौँ, आपु लगी गृह कामहिँ ।
बरजति है घर[1] के लोगनि कौँ, हरुएँ लै-लै नामहिँ ।
गाढ़ैँ बोलि न पावत कोऊ, डर मोहन बलरामहिँ ।
सिव सनकादि अंत नहिँ पावत, ध्यावत अह[2]-निसि-जामहिँ ।
सूरदास-प्रभु ब्रह्म सनातन, सो सोवत नँद-धामहिँ ॥५१५॥११३३॥

राग बिहागरौ

देखत नंद कान्ह अति सोवत ।
भूखे भए आजु बन-भीतर, यह कहि-कहि मुख जोवत ।
कह्यौ नहीँ मानत काहू कौ, आपु हठी दोउ बीर ।
बार-बार तनु पोँछत कर सौँ, अतिहिँ प्रेम की पीर ।
सेज मँगाइ लई तहँ अपनी, जहाँ स्याम-बलराम ।
सूरदास प्रभु कैँ ढिग सोए[3], सँग पौढ़ी नँद-बाम ॥५१६॥११३४॥

⊛ राग बिहागरौ

जागि उठे तब कुँवर कन्हाई ।
मैया कहाँ गई मो ढिग तैँ, सँग सोवति[4] बल भाई ।

* (ना) केदारौ ।
† यह पद (का) में नहीं है ।
① घर के सब लोगनि—१ ।
② है—१, २, ३, ११, १६ ।
③ सोई संग नंद की वाम—१६ ।
⊛ (काँ) गौरी ।
④ सोवत जान्यौ—१, ३, ११, १६ ।

जागे नंद, जसोदा जागी, बोलि लिए हरि पास।
सोवत झझकि उठे काहे तैं, दीपक कियौ प्रकास।
सपनैं कूदि पर्‌यौ जमुना-दह, काहूँ दियौ गिराइ।
सूर स्याम सौँ कहति जसोदा, जनि हो[1] लाल डराइ॥५१७॥११३५॥

※ राग गौरी

† मैं बरज्यौ जमुना-तट जात।
सुधि रहि गई न्हात की तेरैं, जनि डरपै मेरे तात।
नंद उठाइ लियौ कोरा करि, अपनैं सँग पौढ़ाइ।
बृंदाबन मैं फिरत जहाँ-तहँ, किहिं कारन तू जाइ।
अब जनि जैहौ[2] गाइ चरावन, कहँ[3] को रहति बलाइ!
सूर स्याम दंपति बिच सोए, नींद गई तब आइ॥५१८॥११३६॥

※ राग कल्यान

‡ सपनौ सुनि जननी अकुलानी।
दंपति बात कहत आपुस मैं, सोवत सारँगपानी।
या ब्रज कौ[4] जीवन यह ढोटा, कह देख्यौ इहिं आजु!
गाइ चरावन जान न दीजै, याकौ है कह काजु।
गृह-संपति द्वै तनक ढुटौना, इनहीं लौं सुख-भोग।
सूर स्याम बन जात चरावन, हँसी करत सब लोग॥५१९॥
॥११३७॥

---

(१) मेरे—२, १६। ※ (ना) गुनकली। † यह पद (का) में नहीं है। (२) नहिं जैहौं—२। (३) तहँ कोउ रहति बलाइ—१४, १६। (ना) सुघराई। ‡ यह पद (का) में नहीं है। (४) की जीवनि—६, १७।

* राग भैरवी

† इहिँ अंतर भिनुसार भयौ।
तारा गन सब गगन छपाने, अरुन उदित, अँधकार गयौ।
|| जागी महरि, काज-गृह लागी, निसि कौ सब दुख भूलि गयौ।
प्रातः स्नान करन जमुना कौं, नंदहिँ तुरत उठाइ दयौ।
मथनहारि सब ग्वारि बुलाईँ, भोर भयौ उठि मथौ दह्यौ।
सूर नंद घरनी आपुन हू, मथन[1] मथानी-नेति गह्यौ ॥५२०॥११३८॥

कमल-पुष्प मँगाना, काली-दमन लीला ⊛ राग बिलावल

नारद सौँ नृप करत बिचार। ब्रज[2] मैँ ये दोउ कोउ अवतार।
¶ नंद-सुवन बलराम कन्हाई। इनकी गति मैँ कछू न पाई।
तृनावर्त से दूत पठाए। ता पाछैँ कागासुर धाए।
बकी पठाइ दई पहिलैहीँ। ऐसनि कौ बल वै सब[3] लैहीँ।
उनतैँ कछू भयौ नहिँ काजा। यह सुनि-सुनि मोहिँ आवति लाजा।
अब मुनि तुम इक बुद्धि बिचारहु। सूर स्याम बलरामहिँ मारहु ॥५२१॥
॥११३९॥

× राग बिलावल

नारद ऋषि नृप सौँ यौँ[4] भाषत।
वै हैँ काल तुम्हारे प्रगटे, काहैँ उनकौँ राखत।

---

* (ना) सुघराई।
† यह पद (का) में नहीं है।
|| यह चरण (ना) में है। इसके स्थान पर उसमें चौथा चरण यह है—हरि चरित्र हरि जू जानत है नित्त चरित्र नयौ।
① मथति—१, २, ३, १६। मथत—६, १७।
⊛ (ना) रामकली।
② ब्रज मैं कछु न पाइये पार—२। ब्रज मैं ये दोऊ अवतार—१७। ब्रज मैं ये कोऊ अवतार—१६।
¶ यह युग्म (ना) में नहीं है।
③ वैसेहि—१, ३, ६, ११, १८, १६।
× (ना) विभास। (का) धनाश्री।
④ यह—१, ३, ११। पुनि—२।

कालो उरग रहै जमुना मैं, तहँ तैं कमल मँगावहु ।
दूत पठाइ देहु ब्रज ऊपर, नंदहिं अति डरपावहु ।
यह सुनि कै ब्रज लोग डरैंगे, वै सुनिहैं यह बात ।
पुहुप लैन जैहैं नँद-ढोटा, उरग करै तहँ घात ।
यह सुनि कंस बहुत सुख पायौ, भली कही यह मोहि ।
सूरदास प्रभु कौं मुनि जानत, ध्यान धरत मन जोहि ॥५२२॥११४०॥

* राग सूहौ

कंस बुलाइ दूत इक लीन्हौ ।
कालीदह के फूल मँगाए, पत्र लिखाइ ताहि कर दीन्हौ ।
यह कहियौ ब्रज जाइ नंद सौं, कंस राज अति[1] काज मँगायौ ।
तुरत पठाइ दिएँ ही बनिहै, भली भाँति कहि-कहि समुझायौ ।
यह अंतरजामी जानी जिय, आपु रहे, बन ग्वाल पठाए ।
सूर स्याम, ब्रज-जन-सुखदायक, कंस-काल, जिय हरष बढ़ाए ॥५२३॥
॥११४१॥

☼ राग रामकली

खेलन चले नंद-कुमार ।
दूत आवत जानि ब्रज मैं, आपु दीन्ह्यौ टार ।
नंद जमुना न्हाइ आए, महरि ठाढ़ी द्वार ।
नृपति दूत पठाइ दीन्ह्यौ, चल्यौ ब्रज इहिं[2] कार ।
महर पैठत सदन भीतर, छींक बाईं धार ।
सूर नंद कहत महरि सौं, आजु कहा विचार ॥५२४॥११४२॥

---

* (ना) देवगधार । (कां, श्या) सूहौ बिलावल । (रा) बिलावल ।

(१) इक—६ । अप—१६ ।

☼ (ना) ललित ।

(२) अहँकार—१, २, ३, ४, ११, १५, १७ ।

✻ राग सूहौ

पुनि-पुनि कंस मुदित मन कीन्हौ ।
दूतहिँ प्रगट कही यह बानी, पत्र नंद कौँ दीन्हौ ।
कालीदह के कमल पठावहु, तुरत देखि यह पाती ।
जैसैँ काल्हि कमल ह्याँ पहुँचै, तू कहियौ इहिँ भाँती ।
यह सुनि दूत तुरतहीँ धायौ, तब पहुँच्यौ ब्रज जाइ ।
सूर नंद-कर पाती दीन्हीँ, दूत कह्यौ समुझाइ ॥५२५॥११४३॥

❁ राग सूहौ

पाती बाँचत नंद डराने ।
कालीदह के फूल पठावहु[1] सुनि सबही घबराने ।
जौ मोकौँ नहिँ फूल पठावहु, तौ ब्रज देहुँ उजारि ।
महर, गोप, उपनंद न राखौँ, सबहिनि डारौं मारि ।
पुहुप देहु तौ बनै तुम्हारी, ना तरु गए बिलाइ ।
सूर स्याम[2]-बलराम तिहारे, माँगौं उनहिँ धराइ ॥५२६॥११४४॥

राग बिलावल

नंद सुनत मुरझाइ गए ।
पाती बाँची, सुनी दूत-मुख, यह बानी सुनि चकित भए ।
बल मोहन खटकत वाकैँ मन, आजु कही यह बात ।
‖कालीदह के फूल कहौ धौं, को आनै, पछितात ।

✻ (ना) देवगिरी । सारंग । (का, कां, रा) बिलावल । (क) ❁ (ना) गूजरी । (का) बिलावल । (रा) सूहा बिलावल । ① मँगाए (मँगावहु) सुनी सबनि ब्रज लोग घराने—१, ११, १५ । पठावहु सुनि सब (यह) ब्रज लोग घराने—२, ३, ६, ६, १७ । ② बल मोहन तेरे—१, २, ३, ११, १७ ।

‖ यह चरण (के, पू) में नहीं है । इसके स्थान पर उनमें पाँचवाँ चरण यह है—कंस राइ इक दूत पठायौ कमल फूल भेजहु तुम तात ।

और गोप सब नंद बुलाए, कहत सुनौ यह बात ।
सुनहु सूर नृप इहिँ ढँग आयौ, बल मोहन पर घात ॥५२७॥११४५॥

* राग जैतश्री

आपु चढ़े ब्रज-ऊपर काल[1] ।
कहाँ निकसि जैऐ को राखै, नंद कहत बेहाल[2] ।
मोहिँ नहीँ जिय कौ डर नैंकुहुँ, दोउ सुत कौं डरपाउँ ।
गाउँ तजौं, कहुँ जाउँ निकसि लै, इनहीँ काज पराउँ ।
अब उबार नहिँ दीसत कतहूँ, सरन राखि को लेइ ।
सूर स्याम कौं बरजति माता, बाहिर जान न देइ ॥५२८॥११४६॥

⊛ राग आसावरी

नंद-घरनि ब्रज-नारि बिचारति ।
ब्रजहिँ बसत सब जनम सिरानौ, ऐसी करी[3] न आरति ।
कालीदह के फूल मँगाए, को आनै[4] धौं जाइ ।
ब्रजबासी नातरु सब मारै, बाँधै बलऽरु[5] कन्हाइ ।
यहै कहत दोउ नैन ढराने, नंद-घरनि दुख पाइ ।
सूर स्याम चितवत माता-मुख, बूझत बात बनाइ ॥५२९॥११४७॥

× राग आसावरी

पूछौ जाइ तात सौं बात ।
मैं बलि जाउँ मुखारबिंद की, तुमहीँ काज कंस अकुलात ।

---

* (ना) धनाश्री । (ना) जैतश्री । (का) गौरी ।

(१) कालि (काली)—१, ११, १५ । कालिह—२, ६, १७ । (२) है भालिह (भालि)—६, १४, १७ । (३) कस करी नहिँ आरति—१, २, ३, ६, ६, ११, १४, १५ । (४) आनन अब —२ । (५) बल न कन्हाइ—१, २, ३, ६, ११, १४ ।

× (ना) गूजरी । (के, पू) नट ।

आए स्याम नंद पै धाए, जान्यौ मातु-पिता बिलखात[1] ।
अबहीं दूरि करौं दुख इनकौ, कंसहिं पठै देउँ जलजात ।
मोसौं कहौ बात बाबा यह, बहुत करत तुम सोच बिचार ।
कहा कहौं तुमसौं मैं[2] प्यारे, कंस करत तुमसौं कछु झार ।
जब तैं जनम भयौ है तुम्हरौ, केते करबर टरे कन्हाइ ।
सूर स्याम कुलदेवनि तुमकौं, जहाँ तहाँ करि लियौ सहाइ ॥५३०॥
॥११४८॥

* राग बिलावल

तुमहिं कहत कोउ करै सहाइ ।
सो देवता संगहीं मेरैं, ब्रज तैं अनत कहूँ नहिं जाइ ।
वह[3] देवता कंस मारैगौ, केस धरे धरनी घिसियाइ ।
वह देवता मनावहु सब मिलि तुरत कमल जो देइ पठाइ ।
बाबा नंद, झखत किहिं कारन, यह कहि मया[4] मोह अरुझाइ[5] ।
सूरदास प्रभु मातु-पिता कौ, तुरतहिं दुख डार्यौ बिसराइ ॥५३१॥
॥११४९॥

❀ राग नट

खेलन चले कुँवर कन्हाइ ।
कहत घोष-निकास जैयै, तहाँ खेलैं धाइ ।
गेंद खेलत बहुत बनिहै, आनौ[6] कोऊ जाइ ।
सखा श्रीदामा गए घर, गेंद तुरतहिं आइ ।

---

(१) अकुलात—१, २, ३, ६, ११, १४ । (२) मेरे—१, २, ३, ११ ।
* (ना) ललित ।

(३) बड़ौ देव गिरि गोवर्द्धन है जो पुरवै आसा मन भाइ—१४ । (४) माया मो अरुझाइ—३ । (५) उपजाइ—२ ।

❀ (ना) देवगिरी । (कां) रामकली ।
(६) ल्याव—१६ ।

अपनैं कर लै स्याम देख्यौ, अतिहिं हरष बढ़ाइ ।
सूर के प्रभु सखा लीन्हैं[1] करत खेल बनाइ ॥५३२॥११५०॥

※ राग सारंग

खेलत स्याम, सखा लिए संग ।
इक मारत, इक रोकत[2] गेंदहिं, इक भागत करि नाना रंग ।
मार परसपर करत आपु मैं, अति आनंद भए मन माहिं ।
खेलत ही मैं स्याम सबनि कौं, जमुना-तट कौं लीन्हे जाहिं ।
मारि भजत जो जाहि, ताहि सो मारत, लेत आपनौ दाउ ।
सूर स्याम के गुन को जानै, कहत और कछु और उपाउ ॥५३३॥
॥११५१॥

⊛ राग गौरी

लै गए टारि जमुन-तट ग्वालनि ।
आपुन जात कमल के काजहिं, सखा लिए सँग ख्यालनि ।
जोरी[3] मारि भजत उतही कौं, जात जमुन कैं तीर ।
इक धावत पाछैं उनहीं के, पावत नहीं अधीर ।
रौंटि करत तुम खेलत ही मैं, परी कहा यह बानी ?
सूर स्याम कौं कहत ग्वाल सब, तुमहिं भलें करि जानी ॥५३४॥
॥११५२॥

× राग नट

स्याम सखा कौं गेंद चलाई ।
श्रीदामा मुरि अंग बचायौ, गेंद परी कालीदह जाई ।

---

(१) लै सँग—१६ ।
※ (ना) आसावरी । (क, रा) नट ।
(२) लोकत—२, ३, ११, १७ ।
⊛ (ना) विलावल । (का) आसावरी । (के) सारंग । (र्का, पृ, रा) नट ।
(३) चोरी—२ । जोरे—३ ।
× (ना) विलावल । (के, पृ) सोरटी । (रा) सारंग ।

धाइ गह्यो तब फेँट स्याम की, देहु न मेरी गेँद मँगाई ।
और सखा जनि मोकौं जानो, मोसौं तुम जनि करौ ढिठाई ।
जानि-बूझि तुम गेँद गिराई, अब दीन्हैँ ही बनै कन्हाई ।
सूर सखा सब हँसत परसपर, भली करी हरि गेँद गँवाई[1] ॥५३५॥११५३॥

राग सोरठ

फेँट छाँड़ि मेरी देहु श्रीदामा ।
काहे कौँ तुम रारि बढ़ावत, तनक बात कैँ कामा ।
मेरी गेँद लेहु ता बदलैँ, बाहँ गहत हौ धाइ ।
छोटौ बड़ौ न जानत काहूँ, करत बराबरि आइ ।
हम काहे कौँ तुमहिँ[2] बराबर, बड़े नंद के पूत !
सूर स्याम दीन्हैँ ही बनिहै, बहुत[3] कहावत धूत ॥५३६॥११५४॥

* राग कल्यान

तोसौं कहा धुताई[4] करिहौं ।
जहाँ करी तहँ देखी नाहीँ, कह तोसौं मैँ लरिहौं ।
मुहँ सम्हारि तू बोलत नाहीँ, कहत बराबरि बात ।
पावहुगे अपनो कियौ अबहीँ; रिसनि कँपावत गात ।
सुनहु स्याम, तुमहूँ[5] सरि नाहीँ, ऐसे गए बिलाइ ।
हमसौं सतर होत सूरज प्रभु, कमल देहु अब जाइ ॥५३७॥११५५॥

⊛ राग गौरी

हमहीँ पर सतरात कन्हाई ।
प्रथमहिँ कमल कंस कौं दीजे, डारहु[6] हमहिँ मराई ।

---

(1) गिराई—१ । (2) तुम्हरी—२, १६ । (3) बड़े—२, १६ ।
* (ना) नट । (का) धनाश्री । (के, पू) बिहागरा ।
(4) ढिठाई—२, १६ । (5) मैँ (हम) तुम—२, १६ ।
⊛ (ना) नट । (का) धनाश्री । (रा) कल्यान ।
(6) डारै—१४ ।

साँच कहौं मैं तुमहिं श्रीदामा, कमल-काज मैं आयौ।
कहा कंस बपुरौ, किहिं लायक, जाकौं मोहिं डरायौ ?
अघा, बका, केसी, सकटासुर, तृना सिला पर डारयौ।
बकी कपट करि प्यावन आई, ताकौं तुरत पछारयौ।
कालीदह-जल-छुवत मरे सब, सोइ काली धरि ल्याऊँ।
सूरदास प्रभु देह धरे कौ, गुन प्रगट्यौ[1] इहिं ठाऊँ ॥५३८॥११५६॥

राग सोरठ

रिस करि लीन्ही फेंट छुड़ाइ।
सखा सबै देखत हैं ठाढ़े, आपुन चढ़े कदम पर धाइ।
तारी दै-दै हँसत सबै मिलि, स्याम गए तुम भाजि डराइ।
रोवत चले श्रीदामा घर कौं, जसुमति आगैं कहिहौं जाइ।
सखा-सखा कहि स्याम पुकारयौ, गेंद आपनौ लेहु न आइ।
सूर स्याम पीतांबर काछे, कूदि परे दह मैं भहराइ[2] ॥५३९॥११५७॥

* राग गौरी

हाय-हाय करि सखनि पुकारयौ।
गेंद-काज यह करी श्रीदामा, नंद[3] कौ ढोटा मारयौ।
जसुमति चली रसोई भीतर, तबहिं ग्वालि इक छींकी।
ठठकि रही द्वारे पर ठाढ़ी, बात नहीं कछु नीकी।
आइ अजिर निकसी नँदरानी, बहुरी दोष मिटाइ।
मंजारी आगैं ह्वै आई[4], पुनि फिरि आँगन आइ।

---

(१) प्रगटौं–१, ११। प्रगटैं—१६। (२) फहराई—१६।
* (कां, रा, श्या) सोरठ।
(३) नंद महर कौ—१, २, ३, ६, ६, ११, १४, १५, १६, १७, १८, १९। (४) निकसी—१, २, ३, ११, १७।

ब्याकुल भई, निकसि गई बाहिर, कहँ धौं गए कन्हाई।
बाएँ काग, दाहिनैं खर-स्वर[1], ब्याकुल घर फिरि आई।
खन भीतर, खन बाहिर आवति, खन आँगन इहिं भाँति।
सूर स्याम कौं टेरति जननी, नैंकु नहीं मन साँति ॥५४०॥११५८॥

राग गौरी

देखे नंद चले घर आवत।
पैठत पौरि छींक भई बाएँ, दहिनैं[2] धाह सुनावत।
फटकत स्रवन स्वान द्वारे पर, गररी करति लराई।
माथे पर ह्वै काग उड़ान्यौ, कुसगुन बहुतक पाई।
आए नंद घरहिं मन मारे, ब्याकुल देखी नारि।
सूर नंद जसुमति सौं बूझत, बिनु छबि बदन निहारि ॥५४१॥११५९॥

* राग नट

नंद घरनि सौं पूछत बात।
बदन झुराइ गयौ क्यौं तेरौ, कहाँ गए बल, मोहन तात ?
"भीतर चली रसोई कारन, छींक परी तब आँगन आइ।
पुनि आगैं ह्वै गई मँजारी, और बहुत कुसगुन मैं पाइ।"
मोहिं भए कुसगुन घर पैठत, आजु कहा यह समुझि न जाइ।
सूर स्याम गए आजु कहाँ धौं, बार-बार पूछत नँदराइ ॥५४२॥११६०॥

⊛ राग गौरी

महर-महरि-मन गई[3] जनाइ।
खन भीतर, खन आँगन ठाढ़े, खन बाहिर देखत हैं जाइ।

---

(१) सूकर—१, ११। (२) रोइ दाहिनैं—१, २, ३, ११, १६।

* (ना) सारग।

(ना) सारग।

(३) गए—१, २, ६, ११, १४, १७।

इहिँ अंतर सब सखा पुकारत, रोवत आए ब्रज कौं धाइ ।
आतुर गए नंद-घरही कौं, महर-महरि सौं बात सुनाइ ।
चकित भए दोउ बूझन लागे, कहौ बात हमकौं समुझाइ ।
सूर स्याम खेलतहिँ कदम चढ़ि, कूदि परे कालीदह जाइ ॥५४३॥११६१॥

* राग सोरठ

सुपनौ परगट कियौ कन्हाई ।
सोवत ही निसि आजु डराने, हमसौं यह कहि बात सुनाई ।
धरनि परी मुरझाइ जसोदा, नंद गए जमुना-तट धाई ।
बालक सब नंदहिँ सँग धाए, ब्रज-घर जहँ-तहँ सोर मचाई ।
त्राहि-त्राहि करि नंद पुकारत, देखत ठौर गिरे भहराई ।
लोटत धरनि, परत जल-भीतर, सूर स्याम दुख दियौ बुढ़ाई॥५४४॥११६२॥

राग गौरी

ब्रज-बासी यह सुनि सब आए ।
कहाँ परयौ गिरि कुँवर कन्हैया, बालक लै सो ठौर दिखाए ।
सूनौ गोकुल कियौ स्याम तुम, यह कहि लोग उठे सब रोइ ।
नंद गिरत सबहिनि धरि राख्यौ, पोँछत बदन नीर लै धोइ ।
ब्रज-बासी तब[1] कहत महर सौं, मरन भयौ सबही कौं आइ ।
सूर स्याम बिनु को बसिहै ब्रज, धिक जीवन तिहुँ भुवन कहाइ ॥५४५॥११६३॥

× राग सोरठ

महरि पुकारति कुँवर कन्हाई ।
माखन धरयौ तिहारेहि कारन, आजु कहाँ अवसेरि लगाई ।

---

* (ना) नट ।
* (ना) नट ।
(१) सब—१६, १८ ।
× (ना) सारंग ।

अति कोमल, तुम्हरे मुख लायक, तुम जेँवहु मेरे नैन जुड़ाई ।
धौरी-दूध औटि है राख्यौ, अपनैँ कर दुहि[1] गए बनाई ।
बरजति ग्वारि जसोदा कौं सब, यह कहि-कहि नीकैँ जदुराई ।
सूर स्याम सुत जीय[2] मातु के, यह बियोग बरन्यौ नहिँ जाई॥५४६॥११६४

* राग गौरी

माखन खाहु लाल मेरे आई । खेलत आजु अबार लगाई ।
बैठहु आइ संग दोउ भाई । तुम जेँवहु मैया बलि जाई ।
सद माखन अति हित मैँ राख्यौ । आजु नहीँ नैँकुहुँ तुम[3] चाख्यौ ।
प्रातहिँ तैँ मैँ दियौ जगाइ । दतुवनि करि जु गए दोउ भाइ ।
मैँ बैठी तुव पंथ निहारौँ । आवहु तुम पर तन मन वारौँ ।
ब्रज-जुवती सुनि-सुनि यह बानी । रोवति धरनि परीँ अकुलानी ।
सोक - सिंधु बूड़ी नँदरानी । सुधि-बुधि तन की सबै भुलानी ।
सूर[4] स्याम लीला यह कीन्हौ । सुख कैँ हेत जननि दुख दीन्हौ॥५४७॥११६५

** राग नट

चौंकि परी तन की सुधि आई ।
आजु कहा ब्रज सोर मचायौ, तब जान्यौ दह गिरयौ कन्हाई ।
पुत्र-पुत्र कहिकै उठि दौरी, ब्याकुल जमुना-तीरहिँ धाई ।
ब्रज-बनिता सब संगहिँ लागीँ आइ गए बल, अग्रज भाई ।
जननी ब्याकुल देखि प्रबोधत, धीरज करि नीकैँ जदुराई ।
सूर स्याम कौँ नैँकु नहीँ डर, जनि तू रोवै जसुमति माई॥५४८॥११६६॥

---

① दधि कियौ बनाई—१६।
② बिरह मातु कौ—१,३,११,१५,१७। चित—२।
* (ना) बिलावल। (का) सोरठ।
③ तै—१, ११, १४। तिहिँ—३।
④ सूरज स्याम खेल—१६।
** (ना) सूहौ। (का) सोरठ।

*राग बिलावल

† ब्रज-बासी सब उठे पुकारि । जल भीतर कह करत मुरारि ।
संकट मैं तुम करत सहाइ । अब क्यौं नाहिँ बचावत आइ ।
मातु-पिता अतिहीं दुख पावत । रोइ-रोइ सब कृष्न बुलावत ।
हलधर कहत सुनहु ब्रज-बासी । वे अंतरजामी अबिनासी ।
सूरदास प्रभु आनँद-रासी । रमा सहित जल ही के बासी ॥५४९॥११६७॥

⊛ राग सूहौ

अति कोमल तनु धर्‌यौ कन्हाई ।
गए तहाँ जहँ काली सोवत, उरग-नारि देखत अकुलाई ।
कह्यौ कौन कौ बालक है तू, बार-बार कही, भागि न जाई ।
छनकहि मैं जरि भस्म होइगौ, जब देखै उठि जागि जम्हाई ।
उरग-नारि की बानी सुनि कै, आपु हँसे मन मैं मुसुकाई ।
मोकौं कंस पठायौ देखन, तू याकौं अब देहि जगाई ।
कहा कंस दिखरावत इनकौं, एक फूँकही मैं जरि जाई ।
पुनि-पुनि कहत सूर के प्रभु कौ, तू अब काहे न जाइ पराई ॥५५०॥११६८।

× राग गुंड मलार

कहा डर करौं इहिँ फनिग कौ बावरी ।
कह्यौ मेरौ मानि, छाँड़ि अपनो बानि, टेक परिहै जानि सब रावरी ।
तोहिँ देखे मया,[1] मोहिँ अतिहीं भई, कौन कौ सुवन, तू कहा आयौ ।
मरौ वह कंस, निरबंस वाकौ होइ, कर्‌यौ[2] यह गंस तोकौं पठायौ ।

---

* (का) धनाश्री । (रा) कल्यान ।
† यह पद (के, पू) में नहीं है ।
⊛ (ना) जैतश्री । (का) धनाश्री । (कां, रा) बिलावल ।
× (ना) मारु । (का) मारु कर्का ।
(१) दया—१६ । (२) कह्यौ यह कंस—१, ११, १४ । करवर

कंस कौँ मारिहौँ धरनि निरवारिहौँ, अमर उद्धारिहौँ उरग-घरनी।
सूर प्रभु के बचन सुनत, उरगिनि कह्यौ, जाहि अब क्यौँ न, मति भई मरनी ॥५५१॥
॥११६९॥

राग मारू

झिरकि कै नारि, दै गारि गिरिधारि तब, पूँछ पर लात दै अहि जगायौ।
उठ्यौ अकुलाइ, डर पाइ खग-राइ कौँ, देखि बालक गरब अति बढ़ायौ।
पूँछ लीन्ही झटकि धरनि सौँ गहि पटकि फुंकरयौ लटकि करि क्रोध फूले।
पूँछ राखी चाँपि, रिसनि काली काँपि, देखि सब साँपि-अवसान भूले।
करत फन-घात, बिष जात उतरात[1] अति, नीर जरि जात, नहिँ गात परसै।
सूर के स्याम, प्रभु, लोक-अभिराम, बिनु जान अहिराज बिष ज्वाल बरसै ॥५५२॥
॥११७०॥

* राग नट

† अहि[2] कौँ लै अब ब्रजहिँ दिखाऊँ।
कमल-भार याही पर लादौँ, याकौँ[3] आपन रूप जनाऊँ।
मात-पिता अतिहीँ दुख पावत, दरसन दै मन हरष बढ़ाऊँ[4]।
कमल पठाइ देउँ नृपराजहिँ, काल्हि कह्यौ ब्रज ऊपर धाऊँ।
मन-मन करत बिचार स्याम यह, अब काली कौँ दाउँ[5] बताऊँ।
सूरदास प्रभु की यह बानी, ब्रज-बासिनि कौँ दुख बिसराऊँ ॥५५३॥
॥११७१॥

⁘ राग कान्हरौ

उरग-नारि सब कहतिँ परस्पर, देखौ या बालक की बात।

यह कंस—२। करो यह काम–३।
① अतुरात—१, २, ३, ६, ९, ११, १५।
* (ना) नट।

† यह पद (का)में नहीं है।
② इनकौ लै ब्रज लोग दिखाऊँ—१, ३, ९, ११, १५, १७। इहिँ—१६। ③ अहि कौ—२।

④ कराऊँ—१, ९, ११, १७।
⑤ दाप नवाऊँ—२, ३। दाव दिवाऊँ—६, ११, १७।
⁘ (ना) टोड़ी।

बिष-ज्वाला जल जरत जमुन कौ, याकैं तन लागत नहिँ तात !
यह कछु तंत्र[1] मंत्र जानत है अतिहीं सुंदर कोमल गात ।
यह अहिराज महा बिष ज्वाला, कितने करत सहस फन घात !
छुवत नहीं तनु याकौं बिष कहुँ, अब लौं बच्यौ पुन्य पितु-मात ।
सूर स्याम सो दाउँ बतायौ,[2] काली अंग लपेटत जात ॥५५४॥११७२॥

राग बिलावल

उरग लियौ[3] हरि कौं लपटाइ ।
गर्व-बचन कहि-कहि मुख भाषत, मोकौं नहिँ जानत अहिराइ ।
लियौ लपेटि चरन तैं सिख लौं, अति[4] इहिँ मोसौं करी ढिठाइ ।
चाँपी पूँछ लुकावत अपनी, जुवतिनि कौं नहिँ सकत दिखाइ ।
प्रभु अंतरजामी सब जानत, अब डारौं इहिँ[5] सकुच मिटाइ ।
सूरदास प्रभु तन बिस्तार्‌यौ, काली बिकल भयौ तब जाइ ॥५५५॥११७३॥

* राग कान्हरौ

जबहिँ स्याम तन अति बिस्तार्‌यौ ।
पटपटात टूटत अँग जान्यौ, सरन-सरन सु[6] पुकार्‌यौ ।
यह बानी सुनतहिँ करुनामय, तुरत गए सकुचाइ ।
यहै बचन सुनि द्रुपद-सुता-मुख,[7] दीन्हौ बसन बढ़ाइ ।
यहै बचन गजराज सुनायौ,[8] गरुड़ छाँड़ि तहँ धाए ।
यहै बचन सुनि लाखा-गृह मैं पांडव जरत बचाए ।

---

(१) जंत्र—१, ३, ११, १५, १७। (२) न पायौ—२। बतावत—३। (३) गयौ—६, १६, १८, १९। (४) अतिहीं—२, ३। (५) सब—१९। *(ना) बिलावल। (६) अहिराज—१, २, ३, १९। (७) को—१७। (८) उबार्‌यौ—१९।

यह बानी सहि जात न प्रभु सौं, ऐसे परम कृपाल ।
सूरदास प्रभु अंग सकोरयौ,[1] व्याकुल देख्यौ ब्याल ॥५५६॥११७४॥

* राग गौरी

नाथत ब्याल बिलंब न कीन्हौ ।
पग सौं चाँपि घींच बल तोरयौ, नाक[2] फोरि गहि लीन्हौ ।
कूदि चढ़े ताके माथे पर, कालो करत बिचार ।
स्रवननि सुनी रही यह बानी, ब्रज ह्वै है अवतार ।
तेइ अवतरे आइ गोकुल मैं, मैं जानी यह बात ।
अस्तुति करन लग्यौ सहसौ मुख, धन्य-धन्य जग-तात ।
बार-बार कहि सरन पुकारयौ, राखि-राखि गोपाल ।
सूरदास[3] प्रभु प्रगट भए जब, देख्यौ ब्याल बिहाल ॥५५७॥११७५॥

* राग बिलावल

देखि दरस मन हरष भयौ ।
पूरन ब्रह्म सनातन तुमहीं, ब्रज अवतार लयौ ।
श्रीमुख कह्यौ, अजहुँ लौं तुम नहिं, जान्यौ ब्रज[4] अवतार ?
और कौन जो तुम सौं बाँचै, सहस फननि की झार !
अनजानत अपराध किए प्रभु[5], राखि सरन मोहिं लेहु[6] ।
सूरदास धनि-धनि मेरे फन, चरण-कमल जहँ देहु[7] ॥५५८॥११७६॥

---

(१) सकोच्यौ—१६, १८, १६ ।

* (ना) सूहो बिलावल । (के) बिलावल ।

(२) फोरि नाक कर सौं—१, ३, ६, ६, ११, १५, १७, १८ । बहुरि नाग कर सौ—२, १६, १६ ।

(३) सूरदास प्रभु सकुचि गए सरण कहत (गहत) तब ब्याल—१, ११ । सूरदास प्रभु दीन बचन सुनि सदय भए तेहि काल—३ ।

* (का) सोरठ ।

(४) ब्रह्म—१ । (५) बहु—१, ३, ११, १७ । (६) लीनौ—२ । लीजै—१६ । (७) दीनौ—२ । दीजै—१६ ।

*राग गौरी

अब कीन्ह्यौ प्रभु मोहिँ सनाथ।
कोटि-कोटि कीटहु सम नाहीँ, दरसन दियौ जगत के नाथ।
असरन सरन कहावत हौ तुम, कहत सुनी भक्तनि मुख बात।
ये अपराध छमा सब कीजै, धिक मेरी बुधि कहत डरात।
दीन बचन सुनि काली-मुख तैँ, चरन धरे फन-फन-प्रति आप।
सूर स्याम देख्यौ अहि ब्याकुल, खसु दीन्ह्यौ, मेटे त्रय ताप ॥५५६॥११७७॥

⊛ राग गौरी

जसुमति टेरति कुँवर कन्हैया।
आगैँ देखि कहत बलरामहिँ, कहाँ रह्यौ तुव भैया।
मेरैं भैया आवत अबहीँ, तोहिँ दिखाऊँ मैया।
धीरज करहु, नैँकु तुम देखहु, यह सुनि लेति बलैया।
पुनि यह कहति मोहिँ परमोधत,[1] धरनि गिरी मुरझैया।
सूर बिना सुत भई अति ब्याकुल, मेरौ बाल नन्हैया ॥५६०॥११७८॥

राग सारंग

† जमुना तोहिँ बह्यौ क्यौँ भावै।
तोमैँ कृष्न हेलुवा खेलै, सो सुरत्यौ नहिँ आवै!
तेरौ नीर सुची जो अब लौँ, खार पनार कहावै।
हरि-बियोग कोउ पाउँ न दैहै, को तट बेनु बजावै!
भरि भादौँ जो राति अष्टमी, सो दिन क्यौँ न जैनावै।
सूरदास कौ ऐसौ ठाकुर, कमल-फूल लै आवै ॥५६१॥११७९॥

---

*(ना) सारंग। (का) आसावरी।

⊛ (ना) सारग।
(१) परबोधत—१।

† यह पद केवल (वे, ल, गो, जै) में है।

※ राग सोरठ

† ब्रज-बासी सब भए बिहाल ।
कान्ह-कान्ह कहि-कहि टेरत हैं, ब्याकुल गोपी-ग्वाल ।
अब को बसै जाइ ब्रज हरि-बिनु, धिक जीवन नर-नारि ।
तुम बिनु यह गति भई सबनि की, कहाँ गए बनवारि ।
प्रातहिँ तैं जल-भीतर पैठे, होन लग्यौ जुग जाम ।
कमल लिए सूरज प्रभु आवत सब सौं कही बलराम ॥५६२॥११८०॥

राग नट

आवत उरग नाथे स्याम ।
नंद, जसुदा, गोप-गोपी, कहत हैं बलराम ।
मोर-मुकुट, बिसाल लोचन, स्रवन कुंडल लोल ।
कटि पितंबर, बेष नटवर, नृतत फन प्रति डोल ।
देव दिवि दुंदुभि बजावत, सुमन-गन बरषाइ ।
सूर स्याम बिलोकि ब्रज-जन, मातु, पितु सुख पाइ॥५६३॥११८१॥

❀ राग नट

मातु[१] -पिता मन हरष बढ़ायौ ।
मोर-मुकुट पीतांबर काछे, देख्यौ[३] निकट जु आयौ ।
सुर[४] दुंदुभी बजावत गावत, फन-प्रति[५] निर्तत स्याम ।
ब्रजबासी सब मरत जिवाए, हरषि उठीँ सब बाम ।

※ (ना) बृंदावनी सारंग ।

† यह पद (का) में नहीं है ।

① हरष मनहिँ बढ़ाइ—१४ ।

❀ (का) बिलावल । (जै, कॉ, पू, रा, श्या) कान्हरौ ।

② हलधर कहत स्याम यह आयौ—१४ । ③ देख्यौ अतिहिँ निकट जब आयौ—१,२,३,६,६, ११, १५, १६, १७, १८ । ④ दिवि—३, १४, १६ । दिव—६, १७ । देव—११, १५ । ⑤ पर—१, ११ ।

सोक-सिंधु बहि गयौ तुरतहीं, सुख कौ सिंधु बढ़ायौ ।
सूरदास प्रभु कंस-निकंदन, कमल उरग पर लायौ ॥५६४॥११८२॥

* राग कान्हरौ

फन-फन-प्रति निरतत नँद-नंदन ।
जल-भीतर जुग जाम रहे कहुँ, मिट्यौ नहीं तन-चंदन ।
उहै काछनी कटि, पीतांबर, सीस मुकुट अति सोहत ।
मानौ गिरि पर मोर अनंदित, देखत ब्रज-जन मोहत ।
अंबर[1] थके अमर ललना सँग, जै-जै धुनि तिहुँ लोक ।
सूर स्याम काली पर निरतत, आवत हैं[2] ब्रज-ओक ॥५६५॥११८३॥

❀ राग सोरठ

गोपाल राइ निरतत फन-प्रति ऐसे ।
गिरि पर आए बादर देखत, मोर अनंदित जैसे ।
डोलत मुकुट सीस पर हरि के, कुंडल-मंडित गंड ।
पीत बसन, दामिनि मनु घन पर, तापर सुर-कोदंड ।
उरग-नारि आगैं सब ठाढ़ीं, मुख-मुख अस्तुति गावैं ।
सूर स्याम अपराध छमहु अब, हम माँगैं पति पावैं ॥५६६॥११८४॥

× राग कान्हरौ

बहुत कृपा इहिं[3] करी गुसाईं ।
इतनी कृपा करी नहिं काहूँ, जिनि[4] राखे सरनाईं ।
कृपा करी प्रहलाद भक्त कौं, द्रुपद-सुता-पति राखी ।

---

* (ना) नट ।

(१) हरखत अमर-अमर ललना सँग जै जै धुनि चहुँ ओर—६ ।

(२) नदकिसोर—९ ।

❀ (ना, गो) कान्हरौ । (का) आसावरी ।

× (का) आसावरी ।

(३) तुम—२ । (४) जितने राखि लिए सरनाईं—१, २, ३, ४, ८, ११, १२, १६, १७, १८ ।

ग्राह ग्रसत[1] गजराज छुड़ायौ, बेद पुराननि भाखी।
जो कछु कृपा करी कालो पर, सो काहूँ नहिँ कीन्हौ।
कोटि ब्रह्मंड रोम-प्रति अंगनि, ते पद फन-प्रति दीन्हौ।
धरनि सीस धरि सेस गरब धर्‍यौ, इहिँ[2] भर अधिक सँभार्‍यौ।
पूरन कृपा करी सूरज प्रभु, पग फन-फन-प्रति धार्‍यौ ॥५६७॥११८५॥

* राग सोरठ

ठाढ़े देखत हैं ब्रजबासी।
कर जोरे अहि-नारि बिनय करि कहति, धन्य अबिनासी।
जे पद-कमल रमा उर राखति, परसि सुरसरी आई।
जे पद-कमल संभु की संपति, फन-प्रति धरे कन्हाई।
जे[3] पद परसि सिला[4] उद्धरि गई, पांडव गृह फिरि आए।
जे पद-कमल-भजन महिमा तैं, जन प्रहलाद बचाए।
जे पद ब्रज-जुवतिनि सुखदायक, तिहूँ[5] भुवन धरे बावन।
सूर स्याम ते पद फन-फन-प्रति, निरतत अहि कियौ पावन ॥५६८॥
॥११८६॥

❀ राग सोरठ

ऐसी कृपा करी नहिँ काहूँ।
खंभ प्रगटि प्रहलाद बचायौ, ऐसी कृपा[6] न ताहूँ।
ऐसी कृपा करी नहिँ गज कौं, पाइ पियादे धाए।

---

(१) मुखनि—१६। (२) भार अधिक सभार्‍यौ—१,२,११।
* (ना) कान्हरौ दरबारी। (का) बिहागरा। (गो) कानरा।
(३) जे पद-पद्म सदा उर धारे गए बन गृह पांडव फिरि आए—२। (४) सिला उद्धारी—१। (५) त्रैपद तिहुँ पुर—१६।
❀ (ना) सारंग। (का) बिहागरा।
(६) भई—६, १७।

ऐसो कृपा तबहुँ नहिँ कीन्ही, नृपतिनि[1] बंदि छुड़ाए।
ऐसी कृपा करी नहिँ भीषम-परतिज्ञा सत भाषो।
ऐसी कृपा करी नहिँ, जब त्रिय नगन समय पति राखी।
पूरन कृपा नंद-जसुमति कौं, सोइ पूरन इहिँ पायौ।
सूरदास प्रभु धन्य कंस, जिनि, तुमसौं कमल मँगायौ ॥५६९॥११८७॥

* राग कान्हरौ

सुनहु कृपानिधि, जिती कृपा तुम या काली पै[2] कीन्ही।
इती बड़ाई कबहुँ[3], कैसहूँ, नहिँ काहू कौं दीन्ही।
जिनि पद-कमल-सुकृत-जल-परस्यौ, अजहुँ धरैं सिव सीस।
ते पद प्रगट धरे फन-फन-प्रति, धन्य कृपा जगदीस।
एक अंड कौ भार बहुत[4] है, गरब धर्‌यौ जिय सेष।
इहिँ भरु अधिक सह्यौ अपनैं सिर, अमित-अंड-मय बेष।
सुर, नर, असुर, कीट, पसु, पच्छी, सब सेवक प्रभु तेरे।
सूर स्याम अपराध छमहु अब, या अपने जन केरे ॥५७०॥११८८॥

⊛ राग कान्हरौ

† चरन-कमल बंदौं जगदीस्वर, जे गोधन-सँग धाए।
जे पद-कमल धूरि लपटाने, गहि गोपिनि उर लाए।
जे पद-कमल जुधिष्ठिर पूजे, राजसूय चलि आए।
जे पद-कमल पितामह भीषम, भारत देखन पाए।
जे पद-कमल संभु, चतुरानन. हृद[5] अंतर लै राखे।

---

(१) नृप वदि तैं—१, २, ३, ११।
* (ना, का) सारग।
(२) कौं—२, ६, ११, १५, १७। (३) कबहुँ केसव—१६।
(४) बहु—१, २, ३, ११, १७, १६।
⊛ (ना) नट। (का) भैरव।
† यह पद (शा) में नहीं है।
(५) हृदय कमल मैं—२, १६। हृदय कमल अतर—१, ३, ११, १५, १७।

जे पद-कमल रमा-उर-भूषन, बेद, भागवत भाखे।
जे पद-कमल लोक-त्रय-पावन, बलि की पीठि धरे।
ते पद-कमल सूर के स्वामी, फन-प्रति नृत्य करे ॥५७१॥११८९॥

* राग कान्हरौ

गिरिधर, ब्रजधर, मुरलीधर, धरनीधर, माधौ पीतांबरधर।
संख-चक्र-धर, गदा-पद्म-धर, सीस-मुकुट-धर, अधर-सुधा-धर।
कंबु-कंठ-धर, कौस्तुभ-मनि-धर, बनमाला-धर, मुक्त-माल-धर।
सूरदास प्रभु गोप-बेष-धर, काली-फन पर चरन-कमल-धर॥५७२॥११९०॥

⊛ राग कान्हरौ

गरुड़-त्रास तैं जौ ह्याँ आयौ।
तौ प्रभु-चरन-कमल फन-फन-प्रति अपनैं सीस धरायौ।
धनि रिषि साप दियौ खगपति कौं, ह्याँ तब रह्यौ छपाइ।
प्रभु-बाहन[1]-डर भाजि बच्यौ अहि, नातरु लेतौ खाइ।
यह सुनि कृपा करी नँद-नंदन, चरन-चिह्न प्रगटाए।
सूरदास प्रभु अभय ताहि करि, उरग-द्वीप पहुँचाए ॥५७३॥११९१॥

राग सारंग

† अति बल करि-करि काली हारयौ।
लपटि गयौ सब अंग-अंग-प्रति, निर्बिष कियौ सकल बल झारयौ[2]।
निरतत पद पटकत फन-फन-प्रति, बमत रुधिर नहिं जात सम्हारयौ।
अति बल-हीन, छीन भयौ तिहिं छन, देखियत है रज्वा[3] सम डारयौ।

---

* (ना) टोड़ी। (का) काफी।
⊛ (ना) नट।

(१) याही—२।
† यह पद केवल (वे, ना, गो, जै) में है।

(२) हारयो—२। (३) ज्वाला—१। ब्रजबासिनि—२।

तिय-बिनती करुना उपजी जिय, राख्यौ स्याम नाहिँ तिहिँ मारचौ ।
सूरदास प्रभु प्रान-दान कियौ, पठयौ सिंधु, उहाँ[1] तैँ टारचौ ॥५७४॥११६२॥

* राग कान्हरौ

† सबै ब्रज है जमुना कैँ तीर ।
कालिनाग[2] के फन पर निरतत, संकर्षन कौ बीर ।
|| लाग मान थेइ-थेइ करि उघटत, ताल मृदंग गँभीर ।
|| प्रेम-मगन गावत गंध्रब गन ब्योम बिमाननि भीर ।
उरग-नारि आगैँ भईँ ठाढ़ी, नैननि ढारतिँ नीर ।
हमकौँ दान देइ पति छाँड़हु, सुंदर स्याम सरीर ।
आए निकसि पहिरि मनि-भूषन, पीत-बसन कटि चीर ।
सूर स्याम कौँ भुज भरि भेँटत, अंकम देत अहीर ॥५७५॥११६३॥

राग कान्हरौ

‡ खेलत-खेलत जाइ कदम चढ़ि, झपि[3] जमुना-जल लीन्हौ ।
सोवत काली जाइ जगायौ, फिरि भारत हरि कीन्हौ ।
उठि जुवती कर जोरि बिनति करी, स्वामि दान मोहिँ दीजै ।
टूटत फन, फाटत तन[4] दुँ दिसि, स्याम निहोरौ लीजै ।
तब[5] अहि छाँड़ि दियौ करुनामय, मोहन-मदन, मुरारी ।
सागर-बास दियौ काली कौँ, सूरदास[6] बलिहारी ॥५७६॥११६४॥

---

(१) गरुड़—११ ।

* (ना) नट । (कां, रा, श्या) आसावरी ।

† यह पद (कां) में नहीं है । शेष प्राप्त प्रतियों में स्थानांतर पर सन्निविष्ट है । पर इसके लिये यह स्थान विशेष उपयुक्त है ।

(२) काली के सिर ऊपर—२ ।

|| ये चरण (ना, श्या) में नहीं है ।

‡ यह पद (वे, ल, के, गो, जै) में है ।

(३) धँसि जमुना दह—६ । झँपि जमुना-जल—४ । (४) तन दही—१, ११ । (५) तबहीँ—६ । (६) सुर मुनि यह बलिहारी—६ ।

* राग सोरठ

† (तुम) जाहु बालक, छाँड़ि जमुना, स्वामि मेरौ जागिहै।
अंग कारौ मुख बिषारौ[1], दृष्टि परैं तोहिं लागिहै।
(तुम) केरि[2] बालक जुवा खेल्यौ, केरि दुरत दुराइयाँ।
लेहु तुम[3] हीरा पदारथ, जागिहै मेरौ साँइयाँ।
नाहिँ नागिनि जुवा खेल्यौ, नाहिँ दुरत दुराइयाँ।
कंस-कारन गेँद खेलत कमल - कारन आइयाँ।
‖ (तब) धाइ धायौ, अहि जगायौ, मनौ छूटे हाथियाँ।
‖ सहस फन फुफुकार छाँड़े, जाइ काली नाथियाँ।
(जब) कान्ह काली लै चले, तब नारि बिनवै, देव हो !
चेरि[4] कौँ अहिवात दीजै, करै तुम्हरी सेव हो।
(तब) लादि पंकज कढ़्यौ[5] बाहिर, भयौ ब्रज-मन-भावना।
मथुरा नगरी कृष्न राजा, सूर मनहिँ[6] बधावना ॥५७७॥११९५॥

❁ राग देवगंधार

‡ काली-बिष-गंजन दह[7] आइ।
देखे मृतक बच्छ बालक सब, लए[8] कटाच्छ जिवाइ।
बहु उतपात होत गोकुल मैं, मैया[9] रही भुलाइ।
बड़ी बेर भई अजहुँ न आए, गृह-कृत कछु न सुहाइ।

---

* (ना) बँगाली। (र्का) बिलावल। (रा) कान्हरा।

† यह पद (ल, के, पू) में नहीं है।

① बिकारौ—१, ११। पसारौ—३। ② कैर—२। कोरे—३। आए—१६। ③ सिसु—१६।

‖ ये चरण (स) में नहीं है।

④ अब के चेरी—१। अब कैं चिरु—२। अब के अभै जिय दीजिए—३। अब के बेर—११। ⑤ बाहिर काढ्यौ—१,२, ३,११। ⑥ तिनहिँ—१,११।

❁ (ना) सारंग। (रा) धनाश्री।

‡ यह पद (ल, का, के, क, पू) में नहीं है।

⑦ हरि—३। ⑧ कृपा कटाच्छ जिवाए—२। ⑨ सविता रह्यौ भुलाइ—१, ११। चिंता रह्यौ भुलाइ—३।

नंदादिक सब गोप-गोपि मिलि, चले बिकल[1] बन धाइ ।
देखे[2] जाइ उरग लपटाने, प्रान तजत अकुलाइ ।
अति गंभीर धीर करि जानत, संकर्षन निज भाइ ।
सूरदास प्रभु नाग कियौ बस, आनँद उर न समाइ ॥५७८॥११६६॥

* राग कल्यान

जय-जय-धुनि अमरनि नभ कीन्हौ ।
धन्य-धन्य जगदीस गुसाईं, अपनौ करि अहि लीन्हौ ।
अभय कियौ फन चरन-चिन्ह धरि, जानि आपुनौ दास ।
जल तैं काढ़ि कृपा करि पठयौ, मेटि गरुड़ कौं त्रास ।
अस्तुति करत[3] अमर-गन बहुरे, गए आपनैं लोक ।
सूर स्याम मिलि मातु-पिता कौ दूरि कियौ तनु-सोक ॥५७९॥११६७॥

❁ राग कान्हरौ

लीन्हौ जननि कंठ लगाइ ।
अंग पुलकित, रोम गदगद, सुखद आँसु बहाइ ।
मैं तुमहिं बरजति रही हरि, जमुन-तट जनि जाइ ।
|| कह्यौ मेरौ कान्ह कियौ नहिं, गयौ खेलन धाइ ।
कंस कमल मँगाइ पठए, तातैं[4] गयउँ डराइ ।
मैं कह्यौ निसि सुपन तोसौं, प्रगट भयौ सु आइ ।
ग्वाल-सँग मिलि गेंद खेलत, आयौ जमुना-तीर ।

---

(१) सकल — १,२,३,११ ।
(२) दरसे—१, २, ३, १६ ।
* (ना) नट नारायनी । (का) धनाश्री ।

(३) करि अहिपति कुटुंब लै चल्यौ आपनैं ओक—१४ ।
❁ (ना) सोरठ। (का) धनाश्री। (के, क, का, पू, रा, स्या) नट ।

|| यह चरण (के, क) में नहीं है ।
(४) तातें गयउ (गए) डराइ—१, २, ३, ११, १२, १७, १६ ।

काहु लै मोहिँ डारि दीन्हौ, कालिया - दह - नीर।
यह कही तब उरग मोसौं, किन पठायौ तोहिँ।
मैँ कही, नृप कंस पठयौ कमल-कारन मोहिँ।
यह सुनत डरि कमल दीन्हौ, लियौ पीठि चढ़ाइ।
सूर यह कहि जननि बोधी, देख्यौ तुमहीँ आइ ॥५८०॥११९८॥

राग गौरी

ब्रज-बासिनि सौं कहत कन्हाई।
जमुना-तीर आजु सुख कीजै, यह मेरैँ मन आई।
गोपनि सुनि अति हरष बढ़ायौ, सुख पायौ नँदराइ।
घर-घर तैँ पकवान मँगायौ, ग्वारनि दियौ पठाइ।
दधि माखन षट रस के भोजन, तुरतहिँ ल्याए जाइ।
मातु-पिता-गोपी-ग्वालनि कौं, सूरज प्रभु सुखदाइ॥५८१॥११९९॥

राग गौरी

तुरत कमल अब देहु पठाइ।
सुनहु तात कछु विलँब न कीजै, कंस चढ़ै ब्रज-ऊपर धाइ[1]।
कमल मँगाइ लिए तट-ऊपर, कोटि कमल तब दिए पठाइ।
बहुत बिनय करि पाती पठई, नृप लीजै सब पुहुप गनाइ।
जैसी मोकौं आज्ञा दीजै, बहुत धरे जल-माँझ सजाइ।
सूरदास नृप तुव प्रताप तैँ, काली आपु[2] गयौ पहुँचाइ॥५८२॥१२००॥

* राग सोरठ

सहस सकट भरि कमल चलाए।
अपनी समसरि और गोप जे, तिनकौं साथ पठाए।

---

(१) आइ—१, २, ३, ११, १५। (२) आइ—६, १७। * (ना) कान्हरौ।

और बहुत काँवरि दधि-माखन, अहिरनि काँधैं जोरि।
नृप[1] कैं हाथ पत्र यह दीजौ, बिनती कीजौ मोरि।
मेरौ[2] नाम नृपति सौं लीजौ, स्याम कमल लै आए।
कोटि कमल आपुन नृप माँगे, तीनि कोटि हैं पाए।
नृपति हमहिं अपनौ करि जानौ, तुम लायक हम नाहिं।
सूरदास कहियौ नृप आगैं तुमहिं छाँड़ि कहँ जाहिं!॥५८३॥१२०१॥

* राग गौड़

कमल के भार, दधि-भार, माखन-भार लिए, सब ग्वार, नृप-द्वार आए।
तुरतहीं[3] टोरि, गनि, कोरि सकटनि जोरि, ठाढ़े भए पौरिया तब सुनाए।
सुनत यह बात, अतुरात और डरत मन, महल तैं निकसि नृप आपु आए।
देखि दरबार, सब ग्वार नहिं पार कहुँ, कमल के भार सकटनि सजाए।
अतिहिं चक्रित भयौ, ज्ञान हरि हरि लयौ, सोच मन मैं ठयौ, कहा कीन्हौ!
गोप-सिरमौर नृप ओर कर जोरि कै, पुहुप कैं काज प्रभु पत्र दीन्हौ।
यह कह्यौ नंद, नृप बंदि, अहि-इंद्र पैं गयौ मेरौ नंद, तुव नाम लीन्हौ।
उठ्यौ अकुलाइ, डरपाइ तुरतहिं धाइ, गयौ पहुँचाइ तट आइ दीन्हौ।
यह कह्यौ स्याम-बलराम, लीजौ नाम, राज कौ काज यह हमहिं कीन्हौ।
और[4] सब गोप आवत जात नृप बात कहत, सब सूर मोहिं नहीं चीन्हौ॥५८४॥

॥ १२०२ ॥

---

(१) बहुतै बिनती मेरी कहियौ और धरे जलजामल तोरी—१, ११। (२) नृप के हाथ पत्र यह दीजौ स्याम कमल (काल्ह) लै आयौ—१, ११।

* (ना) कान्हरौ। (का) मारू कर्का। (क) नट। (कां) मलार। (रा) गौड मलार।

(३) तुरत ही टारि जनि करि (कोरि) सकटनि जोरि भए ठाढे पौरि तब सुनाए—१, ११। तुरत ही भूर गन करोर सकटनि जोरि भए ठाढ़े पौरिया तब सुनाए—६। तुरत ही टोर गनि कोर सकटनि जोरि भए ठाढे पौरि तब सुनाए—३, ६, १७। (४) और सब गोप-कर जोरि नृप सौं कहत बात यह सूर मोहिं नहीं चीन्हौ—२।

*राग बिलावल

ग्वालनि हरि की बात सुनाई[1]। यह सुनि कंस गयौ मुरझाई[2]।
तब मनहीं मन करत बिचार। यह कोउ भलौ नहीं अवतार।
यासौं मेरौ नहीं उबार। मोहिं मारि[3], मारै परिवार।
दैत्य गए ते बहुरि न आए। काली तैं ये क्यौं बचि पाए।
ताही पर धरि कमल लदाए। सहस सकट भरि ब्याल पठाए।
एक ब्याल मैं उनहिं बताए। कोटि ब्याल मम सदन चलाए।
ग्वालनि देखि मनहिं रिस काँपै। पुनि मन मैं भय-अंकुर थापै।
आपुहिं आपु नृपति थल[4] त्याग्यौ। सूर देखि कमलनि उठि भाग्यौ॥५८५॥१२०३

⁂ राग नट

भीतर लिए ग्वाल बुलाइ।
हृदय दुख, मुख हलबली करि, दिए ब्रजहिं पठाइ।
नंद कौं सिरपाव दीन्हौ, गोप सब पहिराइ।
यह कह्यौ बलराम-स्यामहिं, देखिहौं दोउ भाइ।
अतिहिं पुरुषारथ कियौ उन, कमल दह के ल्याइ।
सूर उनकौं देखिहौं मैं, एक दिवस बुलाइ॥५८६॥१२०४॥

× राग गुंडमलार

कमल पहुँचाइ सब गोप[5] आए।
गए जमुना-तीर, भई अतिहीं भीर, देखि नँद तीर तुरतहिं बुलाए।
दियौ सिरपाव नृपराव नै महर कौं, आपु पहिरावने[6] सब दिखाए।

---

* (का) सोरठ। (र्का, श्या) मलार।

(१) चलाई—१। (२) अकुलाई—१। (३) समेत—१७।

(४) तन—१, ३, ११, १४। मन—१७।

⁂ (ना) ललित। (के, पु) नट नारायन।

× (ना) मारू। (का) मारू कर्का।

(५) ग्वाल—३। (६) पहिरावनी—१, ३, ६, ११, १६।

अतिहिँ सुख पाइ कै, लियौ सिर नाइ कै, हरष[1] नँदराइ कैं मन बढ़ाए ।
स्याम-बलराम कौ नाम जब हम लियौ, सुनत सुख कियौ उन कमल ल्याए ।
सूर नँद-सुवन दोउ, दिवस इक देखिहौं, पुहुप लिए, पाइ सुख, इन बुलाए ॥५८७॥
॥ १२०५ ॥

*राग धनाश्री

यह सुनि नंद बहुत सुख पाए ।
कमल पठाइ दए, नृप लीन्हे, देखन कौं दोउ सुतनि बुलाए ।
सेवा बहुत मानि है लीन्ही, ब्रज[2]-नारी-नर हरष बढ़ाए ।
बड़ी बात भई कमल पठाए, मानहुँ आपुन जल तैं ल्याए ।
आनँद करत जमुन-तट ब्रज-जन, खेलत-खातहिँ दिवस बिहाए ।
इक सुख स्याम बचे काली तैं, इक सुख कंसहिँ कमल पठाए[3] ।
हँसत स्याम-बलराम सुनत यह हमकौं देखन नृपति बुलाए[4] ।
सूरदास प्रभु मातु-पिता-हित, कमल कोटि दै ब्रजहिँ पठाए॥५८८॥१२०६

⊛ राग धनाश्री

नारद कही समुझाइ कंस नृपराज कौं ।
तब पठयौ ब्रज दूत, पुहुप के काज कौं । ध्रुव ।
तब पठयौ ब्रज दूत, सुनी नारद-मुख-बानी ।
बार-बार रिषि-काज, कंस अस्तुति मुख गानी ।
धन्य-धन्य मुनिराज तुम भलौ मंत्र दियौ मोहिँ ।
दूत चलायौ तुरतहीँ, अबहिँ जाइ ब्रज होहिँ[5] ।

---

(१) नद के मनहिँ अति भए बधाए—२ ।
* (ना) ललित ।
(२) ब्रज नारिन मन .—१ ।
(३) चलाए—१, २, ३, ११, १६ ।
(४) मँगाए—१, ६, ११, १४ ।
⊛ (ना) परज । (का, क, कां) बिलावल ।
(५) जोहि—१, ३, ११, १५ ।

यह कहियौ तुम जाइ, कमल नृप कोटि मँगाए।
पत्र दियौ लिखि हाथ, कह्यौ, बहु भाँति जनाए।
काल्हि कमल नहिँ आवहीँ, तौ तुमकौं नहिँ चैन।
सिर नवाइ, कर जोरि कै, चल्यौ दूत सुनि बैन।
तुरत पठायौ दूत नंद घरही मैं पायौ[1]।
"कमल फूल के भार कंस नृप बेगि मँगायौ।
'काल्हि न पहुँचै आइकै, तब बसिहौ ब्रज लोग!
'गोकुल मैं जे सुख किए, ते करि दैहौं सोग।
'जौ न पठावहु पुहुप, कहौगे तैसी मोकौं।
'जानहु यह गोपनि समेत धरि ल्यावहु तोकौं।
'बल-मोहन तेरे दुहुँनि कौं, पकरि मँगाऊँ कालि।
'पुहुप बेगि पठऐँ बनै, जौ रे बसौ ब्रज-पालि।"
यह सुनि नंद, डराइ, अतिहिँ मन-मन अकुलान्यौ।
यह कारज क्यौं होइ, काल अपनौ करि जान्यौ।
और महर सब बोलि कह्यौ; कैसौ करैं उपाइ।
प्रात[2] साँझ ब्रज मारिहै, बाँधि सबनि लै जाइ।
बल-मोहन कौ नाम धरयौ कह्यौ पकरि मँगावन।
तातैं अति भयौ सोच, लगत सुनि मोहिँ डरावन।
यह सुनि सिर नाए सबनि, मुखहूँ न आवै बात।
बार-बार नँद कहत हैं यह लरिकनि पर घात।
कै बालकनि भगाइ, जाहिँ लै आन भूमि पर।

---

(१) आयौ—१, ११। (२) काल्हि प्रात—१, २, ६, ११, १४, १७।

अरु हमकौं लै जाइ, स्याम-बलराम बचैं घर।
महरि सबै ब्रजनारि सौं, पूछति कौन उपाउ।
जनमहिं तैं करबर टरी,[1] अबकैं नाहिं बचाउ।
कोउ कहै देहैं दाम, नृपति जेतौ धन चाहैं।
कोउ कहै जैऐ सरन, सबै मिलि बुधि अवगाहैं।
इहीं सोच सब पगि रहे, कहूँ नहीं निरबार।
ब्रज-भीतर, नँद-भवन मैं, घर-घर यहै बिचार।
अंतरजामी, जानि नंद सौं पूछत बाता।
कहा करत हौ सोच, कहौ कछु मोसौं ताता।
कहा कहौं मेरे लाड़िले, कहत बड़ौ संताप।
मथुरापति कैं जिय कछू, तुम पर उपज्यौ पाप।
कालीदह के पुहुप माँगि पठए हमसौं उनि।
तब तैं मो जिय सोच, जबहिं तैं बात परी सुनि।
जौ नहिं पठवहुँ काल्हि तौ, गोकुल दवा[2] लगाइ।
मो समेत दोउ बंधु तुम, काल्हिहिं लेहि बँधाइ।
यह कहि पठयौ कंस, तबहिं तैं सोच पर्‍यौ मोहिं।
प्रथम पूतना आइ, बहुत दुख दै जु गई तोहिं।
तृनावर्त के घात तैं, बहुत बच्यौ दुख पाइ।
सकटा-केसी तैं बच्यौ, अब को करै सहाइ!
अघा-उदर तैं बच्यौ, बहुत दुख सह्यौ कन्हाई।
बका रह्यौ मुख बाइ, तहाँ भयौ धर्म सहाई।

---

(१) टरे—२। (२) देउ—१, ३, ६, ११, १४, १७। दैहु—२।

एती करबर हैँ टरी, देवनि करी सहाइ।
तब तैँ अब गाढ़ी परी, मोकौँ कछु न सुझाइ।
बाबा तुमहीँ कहत, कौन धौँ तोहिँ उबारै।
सोइ ब्रज-भीतर[1] प्रगटि, कंस गहि केस पछारै।
यह जबहीँ हरि सौँ सुनी, नंद मनहिँ पतियाइ।
गगन गिरत जो सँग रह्यौ, सो करि लेइ सहाइ।
नंदहिँ यह समुझाइ कान्ह, उठि खेलन धाए।
जहँ ब्रज-बालक हुते[2], तुरत तहँ आपुन आए।
गोप-सुतनि सौँ यह कह्यौ, खेलैँ गेँद मँगाइ।
श्रीदामा यह सुनतहीँ घर तैँ ल्याए जाइ[3]।
सखा[4] परस्पर मारि करैँ, कोउ कानि न मानै।
कौन बड़ौ को छोट, भेद[5] अनुभेद न जानैँ।
खेलत जमुना-तट गए, आपुहिँ ल्याए टारि।
लै श्रीदामा हाथ तैँ, गेँद दयौ दह डारि।
श्रीदामा गहि फेँट कह्यौ, हम तुम इक जोटा।
कहा भयौ जौ नंद बड़े, तुम तिनकैँ ढोटा।
खेलत मैँ कह छोट बड़, हमहुँ महर के पूत।
गेँद दियैँ ही पै[6] बनै, छाँड़ि देहु मति-धूत।
तुमसौँ धूत्यौ कहा करौँ, धूत्यौ नहिँ देख्यौ।
प्रथम पूतना मारि[7] काग सकटासुर पेख्यौ।

---

(१) देवता—१। (२) बहुत—३, ६, १७। (३) धाइ—२। (४) सबै—२। (५) भेद-भेदा नहिँ जानैँ—१, २, ११, १५, १७, १६। भेद आभेद न जानै—३। (६) ते—२। (७) नारि—३, १४, १६। आः—६।

तृनावर्त पटक्यौ सिला, अघा बका संहारि।
तुम ता दिन सँगहीँ रहे, धूत न कहत सम्हारि।
टेढ़े कहा बतात, कंस कौं, देहु कमल अब।
कालिहिँ पठए माँगि पुहुप अब ल्याइ देहु जब।
बहुत अचगरी जिनि करौ, अजहूँ तजौ झवारि[1]।
पकरि कंस लै जाइगौ, कालिहिँ परै खँभारि[2]।
कमल पठाऊँ कोटि, कंस कौ दोष[3] निवारौं।
तुम देखत ही जाउँ, कंस जीवत धरि मारौं।
फेँट लियौ तब झटकि कै, चढ़े कदम पर जाइ[4]।
सखा हँसत ठाढ़े सबै, मोहन गए पराइ।
श्रीदामा चले रोइ जाइ कहिहौं नँद-आगे।
गेँद लेहु तुम आइ, मोहिँ डरपावन लागे!
यह कहि कूदि परे सलिल, कीन्हे नटवर-साज।
कोमल तन धरि कै गए, जहँ सोवत अहिराज।
इहिँ अंतर नँद-घरनि कह्यौ हरि भूखे ह्वै हैँ।
खेलत तैँ अब आइ, भूख कहि मोहिँ सुनैहैँ।
अति आतुर भीतर चली, जेँवन साजन आप।
छीँक सुनत कुसगुन कह्यौ,[5] कहा भयौ यह पाप।
अजिर चली पछितात छीँक कौ दोष निवारन।
मंजारी[6] गई काटि बाट, निकसत तब बारन।

---

(1) छ्वारि—२, १६। (2) गुहारि—१६। (3) दुख—२। (4) आइ—१। धाइ—२। (5) भयौ—२, ६, १७। (6) मजारी गइ काटि तबहिँ निकसत ही बारन—१, ३, ११, १४। मजारी पथ काटि गई—२। मजारी गई काट तबहिँ निकसत भई बारन—६, १७।

जननी जिय ब्याकुल भई, कान्ह अबेर लगाइ।
कुसगुन आजु बहुत भए, कुसल रहैं दोउ भाइ।
स्याम परे दह कूदि, मातु-जिय गयौ जनाई।
आतुर आए नंद घरहिं बूझत दोउ भाई।
नंद, घरनि सौं यह कहत, मोकौं लगत उदास।
इहिं अंतर हरि तहँ गए, जहँ काली कौ बास।
देख्यौ पन्नग जाइ अतिहिं निर्भय भयौ सोवत।
बैठी तहँ अहि-नारि, डरी बालक कौं जोवत।
भागि-भागि सुत कौन कौ, अति कोमल तव गात।
एक फूँक कौ नाहिं तू बिष-ज्वाला अति तात।
तब हरि कह्यौ प्रचारि, नारि, पति देइ जगाई।
आयौ देखन याहि, कंस मोहिं दियौ पठाई।
कंस कोटि जरि जाहिंगे, बिष की एक फुँकार।
कह्यौ मेरौ करि जाहि तू, अति बालक सुकुमार।
इहिं अंतर सब सखा जाइ ब्रज नंद सुनायौ।
हम सँग खेलत स्याम जाइ जल माँझ धँसायौ[1]।
बूड़ि गयौ, उचक्यौ नहीं ता बातहिं भई बेर।
कूदि पर्‌यौ चढ़ि कदम तैं खबरि न करौ सबेर।
त्राहि-त्राहि करि नंद, तुरत[2] दौरे जमुना-तट।
जसुमति सुनि यह बात, चली रोवति तोरति लट।
ब्रजबासी नर-नारि सब, गिरत परत चले धाइ।

(१) समायौ—१६। (२) सुनत—१, ३, ११, १४।

बूड़्यौ-कान्ह सुनी सबनि, अति ब्याकुल मुरझाइ।
जहँ-तहँ परी पुकार, कान्ह बिनु भए उदासी।
कौन काहि सौं कहै, अतिहिं ब्याकुल ब्रजबासी।
नंद-जसोदा अति बिकल, परत जमुन मैं धाइ।
और गोप उपनंद मिलि, बाहँ पकरि लै आइ।
धेनु फिरति बिललाति बच्छ थन कोउ न लगावै।
नंद जसोदा कहत, कान्ह बिनु कौन चरावै।
यह सुनि ब्रजबासी सबै, परे धरनि अकुलाइ[1]।
हाय-हाय करि कहत सब, कान्ह रह्यौ कहँ जाइ।
नंद पुकारत रोइ बुढ़ाई[2] मैं मोहिं छाँड़्यौ।
कछु दिन मोह लगाइ, जाइ जल-भीतर माँड़्यौ।
यह कहि कै धरनी गिरत, ज्यौं तरु कटि गिरि जाइ।
नंद-घरनि यह देखि कै, कान्हहिं टेरि बुलाइ।
निठुर भए सुत आजु, तात की छोह न आवति।
यह कहि-कहि अकुलाइ, बहुरि[3] जल भीतर धावति।
परति धाइ जमुना-सलिल, गहि आनतिं ब्रजनारि।
नैंकु रहौ सब मरहिंगी, को है जीवनहारि?
स्याम गए जल बूड़ि बृथा धिक जीवन जग कौ।
सिर फोरतिं, गिरि जातिं, अभूषन तोरति अँग कौ।
मुरछि परी, तन-सुधि गई, प्रान रहे कहुँ जाइ।
हलधर आए धाइ कै, जननि गई मुरझाइ।

---

(१) मुरझाई—१६। (२) बुढ़ापा मोकौं—१, २, ११, १४। (३) जलहिं भीतर कौ—१, २, १६।

नाक मूँदि, जल सीँचि जबहिँ[1] जननी कहि टेरचौ।
बार-बार झकझोरि, नैँकु हलधर-तन हेरचौ।
कहति उठी बलराम सौं, कितहिँ तज्यौ लघु भ्रात।
कान्ह तुमहिँ बिनु रहत नहिँ, तुमसौं क्यौं रहि जात।
अब तुमहूँ जनि जाहु, सखा इक देहु पठाई।
कान्हहिँ ल्यावै जाइ, आजु अवसेर कराई।
छाक पठाऊँ जोरि कै, मगन सोक-सर-माँझ।
प्रात कछू खायौ नहीँ, भूखे ह्वै गई साँझ।
कबहुँ कहति बन गए, कबहुँ कहि घरहिँ बतावति।
कहँ खेलत हौ लाल, टेरि यह कहति बुलावति।
जागि परी दुख-मोह[2] तैँ, रोवत देखे लोग।
तब जान्यौ हरि दह गिरचौ, उपज्यौ बहुरि बियोग।
धिक-धिक नंदहि कह्यौ[3], और कितने दिन जीहौ।
मरत नहीँ मोहिँ मारि, बहुरि ब्रज बसिबौ कीहौ।
ऐसे दुख सौं मरन सुख, मन करि देखहु ज्ञान।
ब्याकुल धरनी गिरि परे, नंद भए बिनु प्रान।
हरि के अग्रज बंधु; तुरतही पिता जगायौ।
माता कौं परमोधि,[4] दुहुँनि धीरज धरवायौ।
मोहिँ दुहाई नंद की, अबहीँ आवत स्याम।
नाग नाथि लै आइहैँ, तब कहियौ बलराम।
हलधर कह्यौ सुनाइ, नंद, जसुमति, ब्रजबासी।

---

(१) जननि—१, ३, ६, ११, १४। (२) नेह—२, ३। (३) कहत—३। (४) परबोधि—१।

वृथा मरत किहिँ काज, मरै क्यौं वह अबिनासी ?
आदि पुरुष मैं कहत हौं, गयौ कमल कैं काज।
गिरिधर कौ डर जनि करौ, वह देवनि सिरताज।
वह अबिनासी आहि, करौ धीरज अपनैं मन।
काली छेदे नाक लिए आवत, निरतत फन।
कंसहिँ कमल पठाइहै, काली पठवै दीप।
एक घरी धीरज धरौ, बैठौ सब तर-नीप।
ह्वाँ नागिनि सौं कहत कान्ह, अहि क्यौं न जगावै।
बालक-बालक करति कहा, पति क्यौं न उठावै।
कहा कंस, कह उरग यह, अबहिँ दिखाऊँ तोहिँ।
दै जगाइ मैं कहत हौं, तू नहिँ जानति मोहिँ।
छोटैं मुँह बड़ी बात कहत, अबहीँ मरि जैहै।
जो चितवै करि क्रोध, अरे, इतनेहिँ जरि जैहै।
छोह लगत तोहिँ देखि मोहिँ, काकौ बालक आहि।
खगपति[1] सौं सरवरि करी, तू बपुरौ को ताहि।
बपुरा मोकौं कहति, तोहिँ बपुरो करि डारौं।
एक लात सौं चाँपि, नाथ तेरे कौं मारौं।
सोवत काहु न मारियै, चलि आई यह बात।
खगपति कौं मैंहीँ कियौ, कहति कहा तू जात[2]।
तुमहिँ विधाता भए, और करता कोउ नाहीँ।
अहि मारोगे आपु तनक से, तनक सी बाहीँ।

---

(१) कोमल तन तुम हौ लगत ताते पूछति आहि—६। (२) बात—१, २, ३, ११।

कहा कहौं कहत न बनै, अति कोमल सुकुमार।
देती अबहिँ जगाइ कै, जरि बरि होत्यौ छार।
तू धौं देहि जगाइ, तोहिँ कछु दूषन नाहीँ।
परी कहा तोहिँ नारि, पाप अपनैँ जरि जाहीँ।
हमकौं बालक कहति है, आपु बड़े की नारि।
बादति है बिनु काजहीँ, बृथा बढ़ावति रारि।
तुहीँ न लेत जगाइ, बहुत जो करत ढिठाई।
पुनि मरिहैँ पछिताइ, मातु, पितु तेरे भाई।
अजहुँ कह्यौ करि, जाहि तू, मरि लैहै सुख कौन ?
पाँच बरष के सात कौ, आगैँ तोकौं हौन।
झिरकि नारि, दै गारि, आपु अहि जाइ जगायौ।
पग सौं चाँपी पूँछ, सबै अवसान भुलायौ।
चरन मसकि धरनी दलौ, उरग गयौ अकुलाइ[1]।
काली मन मैं तब कही, यह आयौ खगराइ।
बिषधर झटकी पूँछ, फटकि[2] सहसौ फन काढ़ौ।
देख्यौ नैन उघारि, तहाँ बालक इक ठाढ़ौ।
बार-बार फन-घात कै, बिष-ज्वाला की झार।
सहसौ फन फनि फुंकरै, नैँकु न तिन्हैँ[3] बिकार।
तब काली मन कहत, पूँछ चाँपी इहिँ पग सौं।
अतिहिँ उठ्यौ अकुलाइ, डर्‌यौ हरि वाहन खग सौं।
यह बालक धौं कौन कौ, कीन्हौ जुद्ध बनाइ।

(१) कुम्हिलाइ-२, ३, १९। (२) फनिग अति तामस बाढ्यौ—२, १९। (३) तनहिँ लगार—१, ३, ११।

दाउँ घात बहुतै कियौ, मरत नहीँ जदुराइ।
पुनि देख्यौ हरि-ओर, पूँछ चाँपी इहिँ मेरी।
मन-मन करत बिचार, लेउँ याकौँ मैँ घेरी।
दाउँ पर्‌यौ अहि जानि कै, लियौ[1] अंग लपटाइ।
काली तब गरबित भयौ, प्रभु दियौ दाउँ बताइ।
कहति उरग की नारि, गर्ब अतिहीँ करि आयौ।
आइ पहूँच्यौ काल बस्य, पग इतहिँ चलायौ।
अहि नारिनि सौँ यह कही, मो समसरि कोउ नाहिँ।
एक फूँक बिष-ज्वाल की, जल-डूँगर जरि जाहिँ।
गर्ब-बचन प्रभु सुनत, तुरतहीँ तन बिस्तार्‌यौ।
हाय-हाय करि उरग, बारहीँ बार पुकार्‌यौ।
सरन-सरन अब मरत हौँ, मैँ नहिँ जान्यौ तोहिँ।
चटचटात अँग फटत[2] हैँ, राखु-राखु प्रभु मोहिँ।
स्रवन सरन धुनि सुनत, लियौ प्रभु तनु सकुचाई।
छमहु मोहिँ अपराध, न जानैँ करी ढिठाई।
ब्रजहिँ कृष्न-अवतार हौ, मैँ जानी प्रभु आज।
बहुत किए फन-घात मैँ, बदन दुरावत लाज।
रह्यौ आनि इहिँ ठौर, गरुड़ कैँ त्रास गुसाईँ।
बहुत कृपा मोहिँ करो, दरस दीन्हौ जग-साईँ।
|| नाक फोरि फन पर चढ़े, कृपा करी जदुराइ[3]।
|| फन-फन-प्रति हरि[4] चरन धरि, निरतत हरष बढ़ाइ।

---

(१) गयौ—२। (२) फूट हीँ—२, ३, ६, ११, १४। || ये चरण (ना) में नहीँ हैँ। (३) छिवराइ—३, ६, ११, १४, १७। (४) प्रति—१, ११, १४।